धनबाद, सोमवार
21 अप्रैल 2025
वर्ष : 10 अंक : 321
पृष्ठ : 12
मूल्य : 3/-

हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
नई पत्र वार्ता
सोच आगे की ...

ब्रीफ न्यूज

मुख्यमंत्री ने राज्यवासियों को ईस्टर की दी शुभकामानाएं

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

रांची, :मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने राज्यवासियों को ईस्टर की शुभकामानाएं दी हैं। उन्होंने अपने सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर रविवार को पोस्ट कर सभी की हैप्पी ईस्टर कहकर बधाई दी है।

ईसाई समुदाय का महत्वपूर्ण पर्व ईस्टर रविवार को मनाया जा रहा है। इसी दिन प्रभु यीशु का पुनर्जन्म हुआ था। इस अवसर पर सुबह से ही राजधानी रांची के अलग-अलग कब्रिस्तान जाकर लोग पूर्वजों की कब्र पर मोमबत्ती और फूल-माला चढ़ाकर याद कर रहे हैं।

निशिकांत दुबे के बयान पर भड़के ओवैसी बोले- ये तो सुप्रीम को धार्मिक युद्ध की धमकी है

नई दिल्ली,(एजेंसी) : भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के बयान पर हैदराबाद से सांसद असदुद्दीन ओवैसी भड़क गए हैं। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा है कि उन लोगों को नहीं मालूम की अनुच्छेद 142 क्या है। ये वो अनुच्छेद है जिसे खुद डॉ अंबेडकर ने तैयार किया था। उन्होंने कहा कि भगवा पार्टी के समर्थक इतने ज्यादा कट्टरपंथी हो गए हैं कि वे अब खुले आम न्यायपालिका को धार्मिक युद्ध की धमकी दे रहे हैं। सांसद निशिकांत के इस बयान से भारतीय जनता पार्टी ने खुद को किनारे कर लिया है। अध्यक्ष जेपी नड्डा ने सोशल मीडिया पर पोस्ट करके कहा कि पार्टी का इस बयान से कुछ भी लेना-देना नहीं है। उन सांसदों को आगे से ऐसा बयान न देने के लिए निर्देशित किया गया है।

ओवैसी ने सीधा पीएम मोदी को संबोधित करते हुए कहा, मोदी जी अगर आप इन लोगों को नहीं रोकेंगे तो देश कमजोर हो जाएगा। देश आपको माफ नहीं करेगा और कल आप सत्ता में नहीं रहेंगे।

निशिकांत दुबे के बयान पर लगभग सभी **शेष पृष्ठ-4.....**

वायु सेना के अद्भुत प्रदर्शन ने दर्शकों को किया मंत्रमुग्ध

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

रांची : रांची के नामकुम स्थित आर्मी ग्राउंड खोजा टोली में आयोजित एयर शो में भारतीय वायु सेना ने अद्भुत प्रदर्शन से दूसरे दिन रविवार को दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया।

इसके साथ ही आयोजित एयर शो का समापन हो गया। रविवार होने की वजह से स्कूल और कॉलेजों में अवकाश के चलते एयर शो को देखने के लिए छात्र-छात्रा और युवा पहुंचे थे। उनके साथ उनके अभिभावकों की भी उपस्थिति देखी गयी। एयर शो में नौ फाइटर जेट्स सूर्य किरण एयरोबेटिक टीम के जांबाजो के हैरतअंगेज करतब को देखकर उपस्थित लोगों में काफी उत्साह देखा गया। वहीं जब विमान की गर्जना आकाश में सुनाई दी तो दर्शकों ने भारत माता के जयकारों से फिजा को गुंजायामान कर दिया।

एयर शो के दौरान सूर्य किरण एयरोबेटिक टीम आसमान में मनोहर एवं हैरतअंगेज कारनामे से सब को हैरत में डाल दिया। रांची के आसमान में वायु सेना के विमान ने तिरंगे को लहराया। भारतीय वायु सेवा के ये विमान पांच मीटर की दूरी बनाते हुए एक साथ उड़ान भरते नजर आए।

अलग-अलग दिशाओं से अपनी गति और अनुशासन का प्रमाण देते हुए अलग-अलग आकृतियां आसमान में बनाया । इसके अलावा विमान उल्टी उड़ान भरते भी नजर आए। टीम के पायलट, भारतीय वायु सेवा के बेहतरीन फाइटर पायलट हैं। टीम ने छह महीने कठिन परिश्रम कर अपनी तैयारी पूरी की थी ।

इस भव्य कार्यक्रम को सम्पन्न कराने में जिला प्रशासन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनकी मेहनत और समर्पण के कारण यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

सूर्यकिरण टीम की रोमांचकारी करतबों ने लोगों का मोहा मन

एयर शो में सूर्यकिरण टीम की रोमांचकारी करतबों ने लोगों का मन मोह लिया।

फॉर्मेशन फ्लाइंगः टीम के विमान एक सटीक फॉर्मेशन में उड़ते हुए, डायमंड, एरोहेड या विक फॉर्मेशन किया यह करतब टीम के पायलटों के बीच उत्कृष्ट समन्वय और संचार कौशल का प्रदर्शन करता है।

एयरोबेटिक मैन्यवर्सः टीम के पायलट विभिन्न एयरोबेटिक करतब जैसे कि लूप्स, रोल्स, स्पिन्स और इमेलमन टर्न्स किया । ये करतब विमान की गति को प्रदर्शित करते हैं।

क्रॉसओवर और इंटरसेप्टः टीम के विमान एक दूसरे के करीब से गुजरते हुए विभिन्न पैटर्न्स में उड़े। यह करतब टीम के पायलटों के बीच उच्च स्तर की जागरूकता और नियंत्रण का प्रदर्शन करता है।

स्मोक ट्रेल्सः टीम के विमान स्मोक ट्रेल्स छोड़ते हैं, जो आसमान में रंगीन धुएं के निशान बनाते हैं। यह करतब प्रभाव को बढ़ाया और दर्शकों के लिए एक यादगार अनुभव कराया।

सोलो और सिंक्रोनाइज्ड मैन्यवर्सः टीम के पायलट सोलो और सिंक्रोनाइज्ड करतब किया, जो उनकी व्यक्तिगत और सामूहिक क्षमताओं को प्रदर्शित करते हैं।

इनके अलावा भी कई करतब इस एयर शो में देखने को मिला। सूर्यकिरण टीम के द्वारा इन शानदार प्रदर्शन न केवल दर्शकों को मनोरंजन प्रदान किया, बल्कि भारतीय वायु सेना की क्षमताओं और कौशल को भी प्रदर्शित किया। यह टीम देश के लिए गर्व का प्रतीक है और युवाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।

इस कार्यक्रम में रक्षा राज्य मंत्री संजय सेठ, न्यायाधीश झारखण्ड उच्च न्यायालय आनंदा सेन और झारखंड सरकार के वरीय अधिकारी, उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी मंजूनाथ भजन्त्री, उप विकास आयुक्त दिनेश कुमार यादव, अनुमंडल पदाधिकारी सदर रांची उत्कर्ष कुमार, अपर जिला दंडाधिकारी विधि व्यवस्था राजेश्वर नाथ आलोक, पुलिस अधीक्षक ग्रामीण सुमित कुमार अग्रवाल सहित सेना एवं जिला के वरीय पदाधिकारी शामिल हुए।

जम्मू-कश्मीर में बादल फटने से 3 की मौत, श्रीनगर हाईवे बंद, मलबे में दबे घर और गाड़ियां, चारों तरफ तबाही का मंजर

जम्मू,(एजेंसी) : जम्मू-कश्मीर के रामबन जिले में रविवार सुबह भारी बारिश के बाद बादल फट गया। बादल फटने से अब तक तीन लोगों की मौत होने की पुष्टि हुई है। यह हादसा रामबन के सेरी बागना इलाके में हुआ, जहां अचानक आई बाढ़ और पहाड़ी मलबे ने कई घरों और लोगों को अपनी चपेट में ले लिया। राहत और बचाव कार्य जारी है और एनडीआरएफ की टीमें मौके पर तैनात हैं।

स्थानीय सूत्रों के मुताबिक, भारी बारिश के चलते पहाड़ों से मलबा गांव की तरफ बह गया, जिससे कई मकान और वाहन मलबे में दब गए। हादसे के बाद क्षेत्र में अफरा-तफरी मच गई। प्रशासन ने आपात स्थिति घोषित कर दी है।

इसी बीच रामबन के बनिहाल क्षेत्र में भी कई जगह लैंडस्लाइड होने की खबर है। लैंडस्लइड से जम्मू-श्रीनगर नेशनल हाईवे को एहतियातन बंद करना पड़ा है। हाईवे पर सैकड़ों वाहन जाम में फंसे हुए हैं। इसके अलावा किश्तवाड़-पद्दर मार्ग भी भूस्खलन के कारण बंद कर दिया गया। प्रशासन ने लोगों से अपील की है कि मौसम साफ होने तक अनावश्यक यात्रा न करें।

घटनास्थल के कुछ वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुए हैं, जिनमें पहाड़ से मलबा गिरते हुए साफ देखा जा सकता है। इन वीडियो में कुछ टैंकर और अन्य वाहन मलबे में पूरी तरह दबे हुए दिखाई दिए हैं। कुछ होटल और घर भी क्षतिग्रस्त हुए हैं।

प्रेम और उल्लास का त्यौहार ईस्टर की देशभर में धूम: राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और अन्य नेताओं ने दी शुभकामनाएं

नई दिल्ली,(एजेंसी) : देशभर में रविवार को ईस्टर का त्योहार श्रद्धा, प्रेम और उल्लास के साथ मनाया जा रहा है। यह पर्व प्रभु यीशु मसीह के पुनरुत्थान की याद में हर वर्ष गुड फ्राइडे के बाद पहले रविवार को मनाया जाता है। इस अवसर पर राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और कांग्रेस नेता राहुल गांधी समेत कई नेताओं व गणमान्य नागरिकों ने देशवासियों को बधाई दी।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर ईस्टर की शुभकामनाएं देते हुए लिखा, ह्लइस अवसर पर हम ईसा मसीह के पुनरुत्थान का जश्न मनाते हैं। यह त्योहार नई उम्मीद और नई शुरूआत की भावना को प्रेरित करता है। ईसा मसीह की शिक्षाएं मानवता को प्रेम और त्याग के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती हैं। आशा और आनंद का यह त्योहार सभी के लिए शांति और समृद्धि लाए।ह्व

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लिखा, ह्लसभी को ईस्टर की हार्दिक शुभकामनाएं। यह ईस्टर विशेष है, क्योंकि दुनिया भर में ह्यजुबली वर्षह्ण को बड़े उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। यह पवित्र अवसर प्रत्येक व्यक्ति में आशा, नवीनीकरण और करुणा की प्रेरणा दे। चारों ओर आनंद और सद्भाव हो।ह्व

यहां बताते चलें कि जुबली वर्ष हर 25 वर्षों में एक बार आता है, जिसे पोप द्वारा विशेष रूप से अनुग्रह, क्षमा और आध्यात्मिक नवीनीकरण के समय के रूप में घोषित किया जाता है।

कांग्रेस सांसद एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने भी अपने संदेश में कहा, ह्लआपको और आपके प्रियजनों को ईस्टर की हार्दिक शुभकामनाएं। यह आनंदमय अवसर सभी के जीवन में नया आरंभ, नयी आशा और स्थायी सुख-शांति लेकर आए।ह्व

क्यों मनाया जाता है ईस्टर?

ईस्टर ईसाई धर्म का सबसे पवित्र पर्व माना जाता है। मान्यता के अनुसार, प्रभु यीशु मसीह को लोगों के पापों के प्रायश्चित हेतु क्रूस पर चढ़ाया गया था, जिसे गुड फ्राइडे कहा जाता है। लेकिन इसके तीन दिन बाद रविवार को वे पुनर्जीवित हो उठे। इस चमत्कार को ईश्वर की शक्ति और जीवन की जीत के प्रतीक के रूप में देखा जाता है।

इस दिन गिरिजाघरों में विशेष प्रार्थना सभाएं आयोजित की जाती हैं, मोमबत्तियाँ जलाई जाती हैं, और लोग एक-दूसरे को शुभकामनाएं देते हैं। बच्चों में खास तौर पर ईस्टर एग्स और ईस्टर बनी की परंपरा भी लोकप्रिय है।

PR-350448(Directorate of Food and Consumer Affairs)25-26

संक्षिप्त खबर

हिंदुओ पर अत्याचार के विरोध में पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री का पुतला दहन किया

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : अंतराष्ट्रीय हिन्दू परिषद, राष्ट्रीय बजरंग दल द्वारा पश्चिम बंगाल में हो रहे हिंदुओं पर अत्याचार के विरोध में पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री का पुतला दहन किया गया। इस मौके पर हिन्दू हेल्पलाइन के जिला मंत्री बसन्त सिंह ने बताया कि जिस प्रकार पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद में हिंदुओं पर जिहादियो द्वारा अत्याचार किया गया है उससे सारे देश के हिन्दू आहत हैं। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल सरकार ऐसे जिहादियों पर करवाई के बजाए सरंक्षण देती है। जिससे उनकी हिम्मत बढ़ जाती है।उन्होंने पश्चिम बंगाल सरकार पर अविलम्ब करवाई करने की मांग की। मौके पर अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद विभाग अध्यक्ष रविशंकर पांडे, जिला अध्यक्ष रितेश पांडे, राष्ट्रीय बजरंग दल जिला अध्यक्ष गौरव कुमार अंशु, उपाध्यक्ष सुजीत सिंह, मंत्री कुंदन केसरी, कार्यकारिणी सदस्य शुभम झा, हिंदू हेल्पलाइन अध्यक्ष रामबाबू गुप्ता, अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद नगर अध्यक्ष श्याम राणा, नगर महामंत्री उदय चंद्रवंशी, बजरंग दल नगर अध्यक्ष राहुल चंद्रवंशी, उपाध्यक्ष अमन चंद्रवंशी, सदर प्रखंड से बजरंग दल उपाध्यक्ष विशाल विश्वकर्मा, उपाध्यक्ष अनूप राय, इंडिया हेल्थ लाइन अध्यक्ष चुरामन, हिंदू सक्रिय कार्यकर्ता अनिल राय, अंशु यादव, छोटू यादव, सोनू यादव एवं सैकड़ो कार्यकर्ता उपस्थित थे।

श्रीमद भागवत कथा समिति के तत्वाधान में बैठक का आयोजन किया गया

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : रविवार को 11.00 बजे श्रीमद भागवत कथा आयोजन समिति गिरिडीह के तत्वाधान मे एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता कृष्ण कुमार सिन्हा ने की। इस बैठक में अरगाघाट उसरी नदी तट पर 5 मई से होने वाले श्रीमद भागवत कथा मे मंगल कलश यात्रा, कथा स्थल मे पंडाल, साउंड - लाइट और भंडारे के विषय पर व्यापक चर्चा की गयी तथा सर्वसम्मति से सारे निर्णय पास किये गए।इस महत्वपूर्ण बैठक मे भूपेंद्र ओझा, दिलीप श्रीवास्तव, प्रभात सिन्हा, गोविन्द यादव, रवि यादव, दीपक साव, आदित्य यादव, पीकू यादव, प्रदीप यादव, संतोष यादव, रवि सिंह, शिवम्‌ सिंह, संदीप सिन्हा, सहित कमिटी के पदाधिकारीगण उपस्थित थे।

कैंपस में चारपहिया अज्ञात गाड़ी को खड़ा कर छोड़ देने का मामला सामने आया

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : नगर थाना क्षेत्र के अरघा घाट नया पुल के समीप एक कैंपस में चारपहिया अज्ञात गाड़ी को खड़ा कर छोड़ देने का मामला सामने आया है। यह कैंपस अरघा घाट निवासी प्रदीप गोप का है।दो दिन पूर्व रात के वक्त किसी ने उक्त वाहन को उस कैंपस की झाड़ियों के पास खड़ा कर दिया था।दो दिनों से कैंपस के मालिक प्रदीप गोप किसी पड़ोसी द्वारा वाहन खड़ा करने की सोच रखे थे। लेकिन जब रविवार को छुट्टी वाले दिन मुहल्ले वासियों से अज्ञात गाड़ी खड़ा करने के बारे में पूछताछ की तो किसी ने भी गाड़ी खड़ा करने की बात से इनकार किया। तब उन्होंने वहां के बारे में जांच पड़ताल शुरू की। इसके बावजूद भी उसे गाड़ी के मालिक की जानकारी नहीं मिल पाई तब उन्होंने इसकी सूचना नगर थाना पुलिस को दी। नगर थाना पुलिस फिलहाल मौके पर पहुंचकर अज्ञात वाहन के बारे में जानकारी इकट्ठा कर रही है। वहीं कैंपस मलिक प्रदीप गोप ने बताया कि उनके कैंपस में गेट नहीं लगा हुआ था और उसे कैंपस में आसपास के लोग अपनी दो पहिया और चार पहिया वाहन पार्किंग करते हैं। ऐसे में उसे अज्ञात गाड़ी के बारे में उन्होंने जब जानकारी इकट्ठा की तो उसका मालिक का पता नहीं चल पाया। इसलिए उन्होंने इसकी जानकारी पुलिस को दी है।

जेईई मेन में मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल के छात्रों ने लहराया परचम

पीयूष झा 99.77 पर्सेंटाइल के साथ विद्यालय टॉपर

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

बोकारो : जेईई मेन 2025 सेशन 1 और सेशन 2 के आधार पर मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल, सेक्टर 4 ई के छात्रों ने परचम लहराया है। विद्यालय के छात्र पीयूष झा ने जेईई मेन परीक्षा में 99.77 पर्सेंटाइल लाकर अपने माता-पिता के साथ-साथ अपने विद्यालय एवं बोकारो का नाम रोशन किया। माता बिना झा एवं पिता संजीव झा ने इस सफलता के लिए स्कूल प्रबंधन एवं गुरुजनों को इसका श्रेय दिया साथ ही सुजल राज 99.38 पर्सेंटाइल एवं हर्षित वर्मा 99.18 पर्सेंटाइल लाकर विद्यालय एवं बोकारो को गौरवान्वित किया है। मिथिला एकेडमी पब्लिक स्कूल के अध्यक्ष हरि मोहन झा ने अपने संवाद में कहा कि कठिन परिश्रम एवं अथक प्रयास का ही परिणाम है यह गौरवान्वित पल। उन्होंने जेईई-एडवांस में बेहतर प्रदर्शन के लिए विद्यार्थियों को शुभकामनाएं दी। विद्यालय सचिव प्रमोद कुमार झा ने इस उपलब्धि के लिए बच्चों एवं उनके माता पिता का धन्यवाद किया। उन्होंने मेहनती शिक्षकों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया जिन्होंने अपने कड़ी मेहनत और निरंतरता के साथ छात्रों को जेईई मेन में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए विभिन्न विशेष कक्षाओं मे शामिल कराया। इस शानदार सफलता पर पूरे मिथिला अकादमी पब्लिक स्कूल में परिवार में हर्ष का माहौल है।

मुख्यमंत्री श्रमिक योजना में ज्यादा से ज्यादा श्रमिकों का करें निबंधन

शहर को स्वच्छ एवं सुंदर बनाएं, बारिश पूर्व तैयारियों को करें सुनिश्चित, नालियों की कराएं सफाई

समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में डीपीएलआर मेनका ने नगर निगम चास के कार्यो की समीक्षा बैठक की, अपर नगर आयुक्त को दिया जरूरी दिशा निर्देश

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

बोकारो: उपायुक्त विजया जाधव के निदेर्शानुसार समाहरणालय स्थित कार्यालय कक्ष में डीपीएलआर मेनका ने चास नगर निगम अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं व कार्यों के प्रगति कार्य की समीक्षा की। मौके पर अपर समाहर्ता मो. मुमताज अंसारी, अपर नगर आयुक्त संजीव कुमार, जिला जनसंपर्क पदाधिकारी रवि कुमार समेत नगर निगम के अधिकारी आदि उपस्थित थे।

समीक्षा क्रम में डीपीएलआर श्रीमती मेनका ने मुख्यमंत्री श्रमिक योजना की समीक्षा किया। नगर निगम द्वारा श्रमिकों को जारी जाब कार्ड की संख्या की जानकारी ली। निगम द्वारा वर्ष 20-21 में 1205, 21-22 में 437, 22-23 में 823, 23-24 में 584 एवं वर्ष 24-25 में 547 श्रमिकों को जाब कार्ड निर्गत किया गया है। इस पर उन्होंने ज्यादा से ज्यादा श्रमिकों का जाब कार्ड जारी करने का निर्देश दिया। साथ ही, उन्हें प्रतिदिन विभिन्न कार्यों में रोजगार मुहैया कराने को लेकर योजनाबद्ध कार्य करने को कहा।

आगे, समीक्षा क्रम में शहर को स्वच्छ बनाने के दिशा में किए जा रहें कार्यों की जानकारी ली। वहीं, इसमें तेजी लाने को कहा। आने वाले बारिश के मौसम को देखते हुए मौसम पूर्व तैयारियों को ससमय सुनिश्चित करने, नालियों की साफझसफाई का निर्देश दिया।

वहीं, वेंडर जोन को सक्रिय करने, सामानों की खरीदझविक्री वेंडर जोन में ही सुनिश्चित करने। सड़कों एवं शहर को अतिक्रमणमुक्त करने के लिए सतत अभियान चलाने का निर्देश दिया।

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) की भी समीक्षा की गई। अपूर्ण आवासों को पूर्ण करने को लेकर नियमित निगरानी करने एवं पूर्ण कराने में गति लाने को कहा गया। इसके अलावा कई अन्य बिंदुओं पर भी चर्चा कर जरूरी दिशाझनिर्देश दिया गया।

मसीही समुदाय ने हर्षोल्लास के साथ मनाया ईस्टर

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : सैंकड़ों की संख्या में मसीही धर्मावलंबियों ने गिरजाघरों में की प्रार्थना।ईस्टर के अवसर पर पचम्बा सीएनआई चर्च में मसीही समुदाय के धर्मावलंबियों ने प्रार्थना की और एक दूसरे को यीशु मसीह के मरणोपरांत तीसरे दिन जीवित होने को लेकर बधाई दी।इस बाबत बताते चलें कि गुड फ्राइडे के दिन ईसा मसीह को क्रूस पर चढ़ा दिया गया था और वहां उन्होंने अपना प्राण त्याग दिया था और बाइबल के अनुसार तीसरे दिन यीशु मरकर भी जी उठे और मृत्यु पर विजय पायी। इसी खुशी में मसीही समुदाय ईस्टर पर्व को हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। इस अवसर पर चर्च आराधना रेव्ह सन्नी दास द्वारा लिया गया। उन्होंने बाइबल के माध्यम से संदेश देते हुए कहा कि यीशु मसीह आज भी जीवित हैं और युगानुयुग जीवित रहने वाले हैं। वह फिर आएंगे और जब तक उनका द्वितीय आगमन नहीं हो जाता तब तक हम सभी को तैयार रहना है।उन्होंने कहा कि बाइबल कहती है कि ना हम उस घड़ी को जानते हैं ना उस दिन को। वह कब आएंगे लेकिन यह निश्चित है कि वह आएंगे और अपने चाहने वालों को अपने मानने वालों को स्वर्ग राज्य में अपने साथ लेकर जाएंगे।

इस मौके पर चर्च आराधना के बाद सभी श्रद्धालुओं को सामुहिक नास्ता मनोज लाल के परिवार वालों द्वारा करवाया गया। चर्च आराधना के बाद सभी श्रद्धालुओं ने एक दूसरे को हेप्पी ईस्टर की बधाई और शुभकामनाएं दी।इसी क्रम में अहले सुबह मसीही समुदाय के कब्रिस्तान में चर्च आराधना किया गया और अपने अपने परिजनों के कब्रों पर फुल और मोमबत्ती जलाकर प्रार्थना की। इस दौरान चर्च आराधना में संजीव किडर, जोय केशप, ओरबेन सहाय, विलियम जेकब, रंजना जेकब, संचिता मरांडी, झरना दीपाली, केपी मरांडी, सिलास मंडल, सतीश केशप, जिब्राइल मुर्मू, निहार सोरेन, डॉ. संजीव कुमार, प्रतुल चौधरी समेत सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुगण मौजूद रहे।

स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी तिलकधारी प्रसाद की तबीयत जानने नर्सिंग होम पहुंचे

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : कोडरमा लोकसभा के पूर्व सांसद तथा कांग्रेस के वरिष्ठ नेता तिलकधारी प्रसाद सिंह की कई दिनों से तबीयत खराब है।

वे नव जीवन नर्सिंग होम में भर्ती हैं। झारखंड सरकार के स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी तथा नगर विकास मंत्री सुदिवय सोनू नवजीवन नर्सिंग होम पहूंचे। इस मौके पर मंत्री गण वहां के डाक्टर माधुरी से उनके स्वास्थ्य के बारे में जानकारी प्राप्त की। इस दौरान उन्होंने उनके पुत्र किशोर कुमार सिंह और कांग्रेस जिला अध्यक्ष धनंजय कुमार सिंह से भी तिलकधारी सिंह का हालचाल जाना और श्री सिंह के जल्द स्वस्थ होने की कामना की। स्वास्थ्य मंत्री डॉक्टर इरफान अंसारी गिरिडीह सदर अस्पताल ब्लड कंपोनेंट का उद्घाटन करने आए थे। इसी कड़ी में उन्होंने कार्यक्रम के उपरांत विशेष रूप से नर्सिंग होम जाकर तिलकधारी सिंह का कुशलक्षेम जाना।

अनियंत्रित कार पेड़ से टकराई, बाल बाल बचे कार में सवार व्यक्ति

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : टुंडी मुख्यमार्ग के नावाटांड़ के पास रविवार को अहले सुबह करीब आठ बजे तेज रफ्तार से आ रही कार जे एच 24 जे 2530 अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पेड़ से जा टकराई जिससे कार पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई हालांकि दुर्घटना से वाहन में सवार किसी भी व्यक्ति को चोट नहीं लगी। ग्रामीणों ने कार में सवार व्यक्तियों को सुरक्षित बाहर निकाला। मिली जानकारी के अनुसार रविवार अहले सुबह कार वाहन संख्या जे एच 24 जे 2530 धनबाद के तरफ से आ रही थी इसी बीच गांडेय प्रखंड के ताराटांड़ थाना क्षेत्र के टुंडी गिरिडीह मुख्यमार्ग के नावाटांड़ के पास अनियंत्रित होकर पेड़ से जा टकराई स्थानीय ग्रामीणों ने घटना की सूचना ताराटांड़ पुलिस को दी सूचना पाकर ताराटांड़ पुलिस घटना स्थल पर पहुंची और घटना की जानकारी ली।

पारा शिक्षकों का वजूद और अस्मिता खतरे में

सांगठनिक बिखराव से जिंदगी में दुर्गति अस्वंभावी: सुखदेव

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

गिरिडीह : झारखंड के 62 हजार सहायक अध्यापकों की जिंदगी में हमेशा दुर्गतियों और मुसीबतों के पहाड़ की सौगातें मिलती रही है लेकिन इनका जीवन 22 वर्षों तक लगातार बेहतर सेवा के निष्ठा पूर्वक समर्पण के बावजूद भी नहीं संवर पाई है। यही है दुर्भाग्यपूर्ण और अभाग्यशाली। शैक्षाणिक विरासत की इमारतें सजाने और संवारने वालों की जुबानी जिन्हें हमेशा ही इन गरीबी की थपेड़ों से त्रस्त हो कर प्रतिभा की किरणें समाज और राष्ट्र को शिक्षा के क्षेत्र में अनमोल रौशनी बिखेरने का काम करने वाले गरीब का बेटा पारा शिक्षक के रूप में अवतरित हुआ। जिन्हें हमेशा नियुक्ति की प्रक्रिया को नियमानुकूल नहीं बताने एवं आरक्षण रोस्टर का अनुपालन नहीं किए जाने जैसी अनेक तकनीकी अड़चनें लगाते हुए वेतनमान जैसी सुविधाओं का गला घोंटा जाना सभी सरकारों की फितरत बन गई है। जो बिल्कुल असंवैधानिक मूल्यों का परिचायक है। ये परिस्थितियां कैसे आई इसे गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।एक तरफ सरकार मंईयां सम्मान योजना जैसी अनेक जन कल्याणकारी योजनाओं से झारखंड वासियों की तरक्की , शोहरत और सम्मान के लिए प्रतिबद्ध है।वहीं झारखंड में 62 सहायक अध्यापकों के द्वारा पूरे झारखंड की शिक्षा व्यवस्था को सुद्दढ़ करने एवं अति सुदूरवर्ती इलाकों के नौनिहालों के भाग्य संवारने में अपनी सारी जिंदगी की आहूति दे दी है। बावजूद इन मेहनतकश मजदूरों का बेटा और बेटियों का जो अभाग्यशाली का ताज पहन कर मामूली सी हैसियत वाली पारा शिक्षकों की नौकरी पाकर अपने आप को सौभाग्यशाली महसूस कर रहे हैं। लेकिन सरकार उनके उज्जवल भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है।डबल इंजन की तानाशाही मिजाज वाली सरकार ने भी हमारे उज्जवल भविष्य के आंदोलन को कुचल डाला है और हमारे भविष्य को रौंदने का कार्य किया है जो बिल्कुल घटिया मानसिकता को दशार्ता है।विगत 22 वर्षों से सेवारत पारा शिक्षकों ने पढ़ाई और लड़ाई के तर्ज पर अपने मौलिक अधिकारों को प्राप्त करने की हर कोशिशों एवं प्रयासों के बाद अपने ही आबा धरती के मिट्टी की सरकार बनाने में सहायक अध्यापकों का अहम योगदान रहा। लेकिन इस लोकतांत्रिक सरकार ने हमारे आंदोलन को हमारी एकजुटता की ताकत को बेनकाब कर दिया। सिर्फ आश्वासनों की झड़ी लगा कर हमारी प्रतिभाशाली मुरादों को कैद कर कूड़ेदान में डाल दिया है।तमाम सहायक अध्यापकों से अपील है कि तमाम सवालों और असंवेदनशील विचारों को त्याग कर समस्त 62 हजार सहायक अध्यापकों का जनसैलाब रांची के सड़कों पर इंकलाब का नारा गुंजायमान करने की ओर पहल अविलंब किया जाए।

सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनना चाहता है टॉपर आरुष

AARUSH BANERJEE

PRINCE KUMAR PANDEY

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

बोकारो : 99.76 परसेंटाइल के साथ जेईई मेन- 2 में डीपीएस बोकारो में सर्वोत्कृष्ट परिणाम हासिल करने वाले आरुष बनर्जी की दिली ख्वाहिश आगे चलकर एक सफल सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनने की है। जेईई के लिए वह रोजाना 8-9 घंटे पढ़ाई किया करता था। उसे 10वीं में 97.4 प्रतिशत अंक मिले थे। चिकित्सक डॉ. देवाशीष बनर्जी एवं शिक्षिका बबीता बनर्जी के होनहार पुत्र आरुष को खगोलीय विज्ञान, शतरंज, वॉलीबॉल आदि खेल में भी काफी रुचि है। आरुष इंडियन ओलंपियाड क्वालीफायर इन मैथेमेटिक्स (आईओक्यूएम) और खगोलिकी (एस्ट्रोनॉमी) की राष्ट्रीय मानक परीक्षा (एनएसईए) में भी राज्यस्तर पर सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थियों के रूप में अपनी प्रतिभा का परचम लहरा चुका है।

माता-पिता को ही आदर्श मानता है प्रिंसः जेईई मेन- 2025 में 99.65 परसेंटाइल अर्जित करने वाले डीपीएस बोकारो के छात्र प्रिंस कुमार पांडेय प्रतिदिन 7 घंटे पढ़ाई किया करता था। उसे 10वीं की परीक्षा में 94.2 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए थे। जितेंद्र पांडेय और ममता देवी के पुत्र प्रिंस कुमार को पढ़ाई के अलावा फुटबॉल आदि खेलों में काफी रुचि है। उसने अपनी सफलता का श्रेय डीपीएस के शिक्षकों व प्राचार्य को दिया है। उसके माता-पिता उसके आदर्श हैं।

आईएएस अफसर बनना चाहता है अभयः जेईई मेन 2025 में 99.35 परसेंटाइल के साथ शानदार सफलता अर्जित करने वाले डीपीएस बोकारो के अभय शंकर सिंह की इच्छा आगे चलकर एक आईएएस अधिकारी बनकर देश और जनता की सेवा करने की है। उसने जो सफलता पाई है, उसके लिए वह रोजाना लगभग आठ घंटे पढ़ाई किया करता था। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) के दिल्ली मुख्यालय में बतौर क्षेत्रीय आयुक्त (आरसी)- 2 पदस्थापित ओम प्रकाश सिंह एवं गृहिणी सुमन कुमारी के पुत्र अभय ने 10वीं में 96 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। वह अपने जीवन में देश के पूर्व राष्ट्रपति मिसाइल मैन डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम को अपना आदर्श मानता है। पढ़ाई के अलावा उसे क्रिकेट और फुटबॉल खेलना काफी पसंद है। नाकामी से हताश हो जाने वाले विद्यार्थियों के लिए अपने संदेश में अभय ने कहा कि उस परिस्थिति में निराश होने की बजाय अगर हम और भी कड़ी मेहनत से अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास जारी रखेंगे, तो निश्चय ही एक न एक दिन कामयाबी हमारे कदम जरूर चूमेगी।

कैपिटल रिपेयर के बाद सिंटर मशीन 01 का परिचालन शुरू

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

बोकारो : शनिवार को मुख्य महा प्रबंधक (अनुरक्षण) एस गुप्ता, मुख्य महा प्रबंधक (गुणवत्ता) एम लाल, मुख्य महा प्रबंधक (रेफ्रैक्टरीज) एन श्रीकांत, मुख्य महा प्रबंधक (यूटिलिटीज) एस आर सिंह, मुख्य महा प्रबंधक (मैकेनिकल) पी कुमार, मुख्य महा प्रबंधक (एस एंड एफएस) बी के सरतापे की उपस्थिति में कैपिटल रिपेयर के बाद सिंटर मशीन 01 का परिचालन शुरू शुरू किया गया। इस दौरान सिंटर प्लांट के अन्य वरीय अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित थे। सिंटर प्लांट के सिंटर मशीन 01 के कैपिटल रिपेयर का कार्य दिनाँक 05 अप्रैल से शुरू किया गया था। इस दौरान मुख्यतः हर्थ बीम और स्लिट बर्नर मॉड्यूल, एसआरसी बाईपास में संशोधन, पॉलिमर लाइनर, 04 स्पीड मोटर को सिंगल स्पीड मोटर के साथ बदलना तथा एग्जॉस्टर 01 इम्पेलर के व्यापक मरम्मत जैसे महत्वपूर्ण मरम्मत के कार्य को मुख्य महा प्रबंधक (सिंटर प्लांट) पी चौधरी के नेतृत्व में किया गया। सिंटर प्लांट के महाप्रबंधक अंशुमाली, एस.के. सिंह, संजीव कुमार, ए. हाजरा, ए. गुप्ता के देखरेख में ऑपरेशन, इलेक्ट्रिकल तथा मैकेनिकल के अन्य अधिशासी और कर्मचारी के टीम के द्वारा सभी मरम्मत के कार्य को एक निश्चित समय सीमा के अन्तर्गत पूरी सुरक्षा के साथ संपूरित किया गया। मुख्य महा प्रबंधक (सिंटर प्लांट) पी चौधरी ने कहा कि कैपिटल रिपेयर से सिंटर मशीन की उत्पादकता और गुणवत्ता बढ़ाने में मदद मिलेगी।

Page 3_Page 3.qxd 4/20/2025 10:14 PM Page 1

संक्षिप्त खबर

निरसा में डीएमएफटी फंड के तहत पीसीसी सड़क का हुआ शिलान्यास

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

निरसा : डीएमएफटी फंड के तहत बिरला ढाल अग्रसेन भवन जामताड़ा रोड पथ से पुराना फिल्टर प्लांट होते हुए खदान मोड़ छक 1.25 किलोमीटर का पीसीसी सड़क का रविवार सुबह निरसा विधायक अरूप चटर्जी एवं सांसद प्रतिनिधि प्रशांत बनर्जी,जिला परिषद सदस्य दिवाली रोहिदास, भामाल पंचायत के मुखिया रिंकू देवी के द्वारा संयुक्त रूप से विधिवत नारियल फोड़ कर शिलान्यास किया गया.वहीं मौके पर विधायक अरूप चटर्जी ने बताया कि आमजनों की सुविधा को देखते हुए सरकार के द्वारा इस तरह की योजनाओं को दिया जाता है ताकि राज्य के लोगों को सड़क संबंधित किसी प्रकार का समस्या न उत्पन्न हो. वहीं उन्होंने संवेदक को हिदायत देते हुए कहा कि निर्माण कार्य पूरी तरह से गुणवत्ता पूर्वक होना चाहिए इनके अलावा उन्होंने स्थानीय लोगों को निर्माण कार्य पर पूरी तरह से निगरानी करने की बात कही.वहीं संसद प्रतिनिधि प्रशांत बनर्जी ने भी कहा यह खुशी की बात है निरसा क्षेत्र विकास की ओर अग्रसित हो रहा है. स्थानीय लोगों का भी जिम्मेदारी है कि अपने देख रेख में निर्माण कार्य को गुणवत्ता पूर्वक संपन्न करे ताकि कार्य में किसी प्रकार की कोई गड़बड़ी न हो.जहां मौके पर निरसा प्रखंड मुखिया संघ के अध्यक्ष दिनेश सिंह.जिप सदस्य दीपाली रविदास ,पति विश्वनाथ रविदास, मुखिया पति योगेंद्र यादव,भाजपा नेता बृहस्पति पासवान, माले नेता मोनू सिंह, सजल दास.पूर्णेंदु मालाकार सहित दर्जनों लोग मौजूद रहे.

बाइक चोर धराया, लोगों ने पिटाई कर पुलिस को सौंपा

सरायकेला(**एजेंसी**)। आदित्यपुर थाना क्षेत्र में रविवार को एक चोर उस समय पकड़ा गया जब वह ईएसआई डिस्पेंसरी से बाइक चोरी कर फरार होने की कोशिश कर रहा था। स्थानीय लोगों की सतर्कता और सूझबूझ से आरोपित को गम्हरिया के ऊषा मोड़ पर धर दबोचा गया और पुलिस के हवाले कर दिया गया।

चांडिल निवासी रूदिया गांव के दुर्योधन गोप रविवार को अपने साले मुकेश प्रधान की मोटरसाइकिल लेकर आदित्यपुर स्थित ईएसआई डिस्पेंसरी गए थे। जब वह डिस्पेंसरी से बाहर निकले तो देखा कि एक अजनबी उनकी बाइक लेकर तेजी से भाग रहा है। उन्होंने शोर मचाया और तुरंत अपने कुछ परिचितों के साथ चोर का पीछा किया।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, चोर कुछ दूरी पर बाइक एक अन्य व्यक्ति को सौंपकर खुद भाग गया। बावजूद इसके, दुर्योधन और उनके साथियों ने पीछा जारी रखा और गम्हरिया क्षेत्र के ऊषा मोड़ के पास चोर को पकड़ने में सफल हुए। उन्होंने तुरंत इसकी सूचना स्थानीय थाना को दी।

गम्हरिया थाना पुलिस मौके पर पहुंची और युवक को अपनी हिरासत में ले लिया। फिलहाल पुलिस उससे पूछताछ कर रही है ताकि यह पता चल सके कि इस चोरी की घटना में और कौन लोग शामिल हैं। पुलिस इस मामले की गंभीरता से जांच कर रही है और पूरे गिरोह की संभावित संलिप्तता को लेकर सतर्क है। आदित्यपुर थाना प्रभारी ने बताया कि इस मामले में जल्द ही और भी खुलासे हो सकते हैं। स्थानीय लोगों की सजगता और तत्परता से चोरी की वारदात समय रहते टाल दी गई।

डैम में डूबने से युवक की मौत

पूर्वी सिंहभूम(एजेंसी)। पूर्वी सिंहभूम (जमशेदपुर) एमजीएम थाना क्षेत्र अंतर्गत पोखारी डैम में मछली पकड़ने गए 22 वर्षीय युवक की डूबने से मौत हो गई। मृतक की पहचान देवघर गांव निवासी बहादूर सिंह के रूप में हुई है, जो मजदूरी कर परिवार का पालन-पोषण करता था।

देवघर गांव निवासी बहादूर सिंह अपने कुछ दोस्तों के साथ मछली पकड़ने के लिए पोखारी डैम गया था। मछली पकड़ने के दौरान जब वह जाल बिछा रहा था, तभी अचानक उसका पैर फिसल गया और वह गहरे पानी में जा गिरा। साथ गए दोस्तों ने उसे बचाने की भरपूर कोशिश की, लेकिन बहादूर पानी में डूब गया।

घटना की सूचना मिलते ही एमजीएम थाना पुलिस मौके पर पहुंची और स्थानीय लोगों की मदद से दो घंटे की मशक्कत के बाद बहादूर को पानी से बाहर निकाला गया। उसे तत्काल अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

मृतक के भाई राजू सिंह ने बताया कि बहादूर चार भाई-बहनों में सबसे बड़ा था और अभी उसकी शादी नहीं हुई थी। वह दिहाड़ी मजदूरी कर परिवार का भरण-पोषण करता था और घर का एकमात्र कमाने वाला सदस्य था। पुलिस ने रविवार को शव का पोस्टमार्टम कराकर परिजनों को सौंप दिया है। फिलहाल पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है।

तेली उत्थान समाज की बैठक में कई मुद्दों पर हुई चर्चा

खूंटी(**एजेंसी**)। । छोटानागपुरिया तेली उत्थान समाज की रविवार को हुई बेठक में एक विशेष तेली समाज के हित के संदर्भ में चर्चा की गई। खासकर समाज के बच्चों के लिए उच्च शिक्षा कों लेकर विचार विमर्श किया गया। वक्ताओं ने कहा कि खूंटी जिलें में नवोदय विद्यालय केंद्रीय विद्यालय तथा बच्चियों के लिए कस्तूरबा स्कूल में दाखिला कराकर वे बच्चों को शिक्षित करें। उन्होंने कहा कि खूंटी में नॉलेज सिटी कें लिए लगभग 80 फीसदी जमीन सदानों ने दी है। वहां रक्षा यूनिवर्सिटी का निर्माण हो रहा था, लेकिन वह बंद हो गया। नॉलेज सिटी भूमि पर इंजीनियरिंग कॉलेज मेडिकल कॉलेज खोलने का सरकार की तरफ से आश्वासन दिया गया था, पर उक्त योजना को और दूसरे शहर में दे दिया गया। पूर्व में आश्वासन दिया गया था कि उक्त जमीन पर एकलव्य स्कूल खोला जाएगा। इसका शिलान्यास पूर्व केंद्रीय मंत्री अर्जुन मुंडा ने किया था और कहा गया था कि 60 फीसदी अनुसूचित जनजाति के बच्चे तथा 20-20 प्रतिशत हरिजन और पिछड़ा वर्ग के लोगों का नामांकन होगा, पर वहा सिर्फ आदिवासी बच्चों को ही लिया जा रहा है।

मौके पर धर्मशाला निर्माण को लेकर भी चर्चा की गई। उक्त भूमि में 30 अप्रैल विधिवत भूमि पूजन कर बाउंड्री का शिलान्यास किया जाएगा। भूमि पूजन कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ बीआर महतो रहेंगे। जिला अध्यक्ष शिव नारायण गौंझू ने अपील की है। बैठक में जिला अध्यक्ष शिवनारायण गौंझू, शिक्षक पंचू महतो डॉ बीआर महतो मनमथ राम, महादेव राम सहित अन्य उपस्थित थे।

थाने में लगी आग, 44 वाहन जलकर खाक

पलामू (**एजेंसी**)। मेदिनीनगर शहर थाना परिसर में रविवार को आग लगने से जब्त सामान सहित 44 वाहन जलकर खाक हो गये।

एक घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद फायर ब्रिगेड की मदद से आग पर काबू पाया गया। आग बुझाने में दमकल की दो गाड़ियों ने काफी मशक्कत के बाद आग बुझाया जा सका। घटना का कारण स्पष्ट नहीं हो पाया है। शॉर्ट सर्किट से आग लगने की संभावना जतायी जा रही है। आग लगने से थाना परिसर में एक घंटे तक अफरा तफरी का माहौल रहा। जानकारी के अनुसार शहर थाना परिसर में स्थित मंदिर के पीछे बड़ी संख्या में जब्त सामान सहित अन्य वाहन लगाकर रखे गए थे। अचानक इन वाहनों से आग की लपटे उठती दिखी। सूचना मिलते ही तुरंत शहर थाना के जवान और पुलिस पदाधिकारी सक्रिय हो गए। अगलगी में गाड़ियों के टायर, मोबिल, सीट, तेल से आग और भयावह रुप ले लिया।

बाद में छानबीन करने पर बताया गया कि 40 मोटरसाइकिल, एक बस, एक ऑटो, एक ई रिक्शा और एक कार जलकर नष्ट हो गई है। जिस जगह घटना हुई उससे सटकर बिजली का खंभा है। संभावना व्यक्त की जा रही है कि बिजली के खंभे से ही आग भड़की और देखते-देखते वाहनों को चपेट में ले लिया। शहर थाना में लगी आग की लपटे इतनी ऊंची उठ रही थी कि इसका काला धुआं पूरे शहरी क्षेत्र में फैल गया था।

आचार्य संतोष त्रिवेदी ने उदय प्रताप सिंह को रामायण देकर किया सम्मानित

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

धनबाद : मानस प्रचार समिति, मानस मंदिर, जगजीवन नगर में अध्यात्म की अविरल धारा बहाने को संकल्पित संस्था मानस प्रचार समिति का 53 वां मानस महाधिवेशन का शनिवार को समापन के उपरांत रविवार को पूणार्हुति हवन के बाद विशाल भंडारे का आयोजन किया गया. सभी भक्त जनों से भंडारे का प्रसाद ग्रहण किया. अयोध्या धाम से पधारे संत मानस के महान प्रवक्ता के आचार्य संतोष त्रिवेदी महाराज ने श्री राम सेना के पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं समाजसेवी उदय प्रताप सिंह समेत उपस्थित भक्तों को अंग वस्त्र और रामायण देकर सम्मानित किया. मानस प्रचार समिति के अध्यक्ष निरंजन सिंह, कोषाध्यक्ष निशांत नारायण,सचिव विनोद दुबे,मुकेश सिन्हा, शशि अग्रवाल,शमशेर सिंह राठौड़,गौरव सिंह, कन्हाई भट्टाचार्य,अरुण सिंह साधु सरण पाठक, योगेंद्र मिश्रा, रामप्रवेश शर्मा,शशि श्रीवास्तव, राजेश गुप्ता,अजित गुप्ता,राजेश सिंह, अरविन्द कुमार,स्वप्ना अधिकारी,राहुल कुमार, मुक्तेश्वर महतो, समरेंद्र सिंह,अशोक दा,शुक्ला, नरेश यादव, सुशील सिंह, प्रदीप सिंह चौधरी, मनोज झा समेत सैकड़ो भक्तजन भंडारे में मौजूद रहें.

शिक्षा न्यायाधिकरण को लागू करे सरकार : अजय

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

रांची । झारखंड पेरेंट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अजय राय ने राज्य के निजी स्कूलों की ओर से चालू शैक्षणिक सत्र में मनमाने ढंग से की गई फीस वृद्धि, एनुअल चार्ज, री-एडमिशन फीस और विभिन्न शुल्कों की वसूली को गैरकानूनी करार देते हुए सरकार से तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। उन्होंने रविवार को कहा कि लगातार मिल रही अभिभावकों की शिकायतें इस बात का प्रमाण हैं कि स्कूल प्रबंधन ट्यूशन फीस के अतिरिक्त विभिन्न मदों में अवैध रूप से शुल्क वसूल कर छात्र और उनके अभिभावकों का आर्थिक शोषण कर रहे हैं। राय ने कहा कि यह स्पष्ट रूप से झारखंड शिक्षा न्यायाधिकरण संशोधन अधिनियम 2017 का उल्लंघन है। इसके अंतर्गत बिना सक्षम प्राधिकरण की पूर्व स्वीकृति के कोई भी फीस वृद्धि अवैध मानी जाती है। राय ने कहा कि यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि विधानसभा में चर्चा के बावजूद अब तक किसी भी जिले के उपायुक्त ने इस विषय पर कोई ठोस बैठक नहीं की है, जो राज्य सरकार की गंभीरता पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है।

स्कूटी सवार दो युवतियों के साथ बाइक सवार ने की छेड़खानी

रामगढ़(**एजेंसी**)। रामगढ़ के राष्ट्रीय राजमार्ग 33 पर स्कूटी पर सवार दो युवतियों के साथ बाइक पर सवार युवक ने छेड़खानी की।युवतियों की स्कूटी दुर्घटनाग्रस्त हो गयी । गनीमत रही कि पीछे से कोई बड़ा वाहन नहीं आया। इससे दोनों युवतियों की जान बच गयी। युवक के छेड़खानी से स्कूटी पर सवार दोनों युवतियों की जान भी जा सकती थी।

कुजू ओपी क्षेत्र के रतवे गांव निवासी राधा महतो अपनी सहेली बीआईटी मिश्रा, रांची निवासी अंजली महतो के साथ यूट्यूब वीडियो शूट के लिए लोकेशन देखने निकली थी। शनिवार को वे लोग हजारीबाग तक गए थे। लौटने के क्रम में मांडू से ही बाइक पर सवार युवक ने उसका पीछा करना शुरू किया। रामगढ़ थाना क्षेत्र के कोठार ओवर ब्रिज तक युवक अपनी बाइक से पीछा करते पहुंचा। इस दौरान वह लड़कियों के साथ अश्लील हरकतें कर रहा था। साथ ही अश्लील टिप्पणियां भी कर रहा था। इस दौरान लड़कियों ने उस युवक का वीडियो भी बना लिया। कोठार ओवर ब्रिज राष्ट्रीय राजमार्ग 33 पर उसने लड़कियों के साथ अभद्र व्यवहार किया और छेड़खानी की। जिससे उनका स्कूटी असंतुलित हुआ और दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे में दोनों लड़कियों को चोटे भी आई।

इस मामले में पीड़ित राधा महतो और अंजली महतो ने रामगढ़ थाने में शिकायत दर्ज कराई है। लड़कियों की शिकायत के बाद रामगढ़ पुलिस भी हरकत में आई। पुलिस ने उस बाइक सवार की पहचान करनी शुरू कर दी है। राष्ट्रीय राजमार्ग पर विभिन्न स्थानों पर लगाए गए सीसीटीवी कैमरे को भी खंगाले जा रहा है। यहां तक कि लाइन होटल में लगाए हुए सीसीटीवी कैमरे को भी पुलिस देख रही है।

झारखंड बांगला भाषी उन्नयन समिति का 23 अप्रैल को राज्य स्तरीय बांगाली संस्कृतिक कार्यक्रम

झामुमो के केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य और निरसा विधायक अरूप चटर्जी होंगे शामिल

झारखंड के स्कूलों में बांगला भाषा के शिक्षकों की नियुक्ति के साथ पढ़ाई शुरू करवायी जाए: फूलचंद मंडल

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

धनबादः रविवार को झारखंड बंगला भाषी उन्नयन समिति द्वारा पूर्व विधायक फूलचंद मंडल के बरवाअड्डा स्थित आवास में प्रेस वार्ता के दौरान पूर्व विधायक फूलचंद मंडल ने बताया कि बंगला झारखंड की मुख्य भाषा है. उन्होंने राज्य सरकार से इस भाषा की गरिमा को बरकरार रखने के लिए स्कूलों में बांग्ला भाषा के शिक्षकों की नियुक्ति और पढ़ाई शुरू करवाई जाने की मांग की. उन्होंने कहा कि प्राथमिक

स्कूलों में कई बच्चे बांग्ला भाषी है जो बंगला पढ़ना चाहते हैं.ज्ञात हो कुछ महीने पहले क्षेत्रीय और जनजातीय भाषा सर्वे के दौरान वास्तविक नामांकन पर बांग्ला भाषा की पुस्तक छपाई के लिए सभी विद्यालयों से प्रतिवेदन भी भेजा गया है. श्री मंडल ने बताया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप 40% से अधिक बंगला भाषी विद्यार्थी हैं. जिनके भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। झारखंड बांग्ला भाषी उन्नयन समिति के कार्यकारी अध्यक्ष रीना मंडल ने बताया बांग्ला भाषा संस्कृति को संजोए रखने के लिए आगामी 23 अप्रैल को बरवाअड्डा दुर्गा मंदिर प्रांगण में राज्य स्तरीय बंगाली संस्कृति का कार्यक्रम किया जाएगा. इस सांस्कृतिक कार्यक्रम में लगभग 100 से ज्यादा प्रतिभागी भाग लेंगे. जिसमें बच्चे, महिलाएं, पुरुष और युवा शामिल है. कार्यक्रम के मुख्य अतिथि झारखंड मुक्ति मोर्चा केंद्रीय महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य होंगे और विशेष अतिथि के रूप में निरसा विधायक अरूप चटर्जी. इस भव्य कार्यक्रम में झारखंड के सभी जिले से गणमान्य लोग जुटेंगे. प्रेस वार्ता में पूर्व विधायक फूलचंद मंडल , तपन मंडल,वृंदावन मंडल, आशीष मंडल, सुमंतो मंडल, लगेन बाउरी, पार्थो सेनगुप्ता, रघुनाथ राय, शिबू चक्रवर्ती, मिथुन मंडल, बैद्यनाथ मंडल, सोनाली मंडल, नुना मंडल, मंजू मंडल, बिनोती मंडल, भादुरानी मंडल मौजूद रहे.

रामगढ़ प्रेस क्लब के अध्यक्ष बने महेश मारवाह, सचिव अमितेश प्रकाश

रामगढ़(**एजेंसी**)। रामगढ़ शहर के बिजुलिया स्थित लॉ मैरिटल होटल के सभागार में रविवार को रामगढ़ प्रेस क्लब की बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान सर्वसम्मति से रामगढ़ प्रेस क्लब के अध्यक्ष पद के लिए महेश मारवाह को ध्वनि मत के साथ निर्वाचित किया गया। वहीं उपाध्यक्ष पद के लिए राजेश वर्मा, सचिव पद के लिए अमितेश प्रकाश, सहसचिव पद के लिए अनुज कुमार, कोषाध्यक्ष पद लिए के लिए मोहम्मद खालिद अनवर, संगठन सचिव के लिए करमजीत सिंह जग्गी, मुख्य संरक्षक पद के लिए नंदकिशोर अग्रवाल, संरक्षक के लिए महावीर अग्रवाल, राजेश राय और रामशंकर प्रसाद मुन्ना को सर्वसम्मति से निर्वाचित किया गया। मौके पर रामगढ़ प्रेस क्लब के नवनिर्वाचित अध्यक्ष

महेश मारवाह ने कहा कि रामगढ़ प्रेस क्लब के जो सदस्य हैं उनके हितों के लिए पिछले छह वर्षों से लगातार प्रयासरत रहे और आगे भी तीन साल के लिए यह जो टर्म बना है, इसके लिए भी पत्रकारों के हितों के लिए जो भी संभव हो पायेगा। वह हर संभव पूरा करने का प्रयास किया जाएगा। उन्होंने कहा कि झारखंड सरकार से जो भी सुविधाएं पत्रकारों को नहीं मिल पा रही है। वह सुविधाएं भी लेने का प्रयास किया जाएगा। वहीं आए दिन पत्रकारों के ऊपर जो हमले होते हैं, इस दिशा में भी हमलोग सरकार से वार्ता करेंगे। रामगढ़ प्रेस क्लब के लिए अपना भवन नहीं, इसके लिए क्लब का एक प्रतिनिधिमंडल जल्द ही झारखंड सरकार से मिलकर भवन आवंटित करने की मांग की जाएगी। बैठक के माध्यम से मारवाह ने यह भी कहा कि धनबाद और हजारीबाग में पत्रकारों के ऊपर जो हमले हुए हैं, वह काफी निंदनीय है, इसकी भर्त्सना की जाती है। इसके लिए भी क्लब का प्रतिनिधिमंडल झारखंड सरकार से मिलकर दोषियों की गिरफ्तारी कर कार्रवाई के लिए मांग करेंगे। रामगढ़ प्रेस क्लब के अध्यक्ष पद पर सर्वसम्मति से महेश मारवाह के निर्वाचित होने पर क्लब के नवनिर्वाचित मुख्य संरक्षक नंदकिशोर अग्रवाल, संरक्षक महावीर अग्रवाल, संरक्षक राजेश राय, उपाध्यक्ष राजेश वर्मा, संगठन सचिव करमजीत सिंह जग्गी, कोषाध्यक्ष मोहम्मद खालिद अनवर, सदस्य विरेन्द्र कुमार राणा, धर्मेंद्र राठौर, आकाश शर्मा, रामदेव, प्रकाश पटवारी, आशीष मुखर्जी, इन्द्रजीत कुमार आदि सदस्यों ने बुके देकर गर्म जोशी के साथ स्वागत किया।

पंचकुंडीय गायत्री महायज्ञ का समापन

खूंटी (एजेंसी)। कर्रा प्रखंड के महतो टोली गांव में अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से आयोजित पंचकुंडीय गायत्री महायज्ञ का समापन रविवार को हो गया। इस धार्मिक अनुष्ठान में क्षेत्र के सैकड़ों श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम की शुरूआत शांति कुंज, हरिद्वार से आये परिव्राजक चंदन मोदी ने वैदिक मंत्रों के सस्वर गान और देव पूजन, सर्वतोभद्र पूजन आदि विधियों के साथ कराई।

यज्ञ की पवित्र अग्नि में श्रद्धालुओं ने आहुतियां अर्पित कर विश्व शांति और जनकल्याण की कामना की। यज्ञ के दौरान युगगायक अमित किरण की ओर से प्रस्तुत होता है सारे विश्व का कल्याण यज्ञ से, जल्दी प्रसन्न होते हैं। भगवान यज्ञ से जैसे प्रेरणादायक गीतों पर श्रद्धालु झूमते नजर आए। चंदन मोदी ने यज्ञ की जीवन में महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि प्रत्येक घर में नित्य बलिवैश्य आहुति देने के बाद भोजन को प्रसाद रूप में ग्रहण करना चाहिए। आयोजन को सफल बनाने में कर्रा के स्थानीय गणमान्य नागरिकों के साथ-साथ खूंटी से आए गायत्री परिवार के कार्यकताओं का भी योगदान रहा।

68 वीं राष्ट्रीय विद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता के लिए 48 सदस्यीय कुश्ती टीम हुआ दिल्ली रवाना

कतरास के आयूष सिंह एवं रौशन केशरी का हुआ चयन

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

कतरास : 21 से 27 अप्रैल 2025 तक दिल्ली में आयोजित 68 वीं राष्ट्रीय, विद्यालय कुश्ती प्रतियोगिता 2024-25 यू -17 बालक/बालिका फ्रीस्टाइल एवं यू -17,यू-19 बालक ग्रीको रोमन में भाग लेने हेतु झारखंड विद्यालय कुश्ती टीम के 48,सदस्य जिसमें, 30 बालक पहलवान, 10 बालिका पहलवान एवं 04 टीम प्रशिक्षक तथा 4 टीम प्रबंधक शामिल है.उक्त प्रतियोगिता के लिए टीम रवाना होने से पहले झारखंड शिक्षा विभाग के द्वारा खिलाड़ियों को ट्रैक सूट, खेल किट देकर ,झारखंड विद्यालय कुश्ती टीम को रवाना किया गया.बालिका वर्ग यू- 17

40 केजी-खुशबू तिर्की-जेएसएसपीएस,

43केजी-प्राची कुजूर-जेएसएसपीएस

46केजी-रिचा कुजूर-जेएसएसपीएस

49केजी-स्नेहा कुमारी-जेएसएसपीएस

53केजी-इंद्रावती कुमारी-जेएसएसपीएस

57केजी-अनीशा केरकेट्टा-जेएसएसपीएस

62केजी-शिमला पिंगुआ-पश्चिमी सिंहभूम 65केजी-सूर्यमणि सिंकु-पश्चिमी सिंहभूम

69-अशमून खातून-गुमला

73केजी-दिव्या प्रकाशनी-रांची

प्रशिक्षक-ईशा कुमारी-कोडरमा

प्रबंधक-सुमन कुमारी,बालक ग्रीको रोमन यू- 17

45केजी-अनूप कुमार-

48केजी-करण कुमार-जेएसएसपीएस

51केजी-अमित कुमार-जेएसएसपीएस

55केजी-राकेश हेंब्रम-जेएसएसपीएस

60केजी-वीरेंद्र प्रधान-जेएसएसपीएस65केजी-नैतिक कुमार दे-धनबाद

71केजी-चंदन कुमार-बोकारो

80केजी-आयुष सिंह-धनबाद

92केजी-सूरज कुमार-कोडरमा

110केजी-आयुष कुमार-कोडरमा

प्रशिक्षक- राजीव रंजन-रांची

प्रबंधक- नवीन सिंह-जेएसएसपीएस ,बालक फ्रीस्टाइल यू-17

45केजी-हिमांशु कुमार-जेएसएसपीएस

48केजी-अमन कुमार-रांची

51केजी-प्रिंस कुमार यादव-धनबाद

55केजी-श्री करण यादव-गोदा

60केजी-सोनू कुमार-साहिबगंज

65केजी-मुन्ना कुमार-बोकारो

71केजी-रोशन केसरी-धनबाद

80केजी-अनुपम कुमार भारती-कोडरमा

92केजी-सोनू कुमार छात्र

110केजी-मनीष झा देवघर

प्रशिक्षक-प्रकाश सिंह बादल-देवघर,

प्रबंधक-शंभू नाथ-जेइपीसी बालक-ग्रीको रोमन यू-19

55केजी-आदित्य कुमार गौरव-जेएसएसपीएस

60केजी-आकाश कुमार महतो-जेएसएसपीएस

63केजी-अरविंद उरांव-जेएसएसपीएस

67केजी-रामचंद्र मंडल-जेएसएसपीएस

72केजी-प्रभु कुमार-कोडरमा

77केजी-लक्ष्मण मिश्रा-गोड्डा

82केजी-शोएब-रामगढ़

87केजी-विश्वजीत सिंह-कोडरमा

97केजी-पीयूष कुमार शाह-गोड्डा

130केजी-अंकित कुमार-गोड्डा

प्रशिक्षक- बबलू कुमार-रांची,

मैनेजर प्रवीण सिंह- जेइपीसी

झारखंड विद्यालय कुश्ती टीम के सदस्यों को रवाना होने से पूर्व शिक्षा सचिव उमा शंकर सिंह, शिक्षा निदेशक शशि रंजन, झारखंड राज्य कुश्ती संघ के अध्यक्ष जीशान कमर,अभिभावक-के रवि कुमार, हमारे मार्गदर्शक-भोलानाथ सिंह,राज्य कार्यक्रम पदाधिकारी-धीर सेन सोरेंग,महासचिव-रजनीश कुमार,विजय शंकर सिंह, सभी जिला कुश्ती अध्यक्ष, सचिव एवं झारखंड राज्य कुश्ती परिवार तथा शिक्षा विभाग के द्वारा शुभकामनाएं दी.

संक्षिप्त खबरें

फतेहपुर पुलिस ने शराब लदी सूमो किया जब्त, तस्कर फरार

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

फतेहपुर (गया): फतेहपुर थाना क्षेत्र के जयपुर गांव के पास से पुलिस ने टाटा सुमो विकटा वाहन 300 लीटर महुआ निर्मित शराब जब्त की है। हालांकि तस्कर मौके से भागने में सफल रहा है। थानाध्यक्ष प्रशांत कुमार सिंह ने बताया कि झारखंड इलाके से शराब तस्करी कर फतेहपुर थाना क्षेत्र के रास्ते लाए जाने की गुप्त सूचना मिली थी। सूचना मिलते ही पुलिस टीम को तत्काल कार्रवाई में भेजा गया। थाना क्षेत्र के जयपुर गांव स्थित धर्म कांटा के पास जब पुलिस पहुंची तो तस्कर दूर से ही पुलिस को देख शराब लदी सुमो विकता वाहन को छोड़ मौके से भाग गया। उन्होंने बताया कि जब सुमो वाहन की जांच की गई तो उसमें से पांच प्लास्टिक के बोरा बंद 300 लीटर महुआ शराब बरामद हुआ। इसके बाद शराब व सुमो वाहन को जब्त कर लिया गया। उन्होंने बताया कि शराब बरामदगी मामले में थाना उत्पाद अधिनियम के तहत एफआईआर दर्ज की गई। मौके से बच कर भाग गए तस्करों की पहचान कर उसे गिरफ्तार करने के लिए छापेमारी की जा रही है।

साम्प्रदायिक मामले का आरोपित गिरफ्तार, भेजा गया जेल

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

फतेहपुर (गया): फतेहपुर पुलिस ने सांप्रदायिक मामले में वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। वह इस मामले में पिछले पांच साल से पुलिस के वांछित था। थानाध्यक्ष प्रशांत कुमार सिंह ने बताया कि फतेहपुर थाना क्षेत्र की जगरनाथपुर पंचायत के अरगा गांव में जून 2020 में सांप्रदायिक मामला हो गया। इस मामले में 65 लोगों के विरुद्ध नामजद एफआईआर दर्ज हुआ था। इसमें 40 आरोपितों को पूर्व में ही गिरफ्तार कर जेल भेजा जा चुका है। जबकि 24 आरोपितों ने कोर्ट से जमानत ले लिया है। इस मामले में बचे एक अंतिम आरोपित सुनील कुमार चौधरी उर्फ सुधीर चौधरी को भी जगन्नाथपुर गांव स्थित उसके से गिरफ्तार कर लिया गया है। उसे पूछताछ के बाद जेल भेज दिया गया है।

साढ़े 8 किलो गांजा के साथ एक तस्कर गिरफ्तार

नवादा,(एजेंसी) :नवादा जिले के राजौली में बिहार-झारखंड अंतरराज्यीय सीमा पर समेकित जांच चौकी पर रविवार को पप्पू ट्रेवल बस से 8.495 किलोग्राम गांजा के साथ एक तस्कर को उत्पाद विभाग की टीम ने गिरफ्तार किया है।

उत्पाद अधीक्षक अरुण कुमार मिश्रा ने बताया कि झारखंड की ओर से आ रहे पप्पू ट्रैवल्स बस को जांच की गई। जांच के दौरान 8.495 किलोग्राम गांजा के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया गया है। गिरफ्तार तस्कर की पहचान नवादा जिला के नरहट थाना क्षेत्र के कृष्ण यादव के पुत्र गांगुली कुमार के रूप में किया गया है।

उत्पाद अधीक्षक ने बताया कि गांजा रांची से खरीद कर चला था।सिंटू कुमार को गांजा देना था।गिरफ्तार गांजा तस्कर के विरुद्ध एनडीपीएस एक्ट के तहत प्राथमिक दर्ज कर रविवार को अनुमंडलीय अस्पताल रजौली में स्वास्थ्य जांच कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है। बरामद गंजे की कीमत 5 लाख रुपया आकी गई है।

मूंग की फसल से बढ़ेगी किसानों की आय : डॉ. राजीव सिंह

कटिहार, (एजेंसी) : अप्रैल - कृषि विज्ञान केन्द्र कटिहार में रविवार को टीएसपी अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण अंतर्गत मूंग की वैज्ञानिक खेती विषय पर जनजातीय किसानों के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन वरीय वैज्ञानिक सह प्रधान डॉ. राजीव सिंह ने किया।प्रशिक्षण कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डॉ. राजीव सिंह ने कहा कि मूंग की फसल उगाने से मिट्टी की उर्वरता बढ़ती है और अगली फसल को अतिरिक्त नाइट्रोजन की आवश्यकता कम होती है। उन्होंने कहा कि मूंग की उन्नत प्रभेद शिखा जनजातीय किसानों को अग्रिम पंक्ति प्रत्यक्षण अंतर्गत उपलब्ध कराया जा रहा है, जिसकी औसत उपज 11 से 12 क्विंटल प्रति हेक्टेयर है और यह किस्म 65 से 70 दिनों में पक कर तैयार हो जाती है।कृषि वैज्ञानिक डॉ सुशील सिंह ने कहा कि मूंग फसल के लिए खेत की तैयारी करते समय खेत की दो से तीन जुताई कर पाटा चला देना चाहिए और बुवाई के 24 घंटे पूर्व 2.5 ग्राम फफूंदनाशी दवा जैसे डाईफॉल्टआन अथवा थाइरम से उपचारित करना चाहिए। कृषि वैज्ञानिक पंकज कुमार ने कहा कि मूंग के खेत में खरपतवार होने पर फसल का खरपतवार से प्रतिस्पर्धा बढ़ती है और इसका प्रतिकूल असर उत्पादन पर पड़ता है। इस अवसर पर जिले विभिन्न प्रखंडों से आए 60 महिला एवं पुरुष किसानों ने अपनी सहभागिता दी।

प्रधानमंत्री के आगामी जनसभा को लेकर पीएचईडी मंत्री ने अररिया में कार्यकताओं के साथ की बैठक

फारबिसगंज/अररिया, (एजेंसी) : भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 24 अप्रैल को मधुबनी जिला के विदेश्वर स्थान के समीप होने वाले जनसभा में अररिया जिला के कार्यकताओं की ज्यादा संख्या में भागीदारी सुनिश्चित करवाने के उद्देश्य से बिहार सरकार के पीएचईडी मंत्री नीरज कुमार सिंह बबलू और भारतीय जनता पार्टी प्रदेश के उपाध्यक्ष नूतन सिंह अररिया सर्किट हाउस में एनडीए कार्यकताओं के साथ बैठक किया । इस बैठक में भारतीय जनता पार्टी अररिया जिला के अध्यक्ष आदित्य नारायण झा पूर्व के जिला अध्यक्ष संतोष सुराणा आलोक कुमार भगत जिला के महामंत्री कृष्ण कुमार सेनानी आकाश राज जिला के मंत्री कनकलता झा सोशल मीडिया के जिला संयोजक सुजीत राज जिला के सह कोषाध्यक्ष सुधीर सिंह हरेंद्र सिंह हरिपुर मंडल के अध्यक्ष विक्रम पासवान जदयू के प्रदेश महासचिव रमेश सिंह रोशन कुमार झा के अलावा दर्जनों कार्यकर्ता मौजूद रहे।

केंद्रीय मंत्री जोगबनी से सटे नेपाल में भारत सरकार के सहयोग से निर्मित विद्युत परियोजना का करेंगे उद्घाटन

अररिया (एजेंसी) :केंद्रीय ऊर्जा एवम शहरी विकास मंत्री मनोहर लाल खट्टर मंगलवार को नेपाल भ्रमण पर रहेंगे। जोगबनी सीमा से सटे पड़ोसी देश नेपाल के कोसी प्रदेश में केंद्रीय मंत्री का कार्यक्रम है,जहां वे भारत सरकार के सहयोग से निर्मित विद्युत परियोजना का उद्घाटन करेंगे।केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर का नेपाल भ्रमण नेपाल सरकार के ऊर्जा,जल स्रोत तथा सिंचाई मंत्री दीपक खड़का के आमंत्रण पर है।

नेपाल सरकार के ऊर्जा जल स्रोत विभाग के द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार,मंत्री मनोहर लाल खट्टर के द्वारा मंगलवार को भारत सरकार के सहयोग से निर्मित कोशी कॉरिडोर अंतर्गत 220 केवी प्रसारण लाइन अंतर्गत इनरुवाझवसन्तपुरझबानेश्वरझ तुम्लींगटार 200 केवी प्रसारण लाइन तथा 220/133/33 केवी तुम्लींगटार सब स्टेशन, 220/33 केवी बानेश्वर सब स्टेशन और 220/133/33 केवी वसन्तपुर सब स्टेशन का संयुक्त रूप से उद्घाटन करने का कार्यक्रम तय है। इसी दिन भारत सरकार के द्वारा निर्माण किए गए अरुण तीसरे जल विद्युत परियोजना का पावर हाउस तथा तटबंध क्षेत्र का अवलोकन करने का भी कार्यक्रम तय है। भारत नेपाल के द्वारा संयुक्त रूप से निर्माण किए जा रहे प्रसारण लाइन निर्माण के लिए स्थापना किए गए कम्पनी के समझौता पत्र में हस्ताक्षर भी किए जाएंगे। केंद्रीय मंत्री मोहन लाल खट्टर के द्वारा बुधवार को मुस्तांग जिले में मुक्तिनाथ का अवलोकन किया जाएगा।इसके बाद प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली, उप प्रधानमंत्री एवम् शहरी विकास मंत्री प्रकाशमान सिंह से शिष्टाचार मुलाकात का कार्यक्रम तय किया गया है।इसके बाद काठमांडू में पशुपतिनाथ का दर्शन कर भारत वापस होने की बात नेपाल सरकार के ऊर्जा मंत्रालय के द्वारा कही गई है।

कांग्रेस नेताओं को झूठे मुकदमों में उलझाने की कोशिश: मल्लिकार्जुन खरगे

पटना,(एजेंसी) : कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने दावा किया है कि कांग्रेस नेताओं को झूठे मुकदमे में उलझाने की कोशिशें की जा रही हैं। बिहार के बक्सर में रविवार को एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए उन्होंने भाजपा पर षड्यंत्र के आरोप लगाए।

खरगे ने दावा किया कि कांग्रेस नेताओं पर पिछले दस साल में अनगिनत रेड हुए लेकिन निकला कुछ नहीं। ईडी ने 193 नेताओं पर केस किया लेकिन केवल दो मामले साबित कर पाये। खरगे का कहना है कि नेशनल हेराल्ड मामले में जिस परिवार को बदनाम करने का प्रयास किया गया, उसके घर का हर सदस्य आजादी के आंदोलन में जेल में रहा। आजादी के पहले आनंद भवन और स्वराज भवन जैसी संपत्ति देश को समर्पित कर दिया। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार कांग्रेस और विपक्षी दलों के साथ दुश्मनों जैसा व्यवहार कर रही है। उन्होंने कहा कि तमाम कोशिशों के बाद भी कांग्रेस न डरने वाली है और न झुकने वाली।

राज्य में 2800 आयुष चिकित्सकों की शीघ्र होगी बहाली: मंगल पांडेय

पटना, (एजेंसी) : राज्य में 2800 आयुष चिकित्सकों की शीघ्र बहाली होगी। इसकी जानकारी देते हुए स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने बताया कि 60 करोड़ की राशि आयुष की दवा खरीद के लिए इस साल केंद्र सरकार देगी। वह आयुष मेडिकल एसोसिएशन (बिहार) की ओर से पटना के अधिवेशन भवन में हैनीमैन जयंती सह साईन्टीफिक सेमिनार को संबोधित कर रहे थे। सेमिनार के मुख्य अतिथि में उनके साथ भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह पूर्व मंत्री दिलीप जायसवाल भी थे।स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय ने आयुष चिकित्सकों को भरोसा दिलाया कि सरकार उनके वाजिब हक और सम्मान के लिए हमेशा तत्परता से कार्य कर रही है। नतीजतन शीघ्र ही राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (एनएचएम) के तहत लगभग 2,800 आयुष चिकित्सकों की नियुक्ति हेतु विज्ञापन एक सप्ताह में प्रकाशित की जाएगी एवं रिक्त पदों को भर दिया जाएगा।मंगल पांडेय ने कहा कि संपूर्ण आयुष पद्धति के प्रति पिछले एक दशक में पीएम नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व कें क्रांतिकारी बदलाव आया है। पीएम मोदी ने 2014 में आयुष मंत्रालय का गठन किया, जिसके फलस्वरुप इस पद्धति के विकास के लिए अलग से फंड, योजनाएं, अस्पताल एवं अन्य व्यवस्थाओं को चमकाया गया। व्यवस्थाओं में बदलाव आया। वहीं बिहार में भी मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में आयुष चिकित्सा को नई दिशा दी गयी। आयुर्वेद, होमियोपैथ व यूनानी का तेजी से विकास हुआ। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष दिलीप जायसवाल ने कहा कि आयुष चिकित्सक पूरी निष्ठा से सरकारी अस्पतालों में अपनी सेवा दे रहे हैं। होमियोपैथी पद्धति भी आज ऐलोपैथ की तरह कारगर चिकित्सीय उपचार कर रहा है। इस पद्धति में सही और सटीक ईलाज हो रहा है।

पीएचईडी मंत्री नीरज कुमार बबलू ने वक्फ बोर्ड के संशोधन बिल पर पीएम का जताया आभार

अररिया, (एजेंसी) : बिहार सरकार के लोक स्वास्थ्य अभियंत्रण विभाग के मंत्री नीरज कुमार बबलू ने वक्फ बोर्ड के जमीन को चंद लोगों के लिए लूट का अड्डा बनाकर रखने की बात कही।उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वक्फ बोर्ड संशोधन बिल लाकर और उसे दोनों सदनों से पारित कराकर प्रधानमंत्री ने गरीब मुसलमानों के साथ न्याय करने की बात कही।

बिहार सरकार के पीएचईडी मंत्री नीरज कुमार बबलू रविवार दोपहर अररिया सर्किट हाउस पहुंचे थे,जहां उनके पहुंचने पर एनडीए के कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत बुके और फूलमालाओं के साथ किया।भाजपा जिलाध्यक्ष आदित्य नारायण झा के नेतृत्व में संतोष सुराना,रमेश सिंह,सुधीर सिंह,अविनाश कुमार सिंह,संजय अकेला आदि ने मंत्री को बुके प्रदान कर स्वागत किया।मंत्री नीरज कुमार बबलू एनडीए के कार्यकर्ताओं के साथ बैठक भी की और आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारी के साथ आगामी 24 अप्रैल को मधुबनी में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यक्रम में भागीदारी को लेकर पर भी आपस में मंत्रणा की।

बैठक उपरान्त उन्होंने मीडिया से बात करते हुए अररिया में वक्फ संशोधन बिल पर हाय तौबा मचाने वालों को करारा जवाब दिया।मंत्री ने कहा कि चंद लोगों ने वक्फ को लूट का अड्डा बना दिया था।आम गरीब मुस्लिम समाज के लोगों को वक्फ को लेकर जागरूक होने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि इस संशोधन बिल से देश के गरीब मुसलमानों को इसका सीधा लाभ मिल सकेगा। पहले जिस तरीके से वक्फ के नाम पर जमीन पर चंद लोगों का कब्जा हुआ करता था और उससे होने वाली काली कमाई पर कुछ लोग कुंडली मारकर बैठे हुए थे। इन सब पर रोक लगेगी और आने वाले छह महीने के भीतर मुसलमान भाइयों को इस कानून की पारदर्शिता भी दिखने लगेगी।

वक्फ संशोधन बिल को लेकर सुप्रीम कोर्ट के तात्कालिक आदेश को लेकर उन्होंने कहा कि संसद का अपना अधिकार है।सुप्रीम कोर्ट को संसद द्वारा पारित निर्णय की समीक्षा करनी चाहिए।

एनआरआई के घर हुई चोरी का खुलासा, पुलिस ने 20.70 लाख की चोरी का माल किया बरामद

नवादा, (एजेंसी) :नवादा में पुलिस ने रविवार को एनआरआई के घर हुई लाखों की चोरी के मामले का उद्भेदन करते हुए माल बरामद कर लिया है।

.नवादा में एसपी अभिनव धीमान के आदेश पर नवादा नगर थाना प्रभारी अविनाश कुमार को बड़ी कामयाबी हाथ लगी है। पुलिस ने तकनीकी सर्विलांस और मानवीय इंटेलिजेंस की मदद से बड़ी सफलता हासिल की है। पुलिस ने शहर के रामनगर गोनावां में एक एनआरआई संजीत सिंह के बंद घर से चोरी गए लाखों के गहने और मूर्तियां बरामद की हैं।

पुलिस ने लाइन पार मिजापुर इलाके में स्व. तपेश्वर प्रसाद के बेटे नीरज कुमार के घर पर छापेमारी की। यहां से चांदी की थाली, कटोरी, ग्लास, प्लेट, चम्मच और सिंदूर का डिब्बा बरामद किया गया। इसके अलावा तीन अंगूठियां, बजरंगबली और गणपति की धातु की मूर्तियां भी मिलीं। दो आभूषण विक्रेताओं को गिरफ्तार किया गया है। मां गायत्री ज्वेलर्स के संचालक राजू कुमार पांडेय और गढ़ पर के शुभम वर्मा को हिरासत में लिया गया है।

शुभम पर चोरी के गहने खरीदकर गलाने का और राजू पर गहने खरीदने का आरोप है। पुलिस के अनुसार शुभम वर्मा के

घर से की गई छापेमारी में एक सोने का गले का सेट और करीब एक किलोग्राम चांदी बरामद की गई थी। राजू को उसकी दुकान से और शुभम को बिहार बस स्टैंड के पास से गिरफ्तार किया गया। यह मामला जनवरी और फरवरी में नगर थाना क्षेत्र में हुई आठ बंद घरों में चोरी से जुड़ा है। चोरी का मुख्य आरोपी नीरज कुमार अभी फरार है। पुलिस उसकी गिरफ्तारी के लिए छापेमारी कर रही है। एनआरआई के घर से हुई चोरी का मामला सुलझा लिया है।

जेल से रिमांड पर लाए बन्दी ने खोले राज

इस मामले को सुलझाने के लिए पुलिस ने जेल में बंद दो आरोपियों को रिमांड पर लेकर पूछताछ की। इसके बाद अलग-अलग स्थानों पर छापेमारी कर 19 लाख रुपये की ज्वेलरी और 1.70 लाख रुपये नगद बरामद किए। पुलिस ने जेल में बंद राहुल कुमार और नवनीत कुमार उर्फ गोल्डन को 19 अप्रैल को 24 घंटे के लिए कोर्ट से रिमांड पर लिया। राहुल कुमार नगर थाना क्षेत्र के न्यू एरिया पातालपुरी का रहने वाला है। वह लखिन्द्र सहनी का बेटा है। नवनीत कुमार पकरीबरावां थाना क्षेत्र के डीहा गांव निवासी रंजीत कुमार का बेटा है।इससे पहले 16 मार्च को पुलिस ने इन दोनों को उनके दो अन्य साथियों के साथ गिरफ्तार किया था। अन्य आरोपियों में मिजार्पुर निवासी अजय सिंह का बेटा राहुल कुमार और प्रसाद बिगहा के चुन्नू विश्वकर्मा का बेटा करण विश्वकर्मा शामिल हैं।

सदर एसडीपीओ हुलास कुमार ने बताया कि दोनों आरोपियों की स्वीकारोक्ति के बाद विभिन्न स्थानों पर छापेमारी की गई। एक आरोपी के घर से एनआरआई के घर से चोरी किए गए गहने और अन्य सामान बरामद हुए। मामले की जांच अभी जारी है

मोतिहारी में 6 साइबर फ्रॉड गिरफ्तार, पाकिस्तान एवं नेपाल से कनेक्शन आया सामने

पूर्वी चंपारण,(एजेंसी) : जिला साइबर थाना की पुलिस की टीम ने पुलिस अधीक्षक स्वर्ण प्रभात के निर्देश पर पूर्वी चंपारण जिला के पहाड़पुर स्थित सिसवा बाजार से साइबर फ्रॉड करने वाले एक बड़े गिरोह का खुलासा करते हुए गिरोह के छह बदमाशों को गिरफ्तार किया है।बताया गया है,कि इस गिरोह का नेटवर्क नेपाल से लेकर पाकिस्तान तक फैला है,जिसका बड़ा सबूत भी पुलिस को मिला है। पुलिस टीम इस गिरोह के सभी लिंकेज को खंगालने में जुटी है।पुलिस ने इन अपराधियों के पास से 10 स्मार्ट फोन, एक की-पैड फोन, 8 एटीएम कार्ड, 19

सिमकार्ड, विभिन्न बैंकों के 15 पासबुक व 66 हजार चार सौ रुपये नगद बरामद किया है। एसपी स्वर्ण प्रभात ने बताया कि बदमाशों के पास से बरामद सिमकार्ड व पासबुक को लेकर देश के कई राज्यों में शिकायत दर्ज है।

पकड़े गये अपराधियो की पहचान पहाड़पुर के सिसवा बाजार निवासी अभिमन्यु कुमार उर्फ लालू, इमामुद्दीन अंसारी, क्यामू अंसारी, सहजाद आलम, सरवर सुलतान व मनोवर आलम के रूप में हुई है,जिसने पूछताछ के दौरान नेपाल और पाकिस्तान से कनेक्शन होने का खुलासा किया है।इसके साथ ही इनलोगो ने विदेश में बैठे साइबर फ्रॉड के एक मास्टर माइंड मोहम्मद इब्राहिम के नाम का भी खुलासा किया है।

एसपी ने बताया कि अपराधियो के पास से मिले पासबुक से अब तक करोड़ों के फ्रॉड किये जाने का सबूत मिला है।इन पैसो से यह गिरोह क्रिप्टो कैरेंसी खरीद कर यूएस डॉलर में तब्दील करते थे।जिसके लिए यह गिरोह बिमेन एप से यूएसडीटी में बदलकर क्राप्ट ट्रेडिंग कर रहे थे।फिलहाल पुलिस इस अंतर्राष्ट्रीय साइबर फ्रॉड गिरोह से आवश्यक पूछताछ कर रही है।

पृष्ठ एक का शेष...

निशिकांत दुबे के बयान पर भड़के ओवैसी बोले .....

विपक्षी पार्टियों ने अपनी आपत्ति जताई है। कांग्रेस नेता बीवी श्रीनिवास ने दुबे पर निशाना साधते हुए कहा, निशिकांत दुबे जैसे उपद्रवी सांसदों में अपने आकाओं के आदेश के बिना सुप्रीम कोर्ट और मुख्य न्यायाधीश के खिलाफ मुंह खोलने की हिम्मत नहीं है। नड्डा, आप कब तक राम बोलकर छुरा घोंपेंगे? भाजपा के नेताओं पर तंज कसते हुए ओवैसी ने कहा, आप लोग(भाजपा) ट्यूबलाइट हैं। इस तरह से अदालत को धमका रहे हैं। क्या आपको पता भी है कि अनुच्छेद 142 क्या है? इसे बीआर अंबेडकर ने तैयार किया था। भाजपा धोखाधड़ी कर ही है और धार्मिक युद्ध की धमकी दे रही है। आपको बता दें कि अनुच्छेद 142 के प्रावधान के तहत सुप्रीम कोर्ट अपने समक्ष आए किसी भी मामले में पूर्ण न्याय देने का अधिकार होता है।

ये थे निशिकांत दुबे के बोल

भारतीय जनता पार्टी के सांसद निशिकांत दुबे ने सुप्रीम कोर्ट और मुख्य न्यायाधीश पर गृह युद्ध को भड़काने का आरोप लगाया था। सुप्रीम कोर्ट के अधिकार पर सवाल उठाते हुए दुबे न कहा था कि अगर सुप्रीम कोर्ट को ही कानून बनाना है तो संसद भवन को बंद कर देना चाहिए।उन्होंने कहा,सुप्रीम कोर्ट का एक ही उद्देश्य है कि तुम मुझे चेहरा दिखाओ.. मैं तुम्हें कानून दिखाऊंगा। सुप्रीम कोर्ट अपनी सीमाओं से आगे जा रहा है। अगर हर चीज सुप्रीम कोर्ट में ही तय होनी है तो संसद और राज्य विधानसभा को बंद कर देना चाहिए।

संक्षिप्त खबर

प्रखण्ड क्षेत्र के विभिन्न गांवों में चलाया गया विधिक जागरूकता कार्यक्रम

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

विन्दापाथर : जिला विधिक सेवा प्राधिकार के आदेशानुसार विधिक जागरूकता शिविर आयोजित किया गया। इस जागरूकता कार्यक्रम अभियान के तहत सिमलाडांगाल पंचायत मुरीडीह महेशपुर फतेहपुर पंचायत के खजुरिया कोलपाडा में पीएलवी साधन मंडल और मुकेश कुमार मंडल द्वारा विधिक जागरूकता शिविर आयोजित किया गया तथा ग्रामीणों को निःशुल्क विधिक सहायता प्राप्त करने का एवं डालसा के विभिन्न कार्यक्रम की जानकारी दिया गया तथा साथ ही ग्रामीणों को निःशुल्क टोल फ्री नंबर 15100 के बारे में तथा विधिक सहायता संबंधित जानकारी दी गई। राज्य में चल रही विभिन्न जनकल्याणकारी योजना के बारे में भी जानकारी दी गई। ग्रामीणों को नशा मुक्ति के बारे में भी बताया गया। हिट एंड रन के बारे में बताया गया। रोड एक्सीडेंट के बारे में भी जानकारी दी गई। कार्यक्रम में ग्रामीण उपस्थित रहे।

कोल वाहन की चपेट में आने से युवक की मौत, 10 घंटे सड़क जाम

चतरा, (एजेंसी)। सिमरिया थाना क्षेत्र के बाबा पेट्रोल पंप के समीप खपिया पगार गांव निवासी 28 वर्षीय सुनिल राम की मौत कोल वाहन की चपेट में आने से हो गई। मृतक के परिजनों ने बताया की घर में सुनिल के चचेरे भाई की शादी थी। वैवाहिक कार्यक्रम चल रहा था। वह डीजल लेने के लिए घर से निकला और बाबा पेट्रोल पंप के समीप तेज रफ्तार कोल वाहन की चपेट में आ गया। इससे उसकी मौत मौके पर ही हो गई। सिमरिया पुलिस न रविवार को शव को कब्जे में कर पोस्टमार्टम के लिए चतरा सदर अस्पताल भेज दिया। घटना के बाद परिजन और ग्रामीण आक्रोशित हो गए और कोल वाहन परिचालन को बंद करवाकर उचित कार्यवाही की मांग कर रहे थे। मौके पर पुलिस अनुमंडल पदाधिकारी, प्रखंड विकास पदाधिकारी व थाना प्रभारी मामले को गम्भीरता को देखते हुए जाम स्थल पर पहुंच कर ग्रामीणों को समझने बुझाने का प्रयास किया। परंतु ग्रामीण मुआवजे की मांग को लेकर अडे रहे। अधिकारी थौर जनप्रतिनिधियों ने कोल ट्रांसपोर्टर से संपर्क कर मुआवजा दिलवाने का प्रयास किया। दस घंटे बाद मुआवजे की आश्वासन के बाद जाम हटा। मौके पर झामुमो नेता मनोज चंद्रा, जिप सदस्य देवनंदन साहू, पंचायत समिति सदस्य परमेशवर यादव सहित अन्य लोग मौजूद थे।

पद्मभूषण कड़िया मुंडा 90 वर्ष के हुए, लोगों ने दी बधाई

खूंटी, (**एजेंसी**)। खूंटी संसदीय सीट से आठ बार लोकसभा चुनाव जीत कर कीर्तिमान स्थापित करने वाले लोकसभा के पूर्व उपाध्यक्ष पद्मभूषण कड़िया मुंडा रविवार को 89 वर्ष की आयु पूरी कर 90 वें वर्ष में प्रवेश कर गए। जन्मदिन पर कड़िया मुंडा को बधाई देने के लिए रविवार को भाजपा के कई कार्यकर्ता उनके अनिगड़ा गांव स्थित पैतृक आवास में जाकर उन्हें जन्मदिन की बधाई देते हुए उनके दीघार्यु होने और पूरी तरह से स्वस्थ रहने की कामना की। बधाई देने वालों में मनोज कुमार, ज्योतिष भगत, कृष्णानंद तिवारी, अनूप साहू, जयप्रकाश भाला, गोवर्धन मानकी, मुनि महादेव मुंडा सहित अन्य कार्यकर्ता शामिल थे।

तपकारा पेरिश में मनाया गया पुनरुत्थान पर्व ईस्टर

खूंटी, (एजेंसी)। पुनरुत्थान पर्व ईस्टर के अवसर पर रविवार को संत अंद्रियास उपासना तपकारा पेरिश में यीशु मसीह के पुनरुत्थान ईस्टर पर विशेष आराधना अनुष्ठान संपन्न किया गया। पुनरुत्थान पर्व की विशेष आराधना तपकारा पेरिश केंद्र के पेरिश पुरोहित रेव्ह मनु महेश हांसदा की अगुवाई में प्रारंभ किया गया।

पुनरुत्थान पर्व के अवसर पर अतिथि सह मुख्य उपदेशक डोरंडा रांची के पेरिश रेव्ह रवि हेमंत हंस ने वचनों को बताते हुए कहा कि यीशु ने उससे कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह यदि मर भी जाए, तब भी जीएगा। जब तुम मसीह के साथ-साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं, स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगे। उन्होंने कहा कि यीशु का पुनरुत्थान हमें यह विश्वास दिलाता है कि सबसे अंधकारमय जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है, वह अनंतकाल तक नहीं मरेगा।

रेव्ह रवि हेमंत हंस ने आत्मिक उन्नति के लिए अमूल्य जीवित वचनों पर प्रकाश डाला। पवित्र बलिदान आराधना अनुष्ठान में आस्थापूर्ण तपकारा पेरिश अंतर्गत सभी नौ प्रचारकों ने योगदान दिया। तोरपा के विधायक सुदीप गुड़िया ने मसीही विश्वासियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि ईश्वर इस पुनरुत्थान पर्व पर सभी माता-पिता, भाई-बहन, छोटे बच्चों और समस्त वरिष्ठ जनों को सुख-समृद्धि एवं आत्मिक जीवन उन्नति दें।

गुमला में उपायुक्त के नेतृत्व में तेजी से हो रहा है विकास कार्य

गुमला , (एजेंसी)। गुमला में उपायुक्त के नेतृत्व में तेजी से विकास के कार्य हो रहे है। यही वजह है कि जिले को लगातार दूसरी बार प्रधानमंत्री अवॉर्ड दिया जा रहा है। वर्ष 2023 में यह सम्मान पूर्व उपायुक्त सुशांत गौरव को मिला था। इस बार उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी को जिले के समग्र विकास के लिए यह प्रतिष्ठित अवॉर्ड दिया जा रहा है। गुमला एक आदिवासी बहुल जिला है, जहां 162 पीवीटीजी ग्रामों में (विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह)

17000 से अधिक पीवीटीजी समुदाय (मुख्यतः आदिम जनजाति के असुर, कोरबा, ब्रिजिया, बिरहोर समुदाय)की बड़ी आबादी निवास करती है। ऐसे में, इनकी बेहतरी के लिए प्रशासन की ओर से किया गया प्रयास काफी सफल रहा है। उपायुक्त कर्ण सत्यार्थी ने न केवल इन गांवों तक

सरकारी योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित की, बल्कि खुद गांवों का दौरा कर यह सुनिश्चित किया कि कोई भी लाभ से वंचित न रह जाए। उनकी पहल पर सभी पीवीटीजी परिवारों को प्रधानमंत्री जनमन योजना के तहत 11 महत्वपूर्ण योजनाओं का लाभ मिला। हर ग्रामीण का आयुष्मान कार्ड बनाया गया और व्यापक स्तर पर सिकल सेल एनीमिया जांच करायी गई। प्रशासन ने इन समुदायों को केवल रपिछड़ा वर्गर मानकर नहीं देखा, बल्कि इन्हें अति संवेदनशील समुदाय के रूप में पहचान दी और उनकी जरूरतों को प्राथमिकता दी।

आश्रम भखरा में पहलवान बाबा की प्रतिमा का अनावरण

कोडरमा, (एजेंसी)। जिले के सतगावां प्रखंड के पहलवान आश्रम भखरा में रविवार को प्रतिमा अनावरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में पूर्व मंत्री सह कोडरमा विधायक डॉ नीरा यादव मुख्य रूप से उपस्थित थीं। आश्रम पहुंच डॉ नीरा यादव ने पहलवान आश्रम भखरा के भूमि दाता के अभिभावक स्व बैजनाथ पासवान उर्फ पहलवान बाबा की प्रतिमा का अनावरण किया। उनकी प्रतिमा पर उपस्थित लोगों ने माल्यार्पण किया। इसके बाद राष्ट्रीय झारखंड सेवा संस्थान सतगावां की ओर से आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि के रूप में कोडरमा विधायक डॉ नीरा यादव, विशिष्ट अतिथि के रूप में जिला परिषद सदस्य नीतू कुमारी सहित अन्य उपस्थित थे।

विधायक डॉ नीरा यादव ने संस्था को भूमि दान करने वाले सात भाइयों को बधाई देते हुए कहा कि इस भूमि दान करने वाले दाता के चलते एक संस्था खड़ा हुई है जो गरीब परिवारों को पढ़ा लिखा कर नौकरी तक पहुंचा रही है, उन्होंने कहा है कि संस्था विक्षिप्त लोगों जो घर से भटक चुके हैं ऐसे लोगों को यह संस्था ने पढ़ा लिखाकर आगे बढ़ाया है। विधायक ने संस्था को भूमि दान देने वाले के परिजनों को शॉल देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय झारखंड सेवा संस्थान के सचिव मनोज दांगी ने किया। मौके पर मनोज कुमार निराला, राम अवतार चौधरी, टेक नारायण यादव रूक्मिणी देवी सहित अन्य उपस्थित थे।

गरीबों-शोषितों की निःस्वार्थ भाव से करें सेवा : कमले उरांव

खूंटी, (एजेंसी)। अड़की के बिरबांकी में रविवार को शाखा स्थापना दिवस सह सरना धर्म प्रार्थना सभा आयोजित की गई। धर्मगुरु धीरजु मुंडा, धर्मगुरु बुधराम सिंह मुंडा और सोमा मुंडा की अगुवाई में अनुयायियों के साथ सरना स्थल में भगवान सिंङबोंगा का पूजा-पाठ कर सुख, शांति और खुशहाली की कामना की गई। इस अवसर पर मुख्य अतिथि धर्मगुरु बहन कमले उरांव ने अनुयायियों को संबोधित करते हुए कहा कि सिंङबोंगा की स्तुति से आत्मा में भक्ति और श्रद्धा बढ़ती है। साथ ही समाज में भाईचारा की भावना पनपती है। इससे लोभ, लालच और अहंकार जैसी बुराईयां दूर होती हैं। इससे जीवन में सुख, शांति और खुशहाली आती है। उन्होंने कहा कि भगवान के सामने सब बराबर हैं। सबको समान कृपा मिलती है। हमें सदा धर्म के रास्ते पर चलना चाहिए और समाज में प्रेम और भाईचारा के साथ रहना चाहिए और गरीबों, शोषितों, पीडितों तथा दीन-दुखियों की निःस्वार्थ भाव से सेवा करनी चाहिए।मौके पर धर्मगुरु बगरय मुंडा ने कहा कि धरती आबा बिरसा मुंडा ने समृद्ध समाज की कल्पना की थी। उन्होंने हमेशा वंचितों की लड़ाई लड़ी। कार्यक्रम में धर्मगुरु सोमा कंडीर, लुकीन मुंडा, मनीराम पहान, मथुरा कंडीर, बिरसा कंडीर, सुभासिनी पुर्ती, मंगा ओड़ेया सहित अन्य उपस्थित थे।

बंगाल हिंसा के खिलाफ विहिप, बजरंग दल और मातृ शक्ति का आक्रोश प्रदर्शन

गुमला, (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में वक्फ संशोधन कानून के विरोध की आड़ में एक समुदाय विशेष की ओर से हिंदुओं पर बर्बर हमले, हिंदुओं के पलायन

और वहां की राज्य सरकार की ओर से कोई कार्रवाई नहीं किये जाने के खिलाफ विहिप, बजरंग दल एवं मातृ शक्ति ने रविवार को आक्रोश प्रदर्शन किया। इस मौके पर टावर चौक पर बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का पुतला भी फूंका गया। इसके पूर्व श्री हनुमान मंदिर बड़ाइक मुहल्ला से एक आक्रोश रैली निकाली गई। इसमें सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता बंगाल सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए शहर के विभिन्न मार्गों से गुजरे। इसके बाद रैली टावर चौक पहुंची जहां लोगों ने बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का पुतला दहन करते हुए आक्रोश का प्रदर्शन किया।

इस मौके पर बजरंग दल के जिला संयोजक संतोष यादव ने कहा कि बंगाल में वक्फ संशोधन कानून के विरोध की आड़ में हिंदुओं पर अत्याचार किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जिस तरह जिहादियों ने हिंदुओं के घर को निशाना बनाकर सुनियोजित तरीके से हमला और पत्थरबाजी की । महिलाओं से दुष्कर्म किया। लेकिन बंगा सरकार खामोश होकर तमाशा देख रही है। दंगाई खुलेआम हमले कर रहे है। हिंदुओ का जीना दुभर हो गया है। मगर सरकार या प्रशासन के स्तर पर कोई कार्रवाई नहीं हो रही है। विवश होकर कई स्थानों के हिंदू पलायन करने पर मजबूर हैं।

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी बंगाल को बांग्लादेश और पाकिस्तान बनाने में तुली हुई है। मौके पर विभाग संयोजक मुकेश सिंह ने कहा कि जेहादी भीड़ बोलती है कि इस्लाम धर्म अपना लो तो तुमलोगों का घर और परिवार बच जाएगा। छह महीने के बच्चे को उनकी मां के गोद से छीन कर आग में जेहादी भीड़ ने फेंक दिया। ऐसी बहुत सी घटनाएं हुई है जो भयानक और दर्दनाक है।

ये सारी घटना सिर्फ हिंदुओं के साथ ही क्यों हो रही है। उन्होंने कहा कि यदि यही स्थिति बंगाल में बनी रही तो विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल हिंदुओं का कुंभ बुलाएगा। प्रचार प्रसार प्रमुख अमित कुमार ने कहा ये सारी घटनाएं दशार्ती हैं कि बंगाल की सरकार अपने राज्य में पूरी तरह फेल है, पुलिस और प्रशासनिक तंत्र पूरी तरह से विफल है। इसलिए विश्व हिंदू परिषद, बजरंग दल केंद्र सरकार और राष्ट्रपति से आग्रह करता है कि बंगाल में ममता सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन लागू हो।

मौके पर केशव चंद्र साय, अजय सिंह राणा, पूनम सिंह, शैल सिंह, अमन राणा,भिकेश्वर नागमणि, बृज गोप, अरविंद लोहारा,लक्ष्मी बड़ाइक, दीपक सोनी,बबलू वर्मा, अमन कुमार, नितेश सिंह, रोहित राम, आशीष कुमार सिंह, विकास कुमार सिंह, अरुण पांडा, अशोक कुमार साहू सहित अन्य उपस्थित थे।

मरकच्चो में गड्ढा खोदो अभियान शुरू

कोडरमा (एजेंसी)। मरकच्चो प्रखंड के तेलोडीह पंचायत में बिरसा हरित ग्राम योजना के तहत रविवार को गड्ढा खोदो अभियान का शुभारंभ बीडीओ हुलास महतो की उपस्थिति में किया गया। इस मौके पर बीडीओ हुलास महतो ने कहा कि सरकार की यह महत्वाकांक्षी योजना है। इस योजना को धरातल पर उतारने की जिम्मेदारी हम सबों की है। उन्होंने यह भी कहा कि मरकच्चो प्रखंड में इस योजना के तहत 104 लाभुकों का चयन किया जा चुका है। इस योजना के तहत ग्रामीण स्तर पर आम बागवानी लगाकर जीवकोपार्जन का जरिया बनाया जा रहा है। मौके पर प्रखंड विकास पदाधिकारी हुलास महतो, सहायक अभियंता चितरंजन कुमार, कनीय अभियंता मंतोष कुमार, बी पी टी संजय राम, भागीरथ ठाकुर, लाभुक सीताराम सहित कई लाभुक उपस्थित थे।

पेयजल योजना का कार्य पूर्ण, लेकिन लाभुकों को करना होगा थोड़ा इंतजार

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

विन्दापाथर : जिले के फतेहपुर प्रखंड अंतर्गत धसनिया पंचायत में पंचायत सचिवालय परिसर में 23 करोड़ की लागत से बनने वाली हर घर नल पेयजल एवं स्वच्छता विभाग की योजना बन कर तैयार हो चुका है। लेकिन जनता को थोड़ा इंतजार करना होगा।यह बातें डब्ल्यूटीपी कंपनी के इंजीनियर अमरेश कुमार ने कही। उन्होंने कहा कि इस पम्प हाउस से धसनिया पंचायत एवं पालाजोरी पंचायत दोनों के सभी ग्रामीण इस योजना से लाभान्वित होंगे।उन्होंने कहा कि पम्प हाउस और जल टंकी सहित इस परिसर में कार्य प्रायः पूर्ण हो गया है। लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों में कहीं कहीं घर घर नल नहीं लग पाया है। उन्होंने कहा कि काम तेजी से चल रहा है। उन्होंने कहा कि ग्रामीणों को थोड़ा इंतजार करना होगा। क्यों कि ग्रामीण क्षेत्रों में कई घरों में कनेक्सन पाइप लंबित है।उसे जोडा जा रहा है।कई जगहों पर पानी सप्लाई पाइप भी थोड़ा बहुत छुटा हुआ है।उस पर कार्य जारी है। उन्होंने कहा कि इसलिए लाभान्वितों को थोड़ा इंतजार करना पड़ेगा।ज्ञात रहे यह कार्य 5 मई 2023 से प्रारंभ होकर 2025 तक निर्माण कार्य का दो साल हो चला है।

जबकि यह कार्य फरवरी 2025 में लोकार्पण कर जनता को लाभान्वित करना था जो अभी भी लंबित है। इस अवसर पर पम्प हाउस में काम कर रहे दैनिक मजदूरों ने बताया कि उन्हें समय पर मजदूरी मिल जाता है। कार्यरत मजदूर प्रहलाद कुमार महतो कंपनी डब्ल्यूटीपी निगरानी सुपरवाइजर, दिनेश कुमार यादव इलेक्ट्रॉनिक मिस्त्री, ब्रजेश कुमार, पम्प ऑपरेटर, शत्रुघ्न यादव रंग पेंटर, रोहित यादव जेसीबी ऑपरेटर सहित राजमिस्त्री उपस्थित थे।

डीएवी सेक्टर 4 में मनायी गयी महात्मा हंसराज जी की 161वीं जयंती

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

बोकारो : महान शिक्षाविद् आर्य समाज के जुझारू नेता महात्मा हंसराज जी की 161वीं जयंती शनिवार को डीएवी पब्लिक स्कूल, सेक्टर-4 में पारंपरिक रूप से मनायी गयी। इस अवसर पर एलएमसी के उपाध्यक्ष बी एस जायसवाल, शशिभूषण जी एवं ब्रह्मदेव जी की उपस्थिति गरिमामय रही। विशाल प्रार्थना सभा के मध्य स्थित 11 हवनकुंडो में विद्यालय के प्राचार्य के साथ-साथ कक्षा पाँचवीं से 10वीं तक के लगभग 1000 बच्चों ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच आहुतियां दीं।

इस विशेष अवसर पर आर्य समाज के प्रति पूर्ण समर्पित महात्मा हंसराज जी के जीवन और योगदान को याद किया गया। पंजाबी हिंदू खत्री परिवार में इनका जन्म 19 अप्रैल 1864 को पंजाब के होशियारपुर जिले के बजवाडा.गाँव में हुआ था। कठिनाइयों का सामना करने के बावजूद भी उन्होंने अनेक डीएवी संस्थाओं की स्थापना की।

विद्यालय के प्राचार्य एस एस कर ने कहा कि डीएवी स्कूल भारतीय चिंतन और भारतीय संस्कृति के साथ आधुनिक प्रौद्योगिकी के संगम हैं। बच्चों के संबोधन में आगे उन्होंने कहा कि युवावस्था में उन्हें स्वामी दयानंद जी के व्याख्यानों को सुनने का अवसर मिला। उनके व्यक्तित्व पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

जिससे उनकी जीवन-दिशा ही बदल गई।परिणाम स्वरूप प्रथम डीएवी संस्था के वे अवैतनिक हेडमास्टर बने। महात्मा जी ने अपने गुरु स्वामी दयानंद के आदर्शों को प्रतिस्थापित करने का जरिया डीएवी को बनाया।

गीता का सार ऐसे ही महात्माओं के लिए उपयुक्त सिद्ध होता है कि बस कर्म तुम्हारा कल होगा, और कर्म में अगर सच्चाई है तोकर्म कहाँ निष्फल होगा। और महात्मा हंसराज का कर्म क्षेत्र बना डीएवी विद्यालय। छात्र - छात्राओं ने भी पोस्टर स्लोगन के द्वारा उनके कर्मक्षेत्र पर प्रकाश डाला। भारतीय संस्कृति को बचाए रखने और विकसित राष्ट्र की कल्पना को साकार करने के उनके संकल्प को याद करते हुए कुछ इस प्रकार अपने मनोभावों को व्यक्त किया - अविरल निर्मल सलिल सदय, ज्ञान प्रदायिनी ज्योतिर्मय हो चहुँ दिशि उद्घोष अभय डीएवी जय-जय। आर्य समाज के उत्कृष्ट आदर्शों का उद्घोष पूरे विश्व में हो तथा ज्ञान का दीप अनवरत प्रज्वलित होता रहे यही महात्मा हंसराज जी के प्रति सच्ची श्रद्धा होगी।

संपादकीय

परदेस से मोहभंग

यह खबर चौंकाने वाली है कि बीते साल विदेश जाने वाले छात्रों की संख्या में 25 फीसदी की कमी आई है। जबकि अमेरिका जाने वाले छात्रों की संख्या में 36 और कनाडा जाने वाले छात्रों की संख्या में 34 फीसदी की कमी आई है। कमोबेश यही स्थिति ब्रिटेन की भी है। ये आंकड़े वर्ष 2024 के हैं। निश्चित तौर पर जब ट्रंप काल में उखाड़-पछाड़ के दौर के आंकड़े सामने आएंगे, तो वे ज्यादा चौंकाने वाले होंगे। एक समय था कि छात्रों में परदेस जाकर पढ़ाई करने का जुनून उफान पर था। हर साल मां-बाप खून-पसीने की कमाई से और अपना पेट काटकर बच्चों को पढ़ने के लिये विदेश भेज रहे थे। कहीं-कहीं तो खेत बेचकर और घर गिरवी रखकर बच्चों को विदेश पढ़ाने के लिए भेजने के मामले भी प्रकाश में आए। दरअसल, देश में बैंकों से एजुकेशन लोन मिलने की सुविधा ने भी छात्रों की विदेश यात्रा को सुगम बनाया। हर साल लाखों छात्र सुनहरे सपने लिये विदेश गमन कर रहे थे। ये जुनून पंजाब में विशेष रूप से देखा गया, जो कनाडा-अमेरिका आदि देशों में संपूर्ण भारत से जाने वाले छात्रों का साठ फीसदी था। जरूरी नहीं था कि ये सारे छात्र मेधावी थे और सब दुनिया के शीर्ष विश्वविद्यालयों में दाखिला पा रहे थे। इनमें कई विश्वविद्यालय ऐसे भी थे जो सिर्फ विदेशी छात्रों से कमाई करने के मकसद से चलाए जा रहे थे। वहीं कुछ विश्वविद्यालय ऐसे भी थे जो अवैध रूप से लोगों को विदेश भेजने वाले एजेंटों की कमाई का जरिया बने हुए थे। युवाओं को छात्र के रूप में इन देशों में भेजकर मोटी रकम वसूली जा रही थी। दरअसल, धीरे-धीरे छात्रों और उनके अभिभावकों को हकीकत का अहसास होता चला गया। उन्होंने महसूस किया कि वे मोटा पैसा खर्च करके जैसे-तैसे डिग्री तो पा सकते हैं, लेकिन ये नौकरी व ग्रीन कार्ड की गारंटी नहीं है। हां, कुछ छात्र किसी तरह छोटे-मोटे काम-धंधे करके अपनी पढ़ाई का खर्चा व घर का कर्जा उतारने का जुगाड़ जरूर कर लेते थे। दरअसल, धीरे-धीरे अमेरिका, ब्रिटेन व कनाडा सरकारों के दुराग्रहों व उनकी प्राथमिकताओं ने छात्रों को खुरदुरी जमीन के यथार्थ से रूबरू करा दिया।

छात्रों को एजेंटों ने जो सब्जबाग दिखाए थे, उनकी हकीकत सामने आने लगी। इसके अलावा कोरोना काल के बाद बिखरती अर्थव्यवस्थाएं, नौकरी के आकर्षक प्रस्तावों में कमी, वीजा मिलने में हो रही दिक्कतें, इन देशों के गोरी चमड़ी वाले लोगों के भारतीयों पर बढ़े हमलों ने छात्रों में मोहभंग की स्थिति उत्पन्न कर दी। बीते साल अमेरिका में कई भारतीय छात्रों पर नस्लीय हमले हुए। कई छात्रों की हत्या हुई और अनेक घायल हुए। कनाडा व ब्रिटेन में भारत विरोधी अभियानों तथा कनाडा में जस्टिन ट्रूडो के भारत विरोधी रवैये ने भी छात्रों का मोहभंग किया। वैसे देखा जाए तो विदेशी मुद्रा अर्जित करने के बजाय हम हर साल अरबों रुपये इन देशों को भेज रहे थे। दूसरी ओर छात्रों के विदेश जाने के मोहभंग होने का सार्थक पहलू यह भी है कि अब ये प्रतिभाएं देश में रहकर राष्ट्र के विकास में योगदान दे सकती हैं। कुदरत का नियम है कि अपनी उर्वरा भूमि में ही पौधे अनुकूल वातावरण के चलते खिलते-निखरते हैं। ये हमारे नीति-नियंताओं की विफलता है कि आजादी के सात दशक बाद भी हम देश को अंतर्राष्ट्रीय मानकों वाले विश्वविद्यालय नहीं दे पाये। सामान्य शिक्षा में कौशल विकास के गुण को विकसित नहीं कर पाए। छात्रों में सरकारी नौकरियां पाने की लालसा को रचनात्मक विकल्प नहीं दे पाये। अमेरिका की सिलिकॉन वैली से लेकर आईटी से जुड़ी तमाम बड़ी कंपनियों को भारतीय प्रतिभाएं चला रही हैं।

(चिंतन-मनन)

सबसे अच्छा सखा है ज्ञान

आत्मा ही आनन्द का स्वरूप है। किसी भी सुखद अनुभूति में तुम आंखे मूंद लेते हो। जैसे जब किसी फूल को सूंघते हो, कोई स्वादिष्ट खाना चखते हो या किसी वस्तु को स्पर्श करते हो। दुख का केवल यही अर्थ है कि तुम अपरिवर्तनशील आत्मा पर केन्द्रित होने के बदले विषयवस्तु में फंसे हो, जो परिवर्तनशील है। सभी इन्द्रियां केवल डाइविंग बोर्ड की भांति हैं जो तुम्हें वापस आत्मा तक पहुंचाती हैं। स-खा का अर्थ है वह ही इन्द्रिय है। सखा वह है जो तुम्हारी इन्द्रिय बन गया है, जो तुम्हारी इन्द्रिय ही है। यदि तुम मेरी इन्द्रिय हो, इसका मतलब तुम्हारे द्वारा मुझे ज्ञान मिलता है, तुम मेरी छठी इन्द्रिय हो। जैसे मैं अपने मन पर विश्वास करता हूं, वैसे ही मैं तुम पर विश्वास करता हूं। एक मित्र केवल इन्द्रिय-विषय हो सकता है, परन्तु सखा स्वयं इन्द्रिय बन जाता है।

सखा वह साथ है जो सुख और दुःख, दोनों अनुभवों में साथ रहता है। सखा वह है जो तुम्हें आत्म स्थित करता है, यदि तुम किसी विषय वस्तु में फंसे हो। जो ज्ञान तुम्हें वापस आत्मा की ओर लाता है, वही सखा है। ज्ञान तुम्हारा साथी है और गुरु केवल ज्ञान के प्रतिरूप हैं। सखा का अर्थ है, वह मेरी इन्द्रियां हैं। मैं संसार को उसी ज्ञान के द्वारा, उनके माध्यम से देखता हूं।

उपराष्ट्रपति के सवालों पर मंथन: क्या विधायिका और न्यायपालिका में टकराव की स्थिति लोकतंत्र के लिए सुखद है?

-विनोद पाठक-

क्या सुप्रीम कोर्ट को विधायिका के कार्य में हस्तक्षेप करना चाहिए और विधायिका को सुप्रीम कोर्ट के कार्यक्षेत्र में बाधा पहुंचानी चाहिए? यह प्रश्न इसलिए उठ रहा है, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट के हाल के एक फैसले को लेकर उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने तल्ख टिप्पणियां की हैं। दरअसल, पिछले दिनों तमिलनाडु सरकार की एक याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने राज्यपाल और राष्ट्रपति को, दोनों को तीन महीने के भीतर राज्य सरकार के बिल पास करने के आदेश दिए। सुप्रीम कोर्ट ने यहां तक कहा था कि तीन महीने के बाद यह बिल स्वतः पास मान लिए जाएंगे। उपराष्ट्रपति धनखड़ ने सुप्रीम कोर्ट के इसी आदेश को लेकर आपत्ति जताई है।

क्या विधायिका और न्यायपालिका में टकराव की स्थिति लोकतंत्र के लिए सुखद है? क्या संवैधानिक संस्थाओं को अपने लिए एक लक्ष्मण रेखा निर्धारित नहीं करनी चाहिए?

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने सुप्रीम कोर्ट को लेकर जो बातें कहीं, वह विचार योग्य हैं। उन्होंने कहा कि संविधान निमार्ता बहुत विवेकशील थे। वे राष्ट्र कल्याण में गहरी आस्था रखते थे। उन्होंने तीन साल से भी कम समय में 18 सत्रों तक चर्चा की। कोई टकराव नहीं हुआ। कोई गड़बड़ी नहीं हुई। कोई व्यवधान नहीं हुआ। संवाद हुआ, बहस हुए, चर्चा हुई और विचार विमर्श हुआ। उनके पास बेहद विवादास्पद मुद्दे थे, लेकिन उन्होंने नियम बनाया। न्यायाधीशों की नियुक्ति अनुच्छेद 124 के तहत की जाएगी। इसके लिए परामर्श बोर्ड का इस्तेमाल किया जाएगा।

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने कहा, उस समय अनुच्छेद 124 को लेकर डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने महत्वपूर्ण बात की थी। उन्होंने कहा था कि मुझे लगता है कि मुख्य न्यायाधीश को न्यायाधीशों की नियुक्ति पर व्यावहारिक रूप से वीटो देने का अधिकार, वास्तव में मुख्य न्यायाधीश को अधिकार हस्तांतरित करना है, जिसे हम राष्ट्रपति या तत्कालीन सरकार में निहित करने को तैयार नहीं हैं। इसलिए मुझे लगता है कि यह भी एक आपत्तिजनक प्रस्ताव है। धनखड़ ने कहा कि इसके बावजूद वर्ष 1993 में दूसरे न्यायाधीश के मामले में न्यायालय ने परामर्श की व्यवस्था सहमति के रूप में की। धनखड़ ने पूछा, क्या ऐसा किया जा सकता है?

उपराष्ट्रपति धनखड़ ने यह भी कहा कि संसद केवल कानून बना सकती है और कार्यपालिका एवं न्यायपालिका सहित अन्य संस्थाओं को जवाबदेह बना सकती है, लेकिन निर्णय लिखना, न्याय करना न्यायपालिका का ही विशेषाधिकार है, जैसे कानून बनाना संसद का काम है। उन्होंने प्रश्न किया- क्या हम नहीं पाते कि इस स्थिति को चुनौती दी जा रही है? कार्यकारी शासन न्यायिक आदेशों द्वारा हो रहा है। जब सरकार लोगों द्वारा चुनी जाती है तो सरकार संसद के प्रति जवाबदेह होती है। सरकार चुनाव में लोगों के प्रति जवाबदेह होती है।

उपराष्ट्रपति धनखड़ का यह कहना बिल्कुल उचित प्रतीत होता है कि संसद में आप सवाल पूछ सकते हैं, आलोचनात्मक सवाल पूछ सकते हैं, क्योंकि शासन कार्यपालिका द्वारा होता है, लेकिन अगर न्यायपालिका कार्यपालिका द्वारा शासन करती है तो हम सवाल कैसे पूछ सकते हैं? चुनाव में आप किसे जवाबदेह ठहराते हैं।

उपराष्ट्रपति धनखड़ का यह कहना सही है कि अब समय आ गया है कि जब हमारी तीनों संस्थाएं, विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका, अपना दायित्व उत्तम तरीके से निभाएं। यह राष्ट्रहित में सबसे बेहतर तरीका है। उनका यह कहना भी उचित है कि किसी अन्य के क्षेत्र में कोई भी घुसपैठ चुनौती बन जाती है, जो अच्छी बात नहीं है। यह संतुलन बिगाड़ सकता है।

उपराष्ट्रपति धनखड़ यहीं नहीं रुके। उन्होंने अनुच्छेद 142 का जिक्र करते हुए यहां तक कहा कि लोकतांत्रिक ताकतों के खिलाफ यह परमाणु मिसाइल जैसा बन गया है। यह न्यायपालिका के लिए 24 घंटे उपलब्ध है। उपराष्ट्रपति ने यह भी याद दिलाया कि न्यायाधीशों की नियुक्ति सिर्फ और सिर्फ राष्ट्रपति द्वारा की जाती है और उनके विरुद्ध कार्रवाई का अधिकार करने का एकमात्र अधिकार संसद को है। इसलिए अब समय आ गया है कि हम प्रतिक्रिया मोड में न रहे। धनखड़ का इस बात को लेकर भी चिंता जताना जायज प्रतीत होता है कि अदालत राष्ट्रपति को आदेश कैसे दे सकती है? जज सुपर संसद की तरह काम कैसे कर सकते हैं?

इससे पहले भी कई बार हुआ विधायिका और न्यायपालिका में टकराव

वैसे, विधायिका और न्यायपालिका में टकराव कोई नई बात नहीं है। वर्ष 1973 में केशवानंद भारती केस में ऐसा हुआ था। तब सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि संसद संविधान संशोधित तो कर सकती है, लेकिन संविधान के बुनियादी ढांचे को छू नहीं सकती। उस समय तक संसद खुद को सर्वोच्च मानती थी, लेकिन कोर्ट ने उसकी शक्ति पर सीमा लगा दी थी।

दो वर्ष बाद 1975 में भी इंदिरा गांधी बनाम राज नारायण केस में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने इंदिरा गांधी का चुनाव रद्द किया था, लेकिन संसद ने आनन-फानन में संविधान में 39वां संशोधन कर इस फैसले को निष्प्रभावी करने का प्रयास किया।

इसके बाद आपातकाल के दौरान वर्ष 1975-77 के बीच संसद ने कई संविधान संशोधन किए, जिससे कोर्ट की शक्तियां सीमित की गईं।

वर्ष 2015 में मोदी सरकार और सुप्रीम कोर्ट के बीच टकराव की स्थिति बनी। सरकार ने राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग बनाया, ताकि जजों की नियुक्ति में पारदर्शिता हो, लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने इसे असंवैधानिक करार दे दिया और कॉलेजियम सिस्टम को बहाल कर दिया।

कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका पर सवाल

जैसा, उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ कर रहे हैं, जज सुपर संसद बन रहे हैं तो वो बात पिछले कुछ फैसलों में दिखती है। संसद द्वारा पारित कृषि कानूनों को सुप्रीम कोर्ट ने रोक दिया था। संसद द्वारा पारित नागरिकता संशोधन कानून पर प्रदर्शनकारियों से वार्ता के लिए कमेटी बनाई थी। वर्तमान में वक्फ संशोधन कानून को लेकर सुप्रीम कोर्ट सुनवाई कर रहा है, जबकि यह कानून भी संसद के दोनों सदनों द्वारा पारित है। ऐसे समय में उपराष्ट्रपति का न्यायपालिका पर सवाल उठाना एक महत्वपूर्ण बात है। क्या कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका को अपनी सीमाएं निर्धारित नहीं करनी चाहिए? क्या इन्हें लक्ष्मण रेखा पार करनी चाहिए?

शायद लोकतंत्र के लिए यही सुखद बात होगी। यदि इन संस्थाओं के बीच टकराव की स्थिति बनती है तो अपना लोकतंत्र कमजोर होता है। उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता रहे हैं। उन्हें संविधान विशेषज्ञ माना जाता है। ऐसे में उन्होंने जो सवाल उठाए हैं, उन पर गहनता से विचार-विमर्श होना चाहिए।

अब निशाने पर ममता- पश्चिम बंगाल में कभी भी राष्ट्रपति शासन संभव....?

-ओमप्रकाश मेहता-

जब किसी प्रदेश का शासन प्रमुख अर्थात राज्यपाल ट्रेन से सफर कर राज्य के किसी घटना स्थल पर पहुंचे और एक पुलिस अधिकारी की तरह घटनास्थल पर पीड़ितों के बयान ले और स्वयं उसी जगह यह घोषणा भी करें कि वे राष्ट्रपति जी को शीघ्र ही इसकी रिपोर्ट भेजेंगे, इसका सीधा-सीधा तात्पर्य तो यही हुआ कि वह गैर भाजपा शासित राज्य है और वहां अगले साल राष्ट्रपति शासन के दौरान विधानसभा चुनाव कराने है, जी हां.... यह कहानी पश्चिम बंगाल की ही है, जहां मुर्शिदाबाद में हुए हादसे की जांच करने स्वयं राज्यपाल महोदय ट्रेन से पहुंचे और अब यह प्रबल संभावना व्यक्त की जा रही है कि संभवतः अगले कुछ ही दिनों में राज्यपाल महोदय की रिपोर्ट पर केन्द्र सरकार पश्चिम बंगाल की सरकार बर्खास्त करवाकर राष्ट्रपति शासन लगा सकती हैं।

यहां यह स्मरणीय है कि पश्चिम बंगाल की ममता सरकार एक लम्बे समय से केन्द्र की मोदी सरकार की आंख की किरकिरी बनी हुई है, और मोदी जी व उनकी भारतीय जनता पार्टी के लिए परेशानी का कारण बनी हुई है, इसलिए मोदी सरकार लम्बे समय से उन वैधानिक व संवैधानिक कारणों की तलाश में रही है, जिनके आधार पर पश्चिम बंगाल में राष्ट्रपति शासन लगाया जा सके, अब इस प्रदेश के मुर्शिदाबार में घटी घटना ने ममता विरोधियों के चेहरे पर मुस्कुराहट ला दी है तथा राज्यपाल के तुरंत-फुरत दौरे और उनकी रिपोर्ट के बाद अब पश्चिम बंगाल में कभी भी ममता सरकार को बर्खास्त कर राष्ट्रपति शासन की घोषणा की जा सकती है, जबकि इस प्रदेश में अगले वर्ष विधानसभा के चुनाव होना है और भाजपा इस प्रदेश पर भी अपना वर्चस्व कायम करना चाहती है।

अब देश के विभिन्न हिस्सों में जो कुछ भी घटित हो रहा है, वह सबसे अहम चिंता का विषय है, 2026 में होने वाले चुनावों से पहले तमिलनाडु में उत्तर-दक्षिण की दरारें गहरा रही है और मुर्शिदाबाद के बाद पश्चिम बंगाल में साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण की संभावना बढ़ रही है, ये दोनों ही परिदृष्य देश की भावी राजनीति के लिए चिंताजनक बने हुए है।

अब एक ओर जहां देश राजनीतिक दृष्टि से खतरनाक मोड़ पर खड़ा है, वहीं उप-राष्ट्रपति श्री जगदीप धनखड़ जी ने कई नए संवैधानिक सवाल खड़े कर दिए है, वह भी न्यायपालिका और विधायिका के अधिकारों को लेकर। उप-राष्ट्रपति जी का कहना है कि सर्वोच्च न्यायालय राष्ट्रपति को कोई आदेश-निर्देश नही दे सकता, उन्होंने न्याय पालिका को उसकी संवैधानिक सीमाऐं याद दिलाई है और कहा है कि सर्वोच्च न्यायालय सुपर संसद बनने का प्रयास न करें, कानून बनाना संसद का अधिकार है और जहां तक चुनावों का सवाल है सरकार जनता के प्रति जिम्मेदार है, सरकार व संसद के साथ संवैधानिक सर्वोच्च पदों की भी अपनी सीमाऐं है, जिनके अधीन रहकर सभी को काम करना चाहिए। जबकि अब धीरे-धीरे न्याय पालिका का व्यवहार ह्यसंसदह्ल जैसा होता जा रहा है।

देश में घट रही राजनीतिक घटनाओं के चलते उप-राष्ट्रपति जी पिछले दिनों काफी मुखर हो गए, उन्होंने शीर्ष अदालत द्वारा कथित तौर पर संविधान की मनमानी व्याख्या पर भी घोर आपत्ती जताई और कहा कि लोकतांत्रिक शक्तियों के खिलाफ परमाणु मिसाईल बन गया है, अनुच्छेद-142 उन्होंने कहा कि जजों की नियुक्ति का अधिकार न्याय पालिका द्वारा अपने पास रखना भी संविधान की मूल भावना के विपरीत है। जबकि न्याय पालिका की कार्य प्रणाली यह है कि जज के दरवाजे पर मिली सम्पत्ति की प्राथमिकी आज तक दर्ज रही हुई। इस प्रकार कुल मिलाकर अब प्रजातंत्र के स्तंभ स्पष्ट रूप से एक दूसरे के सामने आक्रामक मुद्रा में आकर खड़े हो गए है, अब ऐसी स्थिति में हमारे प्रजातंत्र का हश्र क्या होगा? यही सबसे बड़ा आज चिंता का कारण है।

तलवार ही सब कुछ है, उसके बिना न मनुष्य अपनी रक्षा कर सकता है और न निर्बल की। - गुरु गोविंद सिंह

निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषा को मूल। बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल। - भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

हार्वर्ड पर ट्रम्प के गुस्से के मायने

-कृष्णमोहन झा-

अमेरिका में एक अंतराल के बाद पुनः राष्ट्रपति की कुर्सी पर आसीन होने के बाद डोनाल्ड ट्रम्प अपने कई विवादित फैसलों, बयानों और कार्यशैली के माध्यम से पूरी दुनिया का ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर चुके हैं और यह सिलसिला थमने के अभी कोई आसार नजर नहीं आ रहे हैं। वे अमेरिका के अंदर और अमेरिका के बाहर की दुनिया को लगातार यह संदेश देने का प्रयास कर रहे हैं कि किसी भी क्षेत्र में उनकी मर्जी के आगे सबको नतमस्तक होना चाहिए चाहे वह अमेरिका का ही विश्वविख्यात सु प्रतिष्ठित उच्च शिक्षा संस्थान हार्वर्ड यूनिवर्सिटी ही क्यों न हो। इस बार उन्होंने अमेरिका की इस हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के उस प्रबन्धन को अपना कोप भाजन बनाया है जिसने अमेरिका सरकार से संघीय वित्त पोषण के अंतर्गत मिलने वाली आर्थिक मदद पर रोक की परवाह न करते हुए डोनाल्ड ट्रम्प की मांगें स्वीकार करने से दृढ़ता पूर्वक इंकार कर दिया है। ट्रम्प चाहते हैं कि हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में अमेरिकी मूल्यों के विरुद्ध आचरण करने वाले छात्रों की सूचना सरकार को दी जाए, यूनिवर्सिटी अपने विभागों का आडिट किसी बाहरी कंपनी के माध्यम से कराये, हार्वर्ड में विरोध प्रदर्शन में नियमों का उल्लंघन करने के विरुद्ध यूनिवर्सिटी सख्त कार्रवाई करे। इसके अलावा ट्रम्प ने यूनिवर्सिटी से अपनी विविधता समानता और समावेशन की नीति में बदलाव लाने की मांग की। यहूदी विरोधी प्रदर्शनों को सबसे ज्यादा बढ़ावा देने वाले विभागों की सूचना सरकार को देने की मांग भी इनमें शामिल है। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के प्रेसिडेंट एलन गार्बर ने अमेरिकी राष्ट्रपति की इन मांगों को संस्थान की स्वायत्तता और संप्रभुता में हस्तक्षेप मानते हुए जब उन्हें मानने से दृढ़ता पूर्वक इंकार कर दिया तो ट्रम्प को उनकी यह दृढ़ता यह इतनी नागवार गुजरी कि उन्होंने सरकार की ओर से यूनिवर्सिटी को दिए जाने वाले 2.2 बिलियन डॉलर का फंड रोकने के आदेश जारी कर दिए। इतना ही नहीं ट्रम्प ने यह यूनिवर्सिटी प्रबंधन को यह धमकी भी दी कि वह अगर अपनी नीतियों में बदलाव के लिए तैयार नहीं है तो उसे अपना कर-मुक्त दर्जा खोकर राजनीतिक इकाई के रूप में काम करना शुरू कर देना चाहिए।

हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के प्रेसिडेंट एलन गार्बर और अमेरिकी राष्ट्रपति के बीच कुछ दिन पूर्व शुरू हुआ यह विवाद अब और गहराता जा रहा है और निकट भविष्य में दोनों के बीच सुलह की संभावनाएं धूमिल होती जा रही हैं। हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के अधिकृत समाचार पत्र 'द क्रिमसन' ने कहा कि हार्वर्ड ने सबसे स्पष्ट और सबसे साहसिक संदेश भेजा है। हमारे मूल्य बिक्री के लिए नहीं हैं। अमेरिकी राष्ट्रपति के पद पर डोनाल्ड ट्रम्प के पहली बार निर्वाचित होने के पूर्व राष्ट्रपति पद पर लगातार दो कार्यकाल पूर्ण कर चुके बराक ओबामा ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के प्रेसिडेंट एलन गार्बर के रुख का समर्थन करते हुए कहा है कि हार्वर्ड ने उच्च शिक्षा संस्थानों के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। उसने अकादमिक स्वतंत्रता को दबाने के गैर कानूनी और अमानवीय प्रयास को खारिज कर दिया है। ओबामा ने उम्मीद जताई कि अन्य विश्वविद्यालय भी उसका अनुसरण करेंगे।

गौरतलब है कि 1636 में स्थापित हार्वर्ड यूनिवर्सिटी ने केवल अमेरिका ही नहीं बल्कि सारी दुनिया में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट संस्थान के रूप में अभूतपूर्व ख्याति अर्जित की है। इसकी दस शैक्षणिक इकाइयां हैं जिनसे पढ़ कर निकले प्रतिभाशाली छात्रों ने शिक्षा, साहित्य, राजनीति, विज्ञान सहित अनेक क्षेत्रों में इस संस्थान का नाम रोशन किया है। पूर्व राष्ट्रपति जान एफ कैनेडी, जार्ज डब्ल्यू बुश, बराक ओबामा, हेलन केलर, थियोडोर रूजवेल्ट, मार्क जुकरबर्ग, बिल गेट्स, रतन टाटा जैसी अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त हस्तियां ने हार्वर्ड यूनिवर्सिटी से पढ़ कर ही सफलता की आकाशीय ऊंचाईयों को स्पर्श किया। अतीत में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित होने वाली अनेक महान विभूतियों ने भी हार्वर्ड यूनिवर्सिटी में शिक्षा ग्रहण की थी यह फेहरिस्त भले ही बहुत लंबी हो लेकिन अमेरिका के वर्तमान राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प मानते हैं कि अमेरिका के इस विश्व विख्यात शिक्षा संस्थान ने अब दुनिया में टाप यूनिवर्सिटी की किसी भी सूची में शामिल होने का अधिकार खो दिया है क्योंकि यह संस्थान अब अपने रास्ते से भटक गया है। डोनाल्ड ट्रम्प ने विगत दिनों यहां तक कह दिया कि यह कट्टरपंथी, वामपंथी, मूर्ख और पक्षपाती लोगों को काम पर रख रहा है जो छात्रों और तथाकथित विपक्ष के नेताओं को केवल विफल होना सिखा सकता है। ट्रम्प ने यूनिवर्सिटी पर छात्रों को मूर्खता और नफरत सिखाने का आरोप लगाते हुए कहा कि अब इस संस्थान को और फंडिंग नहीं की जानी चाहिए। जाहिर सी बात है कि डोनाल्ड ट्रम्प के राष्ट्रपति रहते हार्वर्ड यूनिवर्सिटी की संघीय फंडिंग तभी जारी रह सकती है जबकि यूनिवर्सिटी प्रबंधन ट्रम्प से न केवल क्षमा याचना करने बल्कि उनकी उन शर्तों को मानने के लिए भी तैयार हो जाए जिन्हें यूनिवर्सिटी के प्रेसिडेंट एलन गार्बर गैरकानूनी और असंवैधानिक करार दे चुके हैं।

बताया जाता है कि अमेरिका के कई दूसरे विश्वविद्यालय भी अब हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के समर्थन में आ खड़े हुए हैं। जाहिर सी बात है कि डोनाल्ड ट्रम्प और हार्वर्ड यूनिवर्सिटी के बीच प्रारंभ हुए इस विवाद का कोई संतोषजनक समाधान तभी निकल सकता है जबकि डोनाल्ड ट्रम्प यूनिवर्सिटी की फंडिंग के बारे में और कठोर फैसले के बिंदु तक पहुंचने के पहले उसके गौरवशाली इतिहास पर भी विचार करें। ट्रम्प को यह तो मानना ही चाहिए कि उनके देश के इस उच्च शिक्षा संस्थान ने सारी दुनिया में अपनी धाक और साख में कभी कमी नहीं आने दी। क्या यह अमेरिका के लिए गौरव का विषय नहीं है।

(लेखक राजनैतिक विश्लेषक है)

बेहद अलग है जूलॉजी में कॅरियर

जूलॉजी में कॅरियर बनाने के लिए आपको सबसे पहले जीव विज्ञान, गणित और रसायन विज्ञान में ज्ञान प्राप्त करना होगा। 12वीं के बाद बैचलर की डिग्री हासिल करने के बाद आप इस क्षेत्र में कदम बढ़ा सकते हैं। ऐसे बहुत से लोग है, जो प्रकृति में मौजूद विभिन्न तरह के प्राणियों के बारे में गहराई से जानने की इच्छा रखते हैं। ऐसे लोग जूलॉजी में अपना करियर देख सकते हैं। जूलॉजी, जीव विज्ञान की एक शाखा है, जो मछली, सरीसृप, पक्षियों और स्तनधारियों सहित जानवरों का वैज्ञानिक अध्ययन है। यह संरचना, शरीर रचना, विशेषताओं, व्यवहार, वितरण, पोषण की विधि, शरीर विज्ञान, आनुवंशिकी और पशु प्रजातियों के विकास को शामिल करता है। जूलॉजी का अध्ययन करते समय आप समुद्री जीवों, चिड़ियाघर के जानवरों और जंगली और यहां तक कि घरेलू पालतू जानवरों सहित जानवरों के जीव विज्ञान और आनुवंशिकी का अध्ययन करते हैं। ऐसे में अगर आप भी इनके बारे में विस्तार से जानना चाहते हैं तो बतौर जूलॉजिस्ट बनकर ऐसा कर सकते हैं। तो चलिए जानते हैं इसके बारे में

क्या होता है काम

एक जूलॉजिस्ट का मुख्य काम जानवरों के व्यवहार, विशिष्ट विशेषताओं और उनमें विकासवादी प्रवृत्तियों का अध्ययन करते हैं। जूलॉजिस्ट को पशु जीवविज्ञानी या वैज्ञानिक भी कहा जाता है। यह एक बेहद विस्तृत क्षेत्र है और विभिन्न क्षेत्रों से संबंध रखने वाले जूलॉजिस्ट को अलग-अलग नामों से जाना जाता है। मसलन, पक्षियों के अध्ययन में विशेषज्ञता वाले जूलॉजिस्ट्स को ऑर्निथोलॉजिस्ट कहा जाता है, वहीं मछली का अध्ययन करने वाले को आइकथोलॉजिस्ट के रूप में जाना जाता है। ठीक इसी तरह, जो जूलॉजिस्ट्स जो उभयचरों और सरीसृपों का अध्ययन करते हैं उन्हें हेरपेटोलॉजिस्ट नाम से जाना जाता है और स्तनधारियों से जुड़े लोगों को मैमलॉजिस्ट कहा जाता है। उनके कार्यक्षेत्र में जानवरों, पक्षियों, स्तनधारियों, कीड़े, मछलियों और कीड़े के पहलुओं पर रिपोर्ट तैयार करना और उन्हें विभिन्न स्थानों पर प्रबंधित करना है। जूलॉजिस्ट डीएनए पहचान सहित उच्च तकनीक के सभी प्रकार के क्षेत्र में और प्रयोगशाला में काम करते हैं, और वे जानकारी के डेटाबैंक विकसित करते हैं।

योग्यता

कॅरियर एक्सपर्ट की मानें तो जूलॉजी में कॅरियर बनाने के लिए आपको सबसे पहले जीव विज्ञान, गणित और रसायन विज्ञान में ज्ञान प्राप्त करना होगा। 12वीं के बाद बैचलर की डिग्री हासिल करने के बाद आप इस क्षेत्र में कदम बढ़ा सकते हैं। हालांकि आप इस क्षेत्र में बैचलर की डिग्री के बाद मास्टर डिग्री या डॉक्टरेट की डिग्री भी हासिल कर सकते हैं।

व्यक्तिगत कौशल

एजुकेशन एक्सपर्ट कहते हैं कि जूलॉजी के क्षेत्र में कॅरियर देख रहे छात्रों का बेहद साहसी होना जरूरी है और उनके जीवन में डर के लिए कोई जगह नहीं होनी चाहिए। उन्हें समर्पित, स्वतंत्र और मेहनती भी होना चाहिए। उन्हें विभिन्न लोगों के साथ काम करना आना चाहिए। चूंकि वैज्ञानिक अक्सर शोध प्रस्ताव प्रस्तुत करते हैं, इसलिए उनके पास प्रभावी लिखित और मौखिक संचार क्षमताएं होनी चाहिए। वह अपना अधिकांश समय जानवरों के साथ बिताते हैं, इसलिए उन्हें जोखिम भरी परिस्थितियों में काम करने के लिए तैयार रहना चाहिए। उन्हें काटने, खरोंचने आदि जैसे हमलों के लिए हरदम मानसिक रूप से तैयार रहना चाहिए और चोटों को सहने की क्षमता होनी चाहिए। जूलॉजी के क्षेत्र में आपको कई घंटों तक काम करना पड़ सकता है, जो वास्तव में आपके लिए थकाऊ हो सकता है।

संभावनाएं

बतौर जूलॉजिस्ट आप चिड़ियाघर, वाइल्डलाइफ सर्विस, बोटेनिकल गार्डन, कंसर्वेशन आर्गेनाइजेशन, नेशनल पार्क, यूनिवर्सिटी व लेबोरेटरीज आदि में काम कर सकते हैं। जहां चिड़ियाघर व म्यूजियम में वे बतौर एजुकेटर या क्यूरेटर अपना कॅरियर आगे बढ़ा सकते हैं। वहीं आप स्कूल या कॉलेज में टीचर्स या रिचर्सर के तौर पर भी काम कर सकते हैं। वहीं अपना शोध पूरा कर लेने के बाद आप एक स्वतंत्र शोधकर्ता के रूप में भी आगे कार्य कर सकते हैं। इसी तरह एनिमल रिहैबिलिटेटर्स या बतौर कंसर्वेशनिस्ट भी आप अपना उज्जवल भविष्य देख सकते हैं।

आमदनी

इस क्षेत्र में आपका वेतन शिक्षा, अनुभव, कार्य की प्रकृति व स्पेशलाइजेशन के आधार पर निर्भर करता है। रिसर्च एंड डेवलपमेंट के क्षेत्र से जुड़े लोगों को अच्छी आमदनी हो सकती है। शुरूआती दौर में आप 10000 से 15000 रूपए महीना आसानी से कमा सकते हैं। वहीं कुछ समय के पश्चात आपकी आमदनी 25000 रूपए प्रतिमाह या इससे अधिक भी हो सकती है। अगर कुछ वर्षों के अनुभव के पश्चात आप विदेश में काम करते हैं तो आप यकीनन लाखों में कमा सकते हैं।

लेखन के क्षेत्र में बनाएं कॅरियर

रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में किसी औपचारिक शिक्षा की विशेष आवश्यकता नहीं है। आपकी कल्पना, अवलोकन और रचनात्मकता के साथ लिखने की क्षमता ही आपके भविष्य के मार्ग प्रशस्त करती है। हालांकि अंग्रेजी साहित्य या पत्रकारिता और संचार में एक शैक्षिक पृष्ठभूमि आपके कॅरियर की राह को आसान बनाती है।

ऐसे बहुत से लोग होते हैं, जिन्हें लिखना बहुत पसंद होता है। लेखन की कई विधाएं हैं, इन्हीं में से एक है क्रिएटिव राइटिंग। लेखन के क्षेत्र की यह विधा बेहद कलात्मक है। इस क्षेत्र से जुड़े लोग वास्तव में रचनात्मक लेखक हैं, जिन्हें लोग उपन्यासकार, कवि, गीतकार आदि विभिन्न नामों से जानते हैं। क्रिएटिव राइटर्स के पास लेखन में जादुई शक्ति होती है और अपने काम के माध्यम से, वे पाठकों को प्रभावित कर सकते हैं और उन्हें परेशान, घृणित, मंत्रमुग्ध या खुश कर सकते हैं। आमतौर पर लोग इस काम को आसान मानते हैं, जबकि लेखन बनाना एक लंबी प्रक्रिया है जिसमें बहुत अधिक शोध और कड़ी मेहनत की आवश्यकता होती है। अगर आप भी लेखन में अपनी रूचि रखते हैं तो इस क्षेत्र में अपने कदम बढ़ा सकते हैं

क्या है क्रिएटिव राइटिंग

रचनात्मक लेखन वह लेखन है जिसमें एक लेखक का उद्देश्य गद्य और काव्य छंदों के माध्यम से अपनी भावनाओं, भावनाओं, कल्पनाशील विचारों और विचारों को व्यक्त करना है। विभिन्न तरह के लेखन जैसे उपन्यास, कविता, कहानी, नाटक, आत्मकथा, पटकथा लेखन, कॉपी लेखन आदि को रचनात्मक लेखन कहा जाता है। रचनात्मक लेखन एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें प्राकृतिक दुनिया के चित्र बनाने के लिए बहुत अधिक कल्पना, अवलोकन और एक जन्मजात क्षमता की आवश्यकता होती है। विभिन्न विषयों और शैलियों पर लेख पढ़कर एक अच्छा लेखक बन सकता हैय हर तरह से जीवन का अनुभव करना और बहुत सारे मुहावरों, लहजों और स्थानीय भावों को सीखना और सुनना। वैसे तो क्रिएटिव राइटिंग कुछ लोगों को जन्मजात उपहार में मिलती हैं, लेकिन रचनात्मक लेखन में कोर्स करके कोई भी अपने लेखन कौशल में सुधार कर सकता है।

योग्यता

कॅरियर एक्सपर्ट कहते हैं कि रचनात्मक लेखन के क्षेत्र में किसी औपचारिक शिक्षा की विशेष आवश्यकता नहीं है। आपकी कल्पना, अवलोकन और रचनात्मकता के साथ लिखने की क्षमता ही आपके भविष्य के मार्ग प्रशस्त करती है। हालांकि अंग्रेजी साहित्य या पत्रकारिता और संचार में एक शैक्षिक पृष्ठभूमि आपके कॅरियर की राह को आसान बनाती है। वैसे भारत में कुछ संस्थान रचनात्मक लेखन में शार्ट टर्म कोर्स कराते हैं और इन पाठ्यक्रम में आवेदन करने के लिए न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता हायर सेकंडरी या 10+2 होनी चाहिए। इन पाठ्यक्रमों की न्यूनतम अवधि एक वर्ष है।

व्यक्तिगत गुण

कॅरियर एक्सपर्ट कहते हैं कि एक क्रिएटिव राइटर को कल्पनाओं के आकाश में विचरने के साथ-साथ उसे कागज पर भी बेहतरीन तरीके से उतारने की कला आनी चाहिए। इसके अलावा उसके भीतर पढ़ने व नई चीजों को जानने की जिज्ञासा होनी चाहिए, ताकि वह अपने शब्दकोश को अधिक मजबूत बना सके। चूंकि इन दिनों लेखन के लिए कंप्यूटर का इस्तेमाल किया जाने लगता है। इसलिए उसे कंप्यूटर का ज्ञान होना व इंटरनेट में आवश्यक सामग्री खोजने की कला आनी चाहिए। इसके अलावा उसके भीतर ऑर्ब्जवेशन स्किल्स व कम्युनिकेशन स्किल्स भी मजबूत होने चाहिए। क्योंकि जब एक लेखक अपने या दूसरों के अनुभवों के पन्ने पर उतारता है तो उसका एक अलग ही प्रभाव देखने को मिलता है। इसके अलावा ऑब्जर्वेशन के जरिए उसके लेखन में भी विविधता को आसानी से देखा जा सकता है।

संभावनाएं

क्रिएटिव राइटर्स के पास अवसरों की कोई कमी नहीं है। कॅरियर एक्सपर्ट की मानें तो आप अपनी रूचि के अनुसार उपन्यास से लेकर संस्मरण, कविता, गीत, साइंस फिक्शन, रोमांस, स्क्रिप्ट, नाटक, यात्रा-वृत्तांत आदि लिख सकते हैं। इसके अलावा आप पत्र-पत्रिकाओं और समाचार पत्रों आदि के लिए रिपोर्ट, साक्षात्कार, सुविधाएँ, आलोचना और समीक्षाएं लिख सकता है। इसके अलावा, रचनात्मक लेखक वेब साइटों के लिए भी कंटेंट लिख सकते हैं या प्रिंट मीडिया के लिए लेख बना सकते हैं। आप किसी एक संस्थान से जुड़कर काम कर सकते हैं या फिर अलग-अलग संस्थानों के लिए फ्रीलांसिंग भी कर सकते हैं।

आमदनी

इस क्षेत्र में आमदनी आपके अनुभव व कौशल पर निर्भर करती हैं। शुरूआती दौर में एक क्रिएटिव राइटर आठ से दस हजार रूपए प्रतिमाह कमा सकता है। इसके बाद अनुभव बढ़ने के बाद आपका काम व आमदनी दोनों बढ़ती चली जाती है।

प्रमुख संस्थान

- इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, नई दिल्ली
- डॉ.बाबासाहेब अंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद
- नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर मीडिया स्टडीज, अहमदाबाद
- कर्नाटक स्टेट ओपन यूनिवर्सिटी

एंट्री इंटरव्यू की तरह एग्जिट इंटरव्यू भी मायने रखता है

एंट्री इंटरव्यू की तरह ही किसी कंपनी का एग्जिट इंटरव्यू भी उतना ही मायने रखता है। नौकरी छोड़ने से पहले एग्जिट इंटरव्यू भले ही मात्र एचआर संबंधी औपचारिकता लगे लेकिन इसका मतलब ये नहीं हैं कि इसके लिए आप कोई तैयारी न करें। इंटरव्यू में अपने जवाबों को तैयार रखकर आप अपने लिए भविष्य में उस कंपनी के दरवाजे हमेशा खुले रख सकेंगे। आइए जानते हैं एग्जिट इंटरव्यू के लिए कुछ जरूरी टिप्सः

सकारात्मक चीजों पर फोकस

एग्जिट इंटरव्यू के संदर्भ को समझना महत्वपूर्ण है और बिना किसी की भावनाओं को ठेस पहुंचाए सच बोलना जरूरी है। करियर के इस मोड़ पर आपको सकारात्मक प्रभाव बनाने के लिए सहयोगियों और प्रबंधकों की तारीफ करना चाहिए।

वापसी की इच्छा जताएं

अगर आप अच्छे टर्म के साथ अपने कार्यकाल को ऑफिस में पूरा कर रहे हैं तो इसके लिए आपको वापसी के सारे रास्ते खुल रखने की कोशिश करना चाहिए। हमेशा जुड़े रहने की इच्छा जताएं और वहां के एल्यूमिनी नेटवर्क का हिस्सा बनने को कहें।

आभार व्यक्त करें

ऑर्गनाइजेशन में अपने कार्यकाल को सहज बनाने में मदद करने वालों के प्रति आभार जताना न भूलें। यह केवल मैनेजमेंट को आपके बारे में पॉजिटिवी फील देगा।

माइक्रो पर्सपेक्टिव

अगर आपको अपने किसी साथी या वरिष्ठ प्रबंधक से संबंधित कोई बात रखने की भी है तो उसे सही तरीके से रखें। कुछ अगर कहना आवश्यक भी हो तो उसे माइक्रो पर्सपेक्टिव रखें।

कंस्ट्रक्टिव फीडबैक

आपके कार्यकाल के दौरान ऐसा समय भी रहा होगा जब वहां कलह और परेशानी का सामना करना पड़ा होगा। सुधारात्मक उपायों के साथ ईमानदार प्रतिक्रिया दें।

वकालत करने के लिए जानें बेसिक बातें

सामान्य रूप से लॉ की पढ़ाई के लिए आपका 12वीं पास होना आवश्यक है और यह किसी भी विषय में हो सकता है। इसमें 50 परसेंट मार्क्स ही आवश्यक है और ऐसे में आपकी एज 20 साल से अधिक नहीं होनी चाहिए। हमारे देश में कानून का शासन है। हर चीज कानून के अनुसार चलती है। कानून के अनुसार ही प्रशासन चलता है, कानून के अनुसार ही अदालतों का सिस्टम चलता है।

अदालतों में हम देखते हैं कि कानून के अनुसार ही एक पक्ष दूसरे पक्ष को चुनौती देता है और अदालतों में कानून के जानकार इसके भिन्न पक्षों की व्याख्या भी करते हैं। इन्हीं कानून के जानकारों को हम वकील कहते हैं और वकील बनने के लिए आपको लॉ की पढ़ाई करनी पड़ती है। इस पढ़ाई का का प्रथम चरण होता है एलएलबी का, यानी बैचलर आफ लॉ! वैसे कानून की पढ़ाई सिर्फ एक प्रोफेशन भर ही नहीं है, बल्कि यह उन तमाम जरूरतमंद लोगों को सिस्टम के साथ जोड़ने में एक अति महत्वपूर्ण कड़ी है, जो तमाम कारणों से अन्याय के शिकार होते हैं। जिन्हें पता तक नहीं होता है कि उन्हें कानून की जानकारी ना होने के कारण असीमित नुकसान उठाना पड़ा है। सच कहा जाए तो हमारे देश में ला प्रोफेशनल्स की जवाबदेही, किसी भी दूसरे प्रोफेशन से अधिक हो जाती है, क्योंकि यह कानून के शासन पर भरोसा पैदा करने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। सामान्य रूप से लॉ की पढ़ाई के लिए आपका 12वीं पास होना आवश्यक है और यह किसी भी विषय में हो सकता है। इसमें 50 परसेंट मार्क्स ही आवश्यक है और ऐसे में आपकी एज 20 साल से अधिक नहीं होनी चाहिए। इसके बाद आपको सीएलएटी एग्जामिनेशन देना पड़ता है, जिसे कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट कहा जाता है और यह नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी द्वारा ऑर्गेनाइज किया जाता है। एग्जाम में आपसे लॉजिकल रीजनिंग, लीगल, एटीट्यूड, गणित, अंग्रेजी और जनरल क्वेश्चन पूछे जाते हैं। इसके बाद 5 साल के कोर्स में आप एडमिशन ले सकते हैं। सामान्यत: पांच साल के इन्टीग्रेटेड कोर्स के एंट्रेंस हेतु 200 अंकों के क्वेश्चन पेपर के लिए डेढ़ घंटे का टाइम दिया जाता है। इसमें इंग्लिश के 30 अंक, सामान्य ज्ञान के 50 अंक, लीगल एप्टीट्यूड के 20 अंक, लीगल रीजनिंग के 20 अंक होते हैं एवं 30 अंकों का एक एस्से भी लिखना होता है।

लॉ करने के बाद आपको इंटर्नशिप का कोर्स करना होता है और इस दौरान आपको काफी कुछ ट्रेनिंग मिलती है। इंटर्नशिप के बाद आपको किसी भी राज्य के स्टेट बार काउंसिल में इनरोलमेंट के लिए अप्लाई करना होता है और उसके बाद ऑल इंडिया बार कौंसिल का एग्जामिनेशन क्लियर करने के बाद आपको प्रैक्टिस का सर्टिफिकेट मिल जाता है और इसके बाद आप वकील बन जाते हैं।

हालाँकि, ग्रेजुएशन के बाद भी आप लॉ की पढ़ाई कर सकते हैं और तब यह मात्र 3 साल का होता है। ग्रेजुएशन में भी आपको साधारणतया 50 परसेंट मार्क्स लाना होता है। वैसे एससी/ एसटी कटगरी स्टूडेंट्स के लिए इसमें छूट भी होती है।

लॉ की केटेगरी देखें तो मुख्यत: कॉर्पोरेट लॉ, क्रिमिनल लॉ, पेटेंट, एटर्नी, फैमिली लॉ, साइबर लॉ और बैंकिंग ला के रूप को गिनाया जा सकता है और किसी भी विषय में बाद में आप खुद को स्पेशलाइज कर सकते हैं। जैसा कि नाम के साथ ही स्पष्ट है कि पर्टिकुलर फील्ड में आप सम्बंधित क्षेत्र की विशेषज्ञता की हद तक जानकारी लेंगे।

खास बात यह भी है कि एलएलबी के बाद एलएलएम और पीएचडी जैसी विशेषज्ञता भी आप हासिल कर सकते हैं और बाद के दिनों में आप न्यायपालिका की परीक्षा देकर जज बनने की भी कोशिश कर सकते हैं।

लॉ करने के लिए देश भर के कुछ अच्छे कॉलेजों की बात करें तो नेशनल लॉ स्कूल ऑफ इण्डिया यूनिवर्सिटी, बेंगलुरु, नलसार यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ, हैदराबाद, नेशनल लॉ इन्स्टीट्यूट यूनिवर्सिटी, भोपाल, द वेस्ट बेंगाल नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ ज्युरीडिकल साइंस, कोलकाता, नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, जोधपुर, हिदायतुल्लाह नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, रायपुर, गुजरात नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद, डॉ.राममनोहर लोहिया नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, लखनऊ, राजीव गाँधी नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ, पटियाला, चाणक्य नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी, पटना, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एडवांस्ड लागल स्टडीज, कोच्चि का नाम मुख्य रूप से गिनाया जा सकता है। यूं अधिकांश यूनिवर्सिटीज में यह कोर्स उपलब्ध हैं और देश के तमाम जिलों में आपको ऐसे कॉलेज मिल जायेंगे, जहाँ से आप लॉ में एडमिशन लेकर कानून की समझ बढ़ा सकते हैं। वर्तमान में इस कोर्स के स्कोप की बात करने की जरुरत नहीं है, क्योंकि ट्रेडिशनल अदालती प्रैक्टिस के अलावा कॉरपोरेट वर्ल्ड में, एनजीओ में, बैंकिंग सेक्टर में, सरकार एवं उसके संस्थानों में, स्वतंत्र पत्रकारिता (फ्रीलांस जर्नलिज्म) में, सेना तक में, लॉ फर्म्स के साथ-साथन्यायिक सेवा तक में इसका विस्तार है।

साप्ताहिक शेयर बाजार समीक्षा : दो दिन की छुट्टी के बावजूद स्टॉक मार्केट में रही तूफानी तेजी

सेंसेक्स और निफ्टी 4.5 प्रतिशत तक की साप्ताहिक उछाल के साथ हुआ साप्ताहिक कारोबार का अंत

नई दिल्ली, (एजेंसी) : पिछले सप्ताह 14 और 18 अप्रैल को छुट्टी होने के बाद कारण सिर्फ तीन दिन के कारोबारी सप्ताह में भी घरेलू शेयर बाजार ने साप्ताहिक आधार पर जबरदस्त तेजी का प्रदर्शन किया। इस तेजी के कारण घरेलू शेयर बाजार फरवरी 2021 के बाद की सबसे बड़ी साप्ताहिक बढ़त के साथ बंद होने में सफल रहा। अंबेडकर जयंती की छुट्टी के बाद 15 अप्रैल को शुरू होकर 18 अप्रैल को गुड फ्राइडे की छुट्टी के पहले यानी गुरुवार 17 अप्रैल तक के कारोबारी सप्ताह के दौरान बीएसई का सेंसेक्स 3,395.94 अंक यानी 4.51 प्रतिशत की मजबूती के साथ 78,553.20 अंक के स्तर पर बंद हुआ। इसी तरह एनएसई के निफ्टी ने सिर्फ तीन दिन के कारोबारी सप्ताह में 1,023.10 अंक यानी 4.48 प्रतिशत की उछाल के साथ 23,851.65 अंक के स्तर पर साप्ताहिक कारोबार का अंत किया।

14 से 17 अप्रैल तक के कारोबारी सप्ताह के दौरान बीएसई का लार्जकैप इंडेक्स 4.40 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुआ। इस सूचकांक में शामिल एक्सिस बैंक, एनटीपीसी ग्रीन एनर्जी, इंडसइंड बैंक, संवर्धन मदरसन इंटरनेशनल, मैक्रोटेक डेवलपर्स, जिंदल स्टील एंड पावर और मैनकाइंड फार्मास्यूटिकल्स के शेयर जबरदस्त लाभ कमा कर टॉप गेनर्स की सूची में शामिल हुए। इसी तरह बीएसई के मिडकैप इंडेक्स ने 3 दिन के कारोबारी सप्ताह के दौरान 4 प्रतिशत की मजबूती हासिल की। इस इंडेक्स में शामिल मजगांव डॉक शिपबिल्डर्स, न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी, जी एंटरटेनमेंट एंटरप्राइजेज, इंडिया रिन्यूएबल एनर्जी डेवलपमेंट एजेंसी, एमक्योर फार्मास्यूटिकल्स और थर्मैक्स के शेयर 10 से 19 प्रतिशत तक की मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहे।

पिछले सप्ताह के कारोबार में स्मॉलकैप इंडेक्स सबसे अधिक 4.7 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद होने में सफल रहा। इस इंडेक्स में शामिल कंपनियों में से मरकरी ईवी टेक्नोलॉजी, क्रिस्टल इंटीग्रेटेड सर्विसेज, ऑप्टिमस इंफ्राकॉम, गरवारे हाईटेक फिल्म, क्यूपिड, फाइनो पेमेंट्स बैंक, गोल्डियम इंटरनेशनल, राजू इंजिनियर्स, मेजेलैनिक क्लाउड और गुजरात थेमिस बायोसिन के शेयर 18 से 20 प्रतिशत तक की मजबूती के साथ बंद हुए। दूसरी ओर, केआर रेल इंजीनियरिंग, जेनसोल इंजीनियरिंग, वेलियंट ऑर्गेनिक्स, हैंप्टन स्काई रियल्टी, साई स्किल कलामंदिर और इजी ट्रिप प्लानर्स के शेयर 12 प्रतिशत तक की गिरावट का शिकार होकर टॉप लूजर्स की सूची में शामिल हुए।

सेक्टोरल फ्रंट की बात करें, तो 15 से 17 अप्रैल तक के 3 दिन के कारोबारी सप्ताह के दौरान सभी सेक्टोरल फ्रंट मजबूती के साथ हरे निशान में बंद हुए। इस सप्ताह निफ्टी के रियल्टी और प्राइवेट बैंक इंडेक्स 7-7 प्रतिशत की मजबूती के साथ बंद हुए। इसी तरह निफ्टी के बैंक इंडेक्स में 6.4 प्रतिशत की छलांग लगाई। इसके अलावा निफ्टी का पीएसयू बैंक इंडेक्स 5.6 प्रतिशत, निफ्टी का मीडिया इंडेक्स 5 प्रतिशत, निफ्टी का ऑयल एंड गैस इंडेक्स और ऑटोमोबाइल इंडेक्स 4-4 प्रतिशत की बढ़त के साथ बंद हुए।मार्केट एक्सपर्ट्स का कहना है कि निफ्टी ने दैनिक और साप्ताहिक दोनों आधारों पर मजबूत यानी बुलिश कैंडल बनाया है, जिससे बाजार की मजबूती का संकेत मिलता है। अगर इस सप्ताह निफ्टी 23,900 अंक से ऊपर बने रहने में सफल रहा, तो इसमें 24,050 अंक तक की तेजी आने की संभावना बन सकती है। धामी सिक्योरिटीज के वाइस प्रेसिडेंट प्रशांत धामी का कहना है कि अगर बाजार में कमजोरी आती है, तब भी नीचे की और निफ्टी के लिए 23,800 अंक के स्तर पर पहला सपोर्ट बना हुआ है। किसी स्थिति में अगर ये सपोर्ट लेवल टूट भी जाता है, तो इसका अगला सपोर्ट लेवल 23,500 अंक के स्तर पर है। अगर बाजार में इस स्तर पर गिरावट आती है, तो निवेशकों के लिए खरीदारी करने का मौका बनेगा।

इसी तरह खुराना सिक्योरिटीज एंड फाइनेंशियल सर्विसेज के सीईओ रवि चंदर खुराना का कहना है कि पिछले सप्ताह के दौरान स्टॉक मार्केट ने 20 डे और 50 डे सिंपल मूविंग एवरेज को आसानी से पार कर लिया है, जिससे बाजार की पॉजिटिविटी का पता चलता है। इसकी वजह से वीकली चार्ट पर एक बुलिश कैंडल बना है। इसके साथ ही शेयर बाजार इंट्रा-डे और डेली चार्ट दोनों पर अपट्रेंड कंटिन्यूटी पैटर्न फॉरमेशन बनाए हुए है, जो वर्तमान स्तर पर और तेजी आने का संकेत है। बाजार का शॉर्ट टर्म ट्रेंड भी बुलिश बना हुआ है। हालांकि मुनाफा वसूली के कारण आने वाले दिनों में स्टॉक मार्केट की चाल एक छोटे दायरे में भी घूमती हुई नजर आ सकती है। इसलिए छोटे निवेशकों को फिलहाल सतर्क होकर अपनी निवेश योजना बनानी चाहिए।

पीयूष गोयल लंदन, ओस्लो और ब्रसेल्स का 28 अप्रैल से करेंगे दौरा

नई दिल्ली,(एजेंसी) : केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल 28 अप्रैल से शुरू होने वाले अपनी बहुप्रतीक्षित विदेश यात्रा के दौरान लंदन, ओस्लो और ब्रसेल्स का दौरा करेंगे। इस पांच दिवसीय यात्रा का उद्देश्य ब्रिटेन, नॉर्वे और यूरोपीय संघ (ईयू) के साथ भारत के व्यापार और निवेश संबंधों को और बढ़ावा देना है।

अधिकारिक सूत्रों ने रविवार को दी जानकारी में बताया कि केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल की लंदन, ओस्लो और ब्रसेल्स की संभावित पांच दिवसीय दौरा 28 अप्रैल से शुरू होने की उम्मीद है। यह 5 दिवसीय दौरा भारत के लिए रणनीतिक दृष्टिकोण से अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है, जिसका उद्देश्य ब्रिटेन, नॉर्वे और यूरोपीय संघ के साथ व्यापार और निवेश संबंधों को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाना है।

केंद्रीय वाणिज्य मंत्री का लंदन यात्रा महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत और ब्रिटेन के बीच प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौते के लिए बातचीत अंतिम चरण की ओर बढ़ रही है, दोनों पक्ष शेष मुद्दों को हल करने के लिए काम कर रहे हैं। सूत्रों ने संकेत दिया है कि अब ब्रिटेन के साथ बातचीत का एक और पूर्ण दौर संभव नहीं है क्योंकि चर्चाएं तेज गति से आगे बढ़ रही हैं।

इसके अलावा ओस्लो की यात्रा इसलिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि भारत ने पिछले साल मार्च में चार यूरोपीय राष्ट्र ब्लॉक यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ (ईएफटीए) के साथ भी एक व्यापक मुक्त व्यापार समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। इस साल इसके लागू होने की उम्मीद है। यूरोपीय मुक्त व्यापार संघ के सदस्य आइसलैंड, लिकटेंस्टीन, नॉर्वे और स्विट्जरलैंड हैं। दोनों पक्षों ने 10 मार्च 2024 को व्यापार और आर्थिक भागीदारी समझौते (टीईपीए) पर हस्ताक्षर किए।

इस समझौते के तहत भारत को समूह से 15 वर्षों में 100 अरब अमेरिकी डॉलर के निवेश की प्रतिबद्धता मिली है, जबकि स्विस घड़ियां, चॉकलेट और कटे और पॉलिश किए गए हीरे जैसे कई उत्पादों को कम या शून्य शुल्क पर अनुमति दी गई है। वहीं, 27 देशों के समूह यूरोपीय संघ (ईयू) के साथ व्यापार समझौते के लिए बातचीत भी तेजी से आगे बढ़ रही है।

उल्लेखनीय है कि भारत और 27 देशों का समूह व्यापक समझौते पर जाने से पहले एक प्रारंभिक फसल समझौते पर चर्चा करने की संभावना तलाश रहे हैं। दोनों पक्षों के बीच 11वें दौर की वार्ता 12-16 मई को यहां निर्धारित है। फरवरी में, प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी और यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उसुर्ला वॉन डेर लेयेन ने इस साल के अंत तक मुक्त व्यापार समझौते को सील करने पर सहमति व्यक्त की।

पंजाब प्रांत की मंत्री ने पाकिस्तान में विदेशी फूड चेन पर हमलों को पूर्व नियोजित बताया

लाहौर, (एजेंसी) : पाकिस्तान के पंजाब प्रांत की सूचना मंत्री अजमा बुखारी ने हाल ही में पाकिस्तान में अंतरराष्ट्रीय फास्ट फूड चेन पर हुए हमलों को सुनियोजित योजना के तहत करार दिया है। पंजाब की मंत्री ने दावा किया कि इन हमलों के पीछे एक संगठित समूह काम कर रहा है, जो सूबे में अशांति फैलाना चाहता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि किसी को भी कानून व्यवस्था खराब करने की इजाजत नहीं दी जाएगी। इस संबंध में अब तक 149 संदिग्धों को गिरफ्तार किया जा चुका है।अजमा बुखारी ने रविवार को एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि हाल ही में उन्होंने इन घटनाओं की कड़ी निंदा करते हुए कहा कि इससे देश की छवि और अर्थव्यवस्था दोनों को नुकसान पहुंच रहा है। अजमा बुखारी ने कहा, इन फूड चेन में 25,000 पाकिस्तानी काम करते हैं। हमलों में मारे गए व्यक्ति भी एक पाकिस्तानी नागरिक थे। उन्होंने आगे बताया कि इन हमलों से पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। बुखारी ने कहा, विकसित होते पंजाब पर एक हिंसक समूह हमला कर रहा है, लेकिन सरकार इन तत्वों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करेगी। इससे पहले गृह राज्य मंत्री तलाल चौधरी ने भी शनिवार को इन हमलों की आलोचना की थी और कहा था कि सरकार किसी भी निवेशक को असुरक्षित महसूस नहीं करने देगी।

खरीदार की भूमिका में नजर आए विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक, 3 दिन में 8,472 करोड़ का निवेश

नई दिल्ली, (एजेंसी) : अप्रैल महीने के शुरुआती 2 सप्ताह के दौरान बिकवाल (सेलर) की भूमिका निभाने के बाद विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक (एफपीआई) 15 से 17 अप्रैल के कारोबारी सप्ताह के दौरान लिवाल (बायर) की भूमिका में नजर आए। 3 दिन के इस कारोबारी सप्ताह के दौरान विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने स्टॉक मार्केट में वापसी करते हुए खरीद-बिक्री को मिला कर करीब 8,500 करोड़ रुपये का निवेश किया।डिपॉजिटरी से मिले आंकड़ों के अनुसार 17 अप्रैल को खत्म हुए सप्ताह के पहले कारोबारी दिन यानी 15 अप्रैल को विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने 2,352 करोड़ रुपये के शेयरों की बिक्री की। इसके बाद 16 और 17 अप्रैल को उन्होंने स्टॉक मार्केट में कुल 10,824 करोड़ रुपये का निवेश किया। इस तरह 3 दिन के इस कारोबारी सप्ताह के दौरान विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने शेयर बाजार में कुल 8,472 करोड़ रुपये का निवेश किया। इस सप्ताह 14 अप्रैल को डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर जयंती और 18 अप्रैल को गुड फ्राइडे की छुट्टी होने की वजह से शेयर बाजार में कोई कारोबार नहीं हुआ था।

आंकड़ों के अनुसार अप्रैल के महीने में एफपीआई ने अभी तक स्टॉक मार्केट में खरीद बिक्री मिला कर कुल 23,103 करोड़ रुपये की निकासी की है। अप्रैल के अभी तक के आंकड़ों को मिला लें, तो साल 2025 में उन्होंने भारतीय शेयर बाजार से अभी तक कुल 1,39,677 करोड़ रुपये की निकासी की है। अप्रैल के पहले मार्च के महीने में एफपीआई ने 3,973 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी की थी। इसके पहले फरवरी में एफपीआई द्वारा स्टॉक मार्केट से की गई शुद्ध निकासी का आंकड़ा 34,574 करोड़ रुपये रहा था, जबकि जनवरी में विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने स्टॉक मार्केट से खरीद बिक्री मिला कर कुल 78,027 करोड़ रुपये की निकासी की थी।मार्केट एक्सपर्ट्स का कहना है कि अप्रैल महीने की शुरूआत में भी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा रेसिप्रोकल टैरिफ का दबाव बनाए जाने की वजह से शुरूआती 2 सप्ताह के कारोबार के दौरान एफपीआई ने खरीद-बिक्री मिला कर काफी आक्रामक अंदाज में कुल 31,575 करोड़ रुपये की बिकवाली की थी। हालांकि, इसके बाद टैरिफ व्यवस्था में राहत मिलने की वजह से वैश्विक व्यापार में तनाव घटने की उम्मीद बन गई। इसके साथ ही भारत की मजबूत घरेलू अर्थव्यवस्था और भारतीय शेयर बाजार में पिछले कुछ महीने के दौरान हुए करेक्शन की वजह से शेयरों का वैल्यूएशन आकर्षक हो जाने के कारण विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों ने इस सप्ताह बिकवाली करने की जगह लिवाली करने पर ज्यादा ध्यान दिया।कोटक सिक्योरिटीज के इक्विटी रिसर्च हेड श्रीकांत चौहान का कहना है कि डॉलर इंडेक्स में आई गिरावट और डॉलर की तुलना में रुपये की कीमत में आई मजबूती की वजह से भी विदेशी पोर्टफोलियो निवेशक अब भारत जैसे विकासशील देशों की ओर अपना रुख कर रहे हैं। इसके साथ ही अमेरिका और चीन के बीच टैरिफ को लेकर बनी कड़वाहट के कारण इन दोनों देशों की विकास दर में कमी आने की आशंका बनी हुई है।

टॉप 10 कंपनियों का मार्केट कैप 3.84 लाख करोड़ रुपये बढ़ा, एचडीएफसी बैंक को सबसे ज्यादा फायदा

नई दिल्ली, (एजेंसी) : घरेलू शेयर बाजार में पिछले कारोबारी सप्ताह के दौरान हुई खरीद-बिक्री के कारण देश की टॉप 10 मोस्ट वैल्यूड कंपनियों में से सभी 10 कंपनियां मुनाफा कमाकर हरे निशान में बनी रहीं। बाजार की तेजी के कारण इन 10 कंपनियों के मार्केट कैप में सिर्फ 3 दिन के कारोबार के बाद 3.84 लाख करोड़ रुपये से अधिक की बढ़ोतरी हो गई। इनमें सबसे अधिक फायदा एचडीएफसी बैंक और भारती एयरटेल को हुआ।इस सप्ताह के कारोबार के दौरान एचडीएफसी बैंक और भारती एयरटेल के अलावा रिलायंस इंडस्ट्रीज, आईसी आईसीआई बैंक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई), टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस), बजाज फाइनेंस, आईटीसी, इंफोसिस और हिन्दुस्तान यूनिलीवर के मार्केट कैप में कुल 3,84,004.73 करोड़ रुपये की बढ़ोतरी हो गई। 15 से 17 अप्रैल के बीच हुए कारोबार के दौरान एचडीएफसी बैंक का मार्केट कैप 76,483.95 करोड़ रुपये उछल कर 14,58,934.32 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया। इसी तरह भारती एयरटेल का मार्केट कैप 75,210.77 करोड़ रुपये की बढ़त के साथ 10,77,241.74 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया। रिलायंस इंडस्ट्रीज का मार्केट कैप 74,766.36 करोड़ रुपये बढ़ कर 17,24,768.59 करोड़ रुपये के स्तर पर आ गया।इसके अलावा आईसी आईसीआई बैंक का मार्केट कैप 67,597 करोड़ रुपये के फायदे के साथ उछल कर 10,01,948.86 करोड़ रुपये के स्तर पर, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) का मार्केट कैप 38,420.49 करोड़ रुपये बढ़ कर 7,11,381.46 करोड़ रुपये के स्तर पर, टाटा कंसलटेंसी सर्विसेज (टीसीएस) का मार्केट कैप 24,114.55 करोड़ रुपये की बढ़त के साथ 11,93,588.98 करोड़ रुपये के स्तर पर, बजाज फाइनेंस का मार्केट कैप 14,712.85 करोड़ रुपये बढ़ कर 5,68,061.13 करोड़ रुपये के स्तर पर, आईटीसी का मार्केट कैप 6,820.20 करोड़ रुपये उछल कर 5,34,665.77 करोड़ रुपये के स्तर पर, इंफोसिस का मार्केट कैप 3,987.14 करोड़ रुपये की बढ़ कर 5,89,846.48 करोड़ रुपये के स्तर पर और हिंदुस्तान यूनिलीवर का मार्केट कैप 1,891.42 करोड़ रुपये बढ़ होकर 5,57,945.69 करोड़ रुपये के स्तर पर पहुंच गया।मार्केट कैप के लिहाज से रिलायंस इंडस्ट्रीज 17,24,768.59 करोड़ रुपये के बाजार पूंजीकरण (मार्केट कैप) के साथ देश की सबसे अधिक मार्केट कैप वाली कंपनी रही। इसके बाद एचडीएफसी बैंक (कुल मार्केट कैप 14,58,934.32 करोड़ रुपये), टीसीएस (कुल मार्केट कैप 11,93,588.98 करोड़ रुपये), भारती एयरटेल (कुल मार्केट कैप 10,77,241.74 करोड़ रुपये), आईसीआईसीआई बैंक (कुल मार्केट कैप 10,01,948.86 करोड़ रुपये), स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (कुल मार्केट कैप 7,11,381.46 करोड़ रुपये), इंफोसिस (कुल मार्केट कैप 5,89,846.48 करोड़ रुपये), बजाज फाइनेंस (कुल मार्केट कैप 5,68,061.13 करोड़ रुपये) हिंदुस्तान यूनिलीवर (कुल मार्केट कैप 5,57,945.69 करोड़ रुपये) और आईटीसी (कुल मार्केट कैप 5,34,665.77 करोड़ रुपये) के नाम सबसे मूल्यवान टॉप 10 कंपनियों के लिस्ट में दूसरे से दसवें स्थान पर बने रहे।

संक्षिप्त खबरें

कैट का राष्ट्रीय सम्मेलन 22 अप्रैल को, क्विक कॉमर्स और ई-कॉमर्स के खिलाफ हल्ला बोल

नई दिल्ली, (एजेंसी) : कॉन्फिडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) 22 अप्रैल को कंस्टीट्यूशन क्लब में राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने जा रहा है। ऑल इंडिया मोबाइल रिटेलर्स एसोसिएशन (ऐमरा) और ऑल इंडिया कंज्यूमर प्रोडक्ट्स डिस्ट्रीब्यूटर्स फेडरेशन (एआईसीपीडीएफ) के सहयोग से होने वाले इस सम्मेलन का विषय है ₹क्विक कॉमर्स और ई-कॉमर्स का क्रूर चेहरा।

आयोजकों का कहना है कि सम्मेलन में देशभर के व्यापारी नेता, नीति विशेषज्ञ, अर्थशास्त्री और अन्य हितधारक शामिल होंगे, जो डिजिटल कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स के कारण पारंपरिक व्यापार प्रणाली पर मंडरा रहे गंभीर खतरों और अनैतिक गतिविधियों को उजागर करेंगे। उनका मानना है कि क्विक कॉमर्स और ई-कॉमर्स की अनियंत्रित वृद्धि ने अनुचित मूल्य छूट, उपभोक्ताओं के व्यवहार में हेरफेर, एफडीआई नियमों का उल्लंघन और छोटे व्यापारियों की उपेक्षा जैसे गंभीर मुद्दे सामने ला दिए हैं।

कैट के राष्ट्रीय महामंत्री और चांदनी चौक से सांसद प्रवीन खंडेलवाल ने कहा, अब वक्त आ गया है कि क्विक कॉमर्स और ई-कॉमर्स के काले सच को देश के सामने लाया जाए। उपभोक्ता जहां एक ओर सुविधा देखता है, वहीं व्यापारी बबार्दी झेल रहा है। उन्होंने यह भी चेतावनी दी कि विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) का उपयोग एक आर्थिक हथियार के रूप में किया जा रहा है, जिससे बड़ी कंपनियां लागत से कम दाम पर सामान बेच रही हैं, जबकि देश में कोई परिसंपत्ति निर्माण नहीं हो रहा।

सम्मेलन में पारंपरिक व्यापार की सुरक्षा, निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा सुनिश्चित करने और क्विक कॉमर्स से जुड़े कर्मचारियों के स्वास्थ्य की रक्षा के लिए ठोस नियामक उपायों की मांग की जाएगी। कैट ने सरकार से त्वरित नीतिगत हस्तक्षेप का आग्रह किया है ताकि व्यापारिक पारिस्थितिकी तंत्र को संरक्षित किया जा सके।

भारत के ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर मंगलवार को नेपाल के दो दिवसीय दौरे पर आएंगे

काठमांडू, (एजेंसी) : भारत के ऊर्जा मंत्री मनोहर लाल खट्टर मंगलवार से दो दिनों के नेपाल दौरे पर काठमांडू आएंगे। वे नेपाल में भारत सरकार की तरफ से चल रहे ऊर्जा परियोजनाओं के निरीक्षण के साथ नेपाल-भारत के बीच संयुक्त ट्रांसमिशन लाइन समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले हैं।

नेपाल के ऊर्जा मंत्री दीपक खड़का के निमंत्रण पर खट्टर 22-23 अप्रैल को नेपाल का दौरा करने वाले हैं। अपने भ्रमण के क्रम में भारतीय ऊर्जा मंत्री खट्टर मंगलवार को भारत सरकार द्वारा कोशी कॉरिडोर के तहत बनाए गए 220 केवी क्षमता की प्रसारण लाइन का उद्घाटन करेंगे। नेपाल के ऊर्जा मंत्रालय के तरफ से दी गई जानकारी के मुताबिक 220 केवी क्षमता के सब-स्टेशन का भी उद्घाटन भारतीय ऊर्जा मंत्री के द्वारा किए जाने का कार्यक्रम है।

दीपक खड़का ने बताया कि मंगलवार को ही वे भारत सरकार के पूर्ण आर्थिक सहयोग से बनाए जा रहे 900 मेगावाट क्षमता की अरुण-3 हाइड्रोपावर परियोजना का निरीक्षण करने वाले हैं। संखुवासभा में निमार्णाधीन इस हाइड्रोपावर परियोजना का निर्माण भारत सरकार के उपक्रम सतलज जलविद्युत निगम द्वारा किया जा रहा है। 2025 के अंत तक इसका निर्माण कार्य पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

मंगलवार को काठमांडू में दोनों देशों के बीच संयुक्त ट्रांसमिशन लाइन के समझौते पर हस्ताक्षर किए जाने का कार्यक्रम है। नेपाल-भारत के बीच बनने वाले 400 केवी क्षमता वाले इनरवा- न्यू पूर्णिया (बिहार) प्रसारण लाइन तथा 400 केवी क्षमता की दोदोधरा- बरेली (उत्तर प्रदेश) प्रसारण लाइन के लिए बनने वाली ज्वाइंट वेंचर कंपनी के निर्माण के लिए समझौते पर हस्ताक्षर किया जाएगा।

बुधवार सुबह खट्टर मुक्तिनाथ का दर्शन करने जाएंगे और शाम में काठमांडू वापस आकर प्रधानमंत्री ओली से शिष्टाचार मुलाकात करेंगे। बुधवार शाम को खट्टर पशुपतिनाथ मंदिर की संध्या आरती में शामिल होंगे और बुधवार देर शाम वे दिल्ली लौटेंगे।

आरपीपी के प्रदर्शन से पहले पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र शाह के साथ राजशाही पक्षधर नेताओं की डिनर मीटिंग

काठमांडू, (एजेंसी) : रविवार को राजशाही के पक्ष में होने वाले प्रदर्शन से ठीक पहले पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र शाह ने अपने निकट नेताओं के साथ शनिवार को डिनर मीटिंग की है। निषेधित क्षेत्र तोड़ने की घोषणा से ठीक एक दिन पहले पूर्व राजा के साथ इन नेताओं की बैठक काफी अहम मानी जा रही है।शनिवार की देर शाम को पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र शाह के काठमांडू स्थित निर्मल निवास में राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी (आरपीपी) के सात शीर्ष नेताओं के साथ डिनर मीटिंग हुई है। पूर्व राजा के घर पर डिनर मीटिंग पर मिलने वाले नेताओं में आरपीपी के अध्यक्ष राजेन्द्र लिंगदेन, पशुपति शमशेर राणा, प्रकाशचंद लोहनी, विक्रम पांडे, ध्रुव बहादुर प्रधान, बुद्धिमान तमांग और ज्ञानेन्द्र शाही मौजूद रहे।

इस बैठक के बाद आरपीपी के सांसद ज्ञानेन्द्र शाही ने निर्मल निवास में पूर्व राजा के साथ हुई बैठक होने की बात स्वीकार की। उन्होंने कहा कि राजसंस्था पुनर्स्थापना को लेकर रविवार से फिर से शुरू होने वाले प्रदर्शन को लेकर चर्चा हुई। साथ ही राजसंस्था समर्थक संगठनों और राजनीतिक दलों के बीच कुछ बातों को लेकर मतभेद पर भी चर्चा हुई। पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र शाह के साथ आरपीपी नेताओं की यह डिनर मीटिंग ऐसे समय हुई, जब इस पार्टी की केंद्रीय समिति की बैठक ने अपनी पार्टी के अलावा अन्य किसी भी राजसंस्था समर्थित संघ संस्था या अभियान से जुड़ने पर प्रतिबंध लगाने का फैसला किया था। शुक्रवार को आरपीपी ने अपने पार्टी के सभी पदाधिकारियों पर राजसंस्था समर्थित किसी अन्य संघ संगठन या अभियान में शामिल होने पर रोक लगा दी है।माना जा रहा है कि पूर्व राजा द्वारा आरपीपी पार्टी के भीतर कुछ नेताओं को अलग से संघर्ष की जिम्मेदारी दिए जाने से जो नाराजगी थी, उसी पर चर्चा करने के लिए पूर्व राजा ज्ञानेन्द्र ने यह डिनर मीटिंग बुलाई थी। एक तरफ आरपीपी के तरफ से रविवार को काठमांडू में निषेधित क्षेत्र को तोड़ कर प्रदर्शन करने की घोषणा किया जा चुका है, वहीं दूसरी तरफ सरकार के तरफ से आरपीपी को ऐसा नहीं करने की चेतावनी भी दी जा चुकी है।

संक्षिप्त खबरें

आईएसएसएफ विश्व कप: अर्जुन बबूता ने पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में रजत पदक जीता

लीमा, (एजेंसी) : भारतीय निशानेबाज अर्जुन बाबूता ने आईएसएसएफ विश्व कप राइफल/पिस्टल/शॉटगन चरण में पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में शानदार प्रदर्शन करते हुए रजत पदक अपने नाम किया है। पेरू के लीमा में आयोजित प्रतियोगिता में शनिवार को हुए मैच में अर्जुन ने मौजूदा ओलंपिक चैंपियन चीन के शेंग लिहाओ को कड़ी टक्कर दी, लेकिन महज 0.1 अंक से स्वर्ण पदक से चूक गए। उन्हें रजत पदक से संतोष करना पड़ा। चीनी शूटर को स्वर्ण पदक मिला।

अर्जुन बबूता ने कड़े फाइनल मुकाबले में 252.3 का स्कोर किया। चीनी शूटर शेंग लिहाओ ने 252.4 का स्कोर किया। अर्जुन को आखिरी शॉट पर जीत के लिए 10.7 की जरूरत थी, लेकिन उन्होंने 10.5 स्कोर किया। वह चीनी शूटर के स्कोर से महज 0.1 पॉइंट से पीछे रह गए। हंगरी के शूटर इस्तवान मार्टन पेनी ने 229.8 पॉइंट के साथ कांस्य पदक अपने नाम किया।

भारतीय खेल प्राधिकरण (साई) मीडिया ने खिलाड़ी पर गर्व जताते हुए सोशल मीडिया 'एक्स' पर लिखा कि अर्जुन बाबूता ने लीमा, पेरू में आईएसएसएफ विश्व कप 2025 में रजत पदक जीता। वह पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल के रोमांचक फाइनल में मौजूदा ओलंपिक चैंपियन चीन के शेंग लिहाओ से सिर्फ 0.1 अंक पीछे रहे। अर्जुन, आप पर बहुत गर्व है।

खालसा कॉलेज और इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ने हॉकी मुकाबले जीते

नई दिल्ली,(एजेंसी) : राजधानी के श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज ने पीएसपीबी चौथे बाबा दीप सिंह हॉकी और बास्केटबॉल टूनामेंट के तीसरे दिन के पुरुष वर्ग के हॉकी मैच में इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंसेज को 5-1 से हरा दिया।

खालसा कॉलेज की तरफ से विपिन मिश्रा ने 2 गोल और अंकित एवं अरबाज ने एक-एक गोल किया। इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंसेज के लिए पुलकित ने एकमात्र गोल किया। प्लेयर ऑफ मैच का अवार्ड खालसा कॉलेज के खिलाड़ी विपिन मिश्रा को मिला।महिला वर्ग के मैच में इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंसेज ने दिल्ली यूनिवर्सिटी एल्युमिना को 3-1 से हराया। विजेता टीम की तरफ से कंचन, अंचल और पिंकी ने गोल किया और दिल्ली यूनिवर्सिटी एल्युमिना की तरफ से एकमात्र गोल नीलम शर्मा ने किया। प्लेयर ऑफ द मैच अवार्ड इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंसेज की कंचन को मिला।

गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल पर धीमी ओवर गति के लिए लगा जुर्माना

नई दिल्ली, (एजेंसी) : इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) फ्रेंचाइजी गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल पर धीमी ओवर गति के कारण 12 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया गया है।आईपीएल ने इसको लेकर जारी बयान में बताया कि गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल पर उनकी टीम द्वारा अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ टाटा इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के मैच नंबर 35 के दौरान धीमी ओवर गति बनाए रखने के लिए जुमार्ना लगाया गया है। चूंकि यह आईपीएल की आचार संहिता के अनुच्छेद 2.22 के तहत उनकी टीम का इस सत्र का पहला अपराध था, जो न्यूनतम ओवर-रेट अपराधों से संबंधित है, इसलिए गिल पर 12 लाख रुपये का जुमार्ना लगाया गया है।गुजरात ने दर्ज की जीतअहमदाबाद के नरेंद्र मोदी क्रिकेट स्टेडियम में शनिवार को खेले गए इस मैच में गुजरात टाइटंस ने दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ सात विकेट से जीत दर्ज की थी। मैच में दिल्ली की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में आठ विकेट पर 203 रन बनाए थे। जवाब में जोस बटलर की 54 गेंदों पर 11 चौकों और चार छक्कों की मदद से नाबाद 97 रन की अहम पारी की बदौलत गुजरात की टीम ने 19.2 ओवर में तीन विकेट पर 204 रन बनाकर मैच जीत लिया।

जिला आर्म रेसलिंग प्रतियोगिता में आरएसडी एकेडमी ने मारी बाजी

मुरादाबाद, (एजेंसी) : रामगंगा विहार स्थित आरएसडी एकेडमी में आर्म रेसलिंग एसोसिएशन मुरादाबाद के अंतर्गत दो दिवसीय जिला आर्म रेसलिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें मुरादाबाद के 10 से अधिक स्कूलों के 150 से अधिक खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर आरएसडी अकैडमी स्कूल की टीम रही, वहीं दूसरे स्थान पर टाइनी टोट्स व तीसरे स्थान एसएस चिल्ड्रेन एकेडमी की टीम रही।आर्म रेसलिंग एसोसिएशन मुरादाबाद के सचिव मोहित चौधरी ने बताया कि प्रतियोगिता के दूसरे दिन रविवार को बालक वर्ग में प्रतियोगिता कराई गई। जिसमें अंडर 18 वर्ष में 50 किलो वर्ग में दाएं हाथ से शिव कुमार ने स्वर्ण, भविष्य ने सिल्वर व जैन मलिक ने कांस्य पदक जीता, बाएं हाथ से उजैब अली ने स्वर्ण पदक और नैतिक पवार ने रजत पदक जीता। अंडर 55 किलो वर्ग में दाएं हाथ से आर्यन त्यागी ने स्वर्ण, यथार्थ ने रजत पदक व नोमान हुसैन ने कांस्य पदक जीता, बाएं हाथ से शौर्य धारीवाल ने स्वर्ण पदक जीता, अंडर 60 किलो वर्ग में आर्यन शर्मा ने स्वर्ण, विराट सक्सेना ने रजत व रोहन घोष ने कांस्य पदक जीता। अंडर 65 किलो में उदय सैनी ने स्वर्ण पदक और रोहन पल ने रजत पदक जीता। अंडर 70 किलो वर्ग में अक्षय सिंह ने स्वर्ण, राहुल ने रजत व भविष्य शर्मा ने कांस्य पदक जीता, बाएं हाथ से अक्षय सिंह ने स्वर्ण और श्रेष्ठ मिश्रा ने रजत पदक जीता, अंडर 80 किलो वर्ग में शुभांग सिंह ने स्वर्ण पदक जीता। अंडर 18 वर्ष बालक वर्ग में अंडर 50 किलो वर्ग बोथ हैंड में सूर्यांश ने स्वर्ण पदक और लक्ष्य ने रजत पदक जीता, अंडर 55 किलो में वैभव सक्सेना ने स्वर्ण पदक जीता, अंडर 60 किलो में जववाद अहमद स्वर्ण पदक और बाएं हाथ से उमंश चौधरी ने स्वर्ण पदक जीता, अंडर 65 किलो में मोहम्मद शुऐब ने स्वर्ण पदक और मोहम्मद जैद ने रजत पदक जीता, बाएं हाथ से रतनजीत सिंह ने स्वर्ण और मोहम्मद जैद ने रजत पदक जीता, अंडर 70 किलो में शिवम प्रजापति ने स्वर्ण पदक और यश रस्तोगी ने रजत पदक जीता।

आईपीएल 2025: बेंगलुरु ने पंजाब को 7 विकेट से हराया, कोहली और पडिक्कल ने जड़ा अर्धशतक

चंडीगढ़ , (एजेंसी) : चंडीगढ़ के महराजा यदविंद्र सिंह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में रविवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 सीजन का 37वां मुकाबला रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु (आरसीबी) और पंजाब किंग्स के बीच खेला गया। मुकाबले में बेंगलुरु की टीम ने पंजाब की टीम को सात विकेट से हरा दिया।

मैच में टॉस हारकर पहले बल्लेबाजी करते हुए पंजाब किंग्स ने 20 ओवर में छह विकेट पर 157 रन बनाए। जवाब में रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने 18.5 ओवर में 3 विकेट पर 159 रन बनाते हुए जीत दर्ज कर ली। विराट कोहली 73 रन बनाकर नाबाद रहे। देवदत्त पडिक्कल ने 61 रन की पारी खेली। इस जीत के साथ आरसीबी के आठ मैचों में पांच जीत और तीन हार के साथ 10 अंक हो गए हैं। टीम अंक तालिका में तीसरे नंबर पर पहुंच गई है। पंजाब की टीम के भी आठ मैचों में पांच जीत और तीन हार के साथ 10 अंक हैं, लेकिन नेट रनरेट में आरसीबी से पीछे होने के कारण वह चौथे नंबर पर है।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी बेंगलुरु का फिल सॉल्ट के रूप में पहला विकेट गिरा। सॉल्ट एक रन बनाकर आउट हुए। सॉल्ट का विकेट जल्दी गंवाने के बाद विराट कोहली और देवदत्त पडिक्कल ने पारी को आगे बढ़ाया। दोनों ने अच्छी बल्लेबाजी की और पावरप्ले के छह ओवर में एक विकेट पर टीम का स्कोर 54 रन पहुंचा दिया। मैच में पडिक्कल ने ताबड़तोड़ अंदाज में बल्लेबाजी और 30 गेंदों पर आईपीएल करियर का अपना 10वां अर्धशतक लगा दिया। पडिक्कल 13वें ओवर में बड़ा शॉट मारने के दौरान कैच आउट हुए। उन्होंने 35 गेंदों में पांच चौके और चार छक्कों की मदद से 61 रन की पारी खेली। उन्होंने विराट के साथ 103 रन की साझेदारी की। पडिक्कल के जाने के बाद विराट ने मोर्चा संभाल लिया और अपना एक और अर्धशतक जड़ दिया। विराट कोहली ने आईपीएल करियर का 59वां अर्धशतक लगाया। फिर 143 के स्कोर पर बेंगलुरु को तीसरा झटका लगा। कप्तान रजत पाटीदार कैच आउट हो गए। वह 12 रन बना सके। इसके बाद विराट कोहली और जितेश शर्मा ने 18वें ओवर में जीत सुनिश्चित की। विराट 54 गेंदों पर 73 रन बनाकर नाबाद रहे। उन्होंने अपनी पाकी में 7 चौके औक एक छक्का लगाया। जितेश शर्मा 11 रन बनाकर नाबाद रहे।

पंजाब की ओर से अर्शदीप सिंह, हरप्रीत बरार, युजवेंद्र चहल ने एक-एक विकेट लिया।

इससे पहले पंजाब किंग्स ने 20 ओवर में छह विकेट के नुकसान पर 157 रन बनाए। पहले बल्लेबाजी करने उतरी पंजाब को सलामी युवा जोड़ी प्रियांश आर्या और प्रभसिमरन सिंह ने अच्छी शुरूआत दिलाई। दोनों बल्लेबाजों ने शुरूआती चार ओवर में 41 रन जोड़ दिए। टीम का पहला विकेट पांचवें ओवर में गिरा। प्रियांश 15 गेंदों पर 22 रन बनाकर आउट हुए। फिर सातवें ओवर में प्रभसिमरन सिह भी पवेलियन लौट गए। प्रभसिमरन 17 गेंद में पांच चौके और एक छक्के की मदद से 33 रन बना सके। इसके बाद कप्तान श्रेयस अय्यर भी जल्दी आउट हो गए। श्रेयस ने 10 गेंद में छह रन बनाए। नेहल वढेरा रन आउट हो गए। वह पांच रन बना सके। पंजाब का पांचवां विकेट जोश इंगलिस के रूप में गिरा। इंगलिस ने 17 गेंद में 29 रन बनाए। फिर मार्कस स्टोइनिस क्लीन बोल्ड हुए। स्टोइनिस मात्र एक रन बना सके। आखिर में मार्को जानसेन और शशांक सिंह ने कुछ अच्छे शॉट खेले और पंजाब को 157 रन तक पहुंचाया। जानसेन 20 गेंद में 25 रन और शशांक 33 गेंदों में 31 रन बनाकर नाबाद रहे।आरसीबी की ओर से क्रुणाल पांड्या और सुयश शर्मा ने दो-दो विकेट लिए। रोमारियो शेफर्ड को एक विकेट मिला।

15 रन चाहिए या 20, मैं अपने यॉर्कर पर भरोसा करता हूं : आवेश खान

जयपुर, (एजेंसी) : लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) को अंतिम ओवर में नौ रन बचाकर राजस्थान रॉयल्स (आरआर) पर दो रन से जीत दिलाने के बाद, तेज गेंदबाज आवेश खान ने कहा कि उन्हें उस समय यॉर्कर को अच्छी तरह से निष्पादित करने की अपनी क्षमता पर भरोसा था।

सवाई मानसिंह स्टेडियम में, आरआर 17 ओवर में 156/2 रन बना चुके थे, और मैच जीतने के लिए तैयार थे, क्योंकि समीकरण 18 गेंदों पर 25 रन का था। लेकिन आवेश ने अपनी पिन-पॉइंट यॉर्कर के साथ, सेट बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल और रियान पराग को आउट किया, और अंतिम ओवर में शिमरॉन हेटमायर को आउट किया और एलएसजी के लिए एक यादगार जीत पूरी की, जिससे आरआर के घरेलू दर्शक हैरान रह गए।

मैं उस समय सिर्फ निष्पादन पर ध्यान केंद्रित करता हूं। जब हम बाहर से देखते हैं, यहां तक कि हम तनाव महसूस करते हैं; लेकिन जब मैं खेल रहा होता हूं, तो मुझे कभी भी यह तनाव महसूस नहीं होता कि मैं छक्का या चौका खा जाऊंगा।

मैं सिर्फ निष्पादन पर ध्यान केंद्रित करता हूं: मैं जो भी गेंद फेंकने का फैसला करता हूं, उस पर 100% ध्यान देता हूं। ज्यादातर यह यॉर्कर होती है; चाहे 15 रन की जरूरत हो या 20 रन की, मैं यॉर्कर पर ही ध्यान केंद्रित करता हूं, और यह आईपीएल में बहुत महत्वपूर्ण है। जब आप पूरी तरह से मैच पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आप सिर्फ इस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि आप कहां गेंदबाजी करना चाहते हैं।

आवेश, जिन्होंने 3-37 विकेट लिए, ने कहा, ऐसा नहीं है कि आप इस गेंद पर विकेट लेना चाहते हैं या आप चाहते हैं कि बल्लेबाज डिफेंड करे या आप डॉट बॉल फेंकना चाहते हैं। जिस क्षण मैंने उसे (हेटमायर) ऑफ की ओर जाते देखा, मैंने स्टंप लाइन पर गेंद फेंकी, और सौभाग्य से गेंद हाथ में गई क्योंकि वह वहां एकमात्र फील्डर था।

उन्होंने 14 वर्षीय आरआर के बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी की भी प्रशंसा की, जिन्होंने अपने पहले मैच में 34 रनों की शानदार पारी खेली।आवेश ने निष्कर्ष निकाला, उनकी बल्लेबाजी देखकर अच्छा लगा। उन्होंने खुलकर बल्लेबाजी की। आम तौर पर, जब आप आईपीएल का पहला मैच खेलते हैं, तो आप नर्वस हो जाते हैं। लेकिन, उन्होंने पहली गेंद पर शार्दुल को छक्का जड़ दिया।जब कोई बल्लेबाज अपने पहले मैच में छक्का लगाता है, तो विरोधी

पंजाब किंग्स की सहमालिक प्रीति जिंटा को बुखार हुआ

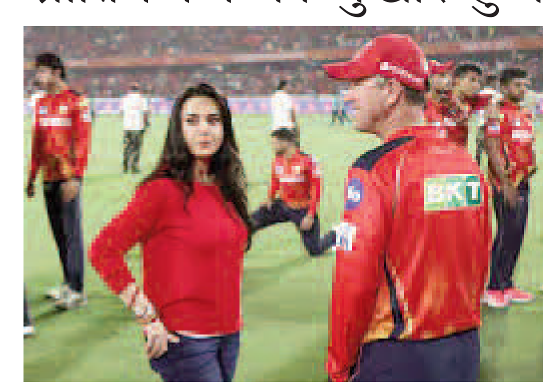

नई दिल्ली, (एजेंसी) : आईपीएल टीम पंजाब किंग्स की सहमालिक प्रीति जिंटा बीमार हो गयी हैं। प्रीति जिंटा के बीमार होने की खबरें प्रशंसकों ने सोशल मीडिया में साझा की है। प्रीति ने भी कहा है कि वह बीमार है पर मैच देखती रहेंगी और अपनी टीम का हौसला बढ़ाती रहेंगी। साथ ही मजाकिया अंदाज में कहा कि ये क्रिकेट का बुखार है। प्रीति जिंटा ने सोशल मीडिया में लिखा, मेरा मानना है कि लगातार यात्रा, अत्यधिक गर्मी और एयर कंडीशनिंग के संपर्क में आने और लगातार होटल के कमरे बदलने की वजह से उन्हें बुखार हुआ है। साथ ही लिखा कि जब आप बीमार होते हैं और रात भर नींद नहीं आती है तो यह कभी भी अच्छा नहीं होता। उनकी टीम पंजाब किंग्स की बात करें तो इस सत्र में टीम ने श्रेयस अय्यर की कप्तानी में अच्छा प्रदर्शन किया है। अभी पंजाब किंग्स आईपीएल 2025 की अंक तालका में तीसरे स्थान पर है, उसने सात मुकाबलों में से पांच मुकाबलों में जीत दर्ज की है और वह प्लेऑफ की प्रबल दावेदार है।

साई किशोर को सिर्फ एक ओवर देने का जीटी का फैसला समझ से परे : अंबाती रायडू

नई दिल्ली, पूर्व भारतीय बल्लेबाज और कई बार आईपीएल खिताब जीत चुके अंबाती रायडू ने कहा कि वह गुजरात टाइटन्स (जीटी) की उस रणनीति को समझ नहीं पाए, जिसमें उन्होंने बाएं हाथ के स्पिनर आर साई किशोर को सिर्फ एक ओवर ही गेंदबाजी करने दी। हालांकि जीटी ने इस मैच में दिल्ली कैपिटल्स (डीसी) के खिलाफ सात विकेट से जीत हासिल की।

पिछले साल जब जीटी ने दिल्ली के अरुण जेटली स्टेडियम में डीसी से मुकाबला किया था, तब भी किशोर को सिर्फ एक ओवर (19वां ओवर) ही फेंकने दिया गया था। उस समय डीसी की ओर से बाएं हाथ के बल्लेबाज अक्षर पटेल और ऋषभ पंत क्रीज पर थे।

इस बार शनिवार को अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में जब दोपहर के समय जीटी और डीसी का मैच हुआ, तब भी साई किशोर को सिर्फ एक ओवर (20वां ओवर) ही दिया गया, जिसमें उन्होंने सिर्फ 9 रन दिए और आशुतोष शर्मा को आउट किया।

रायडू ने ईएसपीएनक्रिकइन्फो पर कहा, यह फैसला अजीब था। दोपहर का मैच था, पिच सूखी थी, और नई गेंद से स्पिन को थोड़ी मदद भी मिल सकती थी। ऐसे में उन्हें कम से कम एक ओवर पावरप्ले में और कुछ ओवर बीच के खेल में जरूर कराने चाहिए थे। इस टूनामेंट में वे अब तक जीटी के सबसे अच्छे स्पिनर रहे हैं, यहां तक कि राशिद खान से भी बेहतर गेंदबाजी की है। मुझे यह समझ नहीं आया कि उन्हें और ओवर क्यों नहीं दिए गए।

दक्षिण अफ्रीका के पूर्व खिलाड़ी और मुंबई इंडियंस के कोच रह चुके मार्क बाउचर ने भी रायडू की बात से सहमति जताई। उन्होंने कहा कि शायद जीटी की टीम ह्यमैच-अपह्न के चक्कर में फंस गई। यानी अक्षर पटेल जैसे बाएं हाथ के बल्लेबाज को देखकर किशोर को गेंद नहीं दी गई।

उन्होंने कहा, पिछली बार जब किशोर को अक्षर या पूरन जैसे बल्लेबाजों के सामने गेंदबाजी करनी पड़ी, तब उन्हें रन पड़े थे। शायद उसी अनुभव के कारण कप्तान ने उन्हें फिर मौका नहीं दिया। लेकिन जब आपके तीन मुख्य तेज गेंदबाज 10 से ज्यादा की इकोनॉमी से रन दे रहे हों, तब तो आपको एक अच्छे स्पिनर को जरूर आजमाना चाहिए।ह्व

बाबुता मामूली अंतर से स्वर्ण पदक से चूके, भारत पदक तालिका में तीसरे स्थान पर

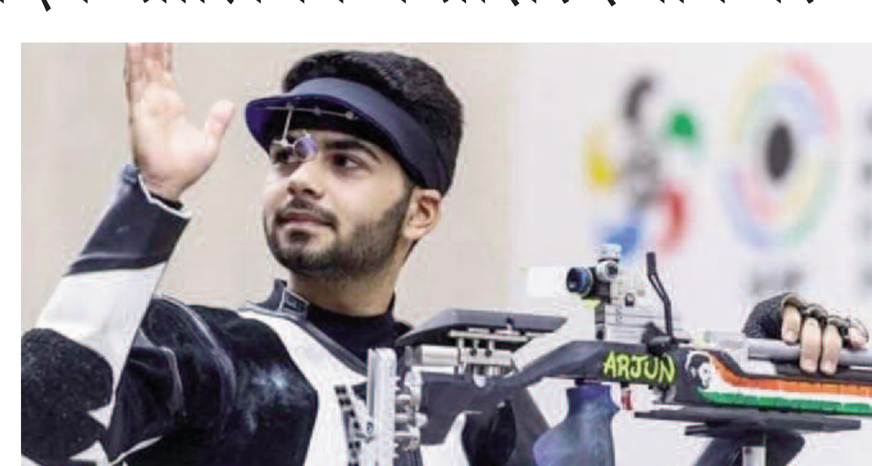

लीमा (पेरू) (एजेंसी) : पेरिस ओलंपिक में भाग ले चुके भारतीय निशानेबाज अर्जुन बाबुता यहां आईएसएसएफ विश्व कप में पुरुषों की 10 मीटर एयर राइफल स्पर्धा में मामूली अंतर से स्वर्ण पदक से चूक गए और उन्हें रजत पदक से संतोष करना पड़ा जबकि आर्या बोरसे महिलाओं की स्पर्धा में पांचवें स्थान पर रहीं।

पिछले साल पेरिस ओलंपिक में चौथे स्थान पर रहे बाबुता (252.3) रोमांचक फाइनल में मौजूदा ओलंपिक चैंपियन चीन के शेंग लिहाओ (252.4) से सिर्फ 0.1 अंक से हार गए।

विश्व कप में 40 से अधिक पदक जीत चुके हंगरी के निशानेबाज इस्तवान पेनी ने 229.8 के कुल स्कोर के साथ कांस्य पदक जीता।

फाइनल में कई स्टार निशानेबाज पहुंचे थे जिनमें मौजूदा विश्व चैंपियन और पेरिस ओलंपिक के रजत पदक विजेता स्वीडन के विक्टर लिंडग्रेन, नॉर्वे के जॉन-हरमन हेग और भारत के पूर्व विश्व चैंपियन रुद्राक्ष पाटिल शामिल थे।

भारत के पास दो पदक जीतने का मौका था, लेकिन दुर्भाग्य से तकनीकी खराबी के कारण पाटिल को जूरी ने अपना 11वां शॉट नहीं लेने दिया। इस तरह से यह भारतीय निशानेबाज पहले एलिमिनेशन चरण में हारकर आठवें स्थान पर रहा।

फाइनल में बाबुता और पाटिल दोनों ने समान 10.1 के साथ मजबूत शुरूआत की। पाटिल ने पिछले सप्ताह ब्यूनस आयर्स में विश्व कप में स्वर्ण पदक जीता था, लेकिन इस बार भाग्य उनके साथ नहीं था और उन्हें फाइनल के शुरू बाहर होना पड़ा।

पाटिल के बाहर हो जाने के बावजूद बाबुता शांत रहे और उन्होंने 14वें शॉट के बाद पहली बार बढ़त ले ली।

शेंग ने इसके बाद अच्छी वापसी की। बाबुता को एक समय 0.3 अंक की मामूली बढ़त हासिल थी लेकिन चीन के निशानेबाज में 10.9 अंक का निशाना साधकर बढ़त बना दी।

बाबुता का अंतिम स्कोर 10.5 फिर से बढ़त हासिल करने के लिए पर्याप्त नहीं था, क्योंकि शेंग ने 10.3 के साथ स्वर्ण पदक अपने नाम पक्का कर दिया।

इससे पहले क्वालीफिकेशन में बाबुता ने पहली रिले में 631.9 का मजबूत स्कोर बनाया, जबकि शेंग ने 635.0 के साथ सहजता से शीर्ष स्थान हासिल किया।

पाटिल ने दूसरी रिले में 632.0 का स्कोर बनाकर ग्रुप का नेतृत्व किया और कुल मिलाकर तीसरा स्थान हासिल किया।

भारत के हृदय हजारिका मामूली अंतर से फाइनल में जगह बनाने से चूक गए और 629.3 के स्कोर के साथ 10वें स्थान पर रहे।

आईएसएसएफ विश्व कप सर्किट के दूसरे चरण में 10 मीटर एयर राइफल महिला स्पर्धा में आर्या ने शनिवार को 633.9 का शानदार स्कोर बनाकर पांचवें स्थान पर रहकर फाइनल के लिए क्वालीफाई किया।

वह मौजूदा जूनियर विश्व चैंपियन और स्वर्ण पदक विजेता चीन की वांग ज़िफेई से पीछे रहीं। चीन की निशानेबाज ने इस दौरान तीन विश्व रिकॉर्ड बनाए।

आर्या 24 शॉट के फाइनल के 18वें शॉट के बाद बाहर हो गईं। उनका स्कोर 188.1 था। चीन ने इस स्पर्धा में तीनों पदक जीते। हान जिया ने रजत जबकि फैन ज़िनी ने कांस्य पदक जीता।

चीन ने इस तरह से तीन स्वर्ण, तीन रजत और चार कांस्य पदक के साथ पदक तालिका में शीर्ष पर अपनी स्थिति मजबूत की। भारत अब दो स्वर्ण, दो रजत और एक कांस्य के साथ पदक तालिका में तीसरे स्थान पर है। उसने दूसरे स्थान पर काबिज अमेरिका से एक स्वर्ण पदक कम जीता है।

पुरुष ट्रैप में अनुभवी जोरावर संधू और महिलाओं की स्पर्धा में प्रगति दुबे ने 25-25 के पहले राउंड में शानदार शुरूआत की।

जोरावर तीन राउंड के बाद 70 के स्कोर के साथ 21वें स्थान पर जबकि उनकी टीम के साथी पृथ्वीराज टोंडिमन और लक्ष्य श्योराण 69 के स्कोर के साथ क्रमश 24वें और 25वें स्थान पर हैं।

महिलाओं में राष्ट्रीय चैंपियन भव्या त्रिपाठी 69 (24,22,23) अंकों के साथ भारतीयों में सर्वश्रेष्ठ सातवें स्थान जबकि प्रगति 68 अंकों के साथ नौवें स्थान पर हैं। एक अन्य भारतीय खिलाड़ी नीरू 18वें स्थान पर हैं।

संक्षिप्त खबरें

अधीनस्थ विधान संबंधी संसदीय स्थायी समिति के सदस्य सिक्किम पहुंचे, 26 अप्रैल तक रहेंगे दौरे पर

गंगटोक, (एजेंसी): राज्यसभा सदस्य मिलिंद देवड़ा के नेतृत्व में अधीनस्थ विधान संबंधी संसदीय स्थायी समिति के सदस्य रविवार शाम को सिक्किम पहुंचे। समिति के सदस्य 26 अप्रैल तक सिक्किम के दौरे पर रहेंगे।

सांसद देवड़ा और समिति सदस्यों का आज रंगपो स्थित पर्यटक सुविधा केंद्र में भारतीय स्टेट बैंक और विभिन्न विभागों के अधिकारियों ने स्वागत किया। इस यात्रा के दौरान संसदीय स्थायी समिति के सदस्य विभिन्न मंत्रालयों के प्रतिनिधियों और राज्य सरकार के प्रतिनिधियों से बैठक करेंगे।

यूएई में सोमवार से होगा वायु सेनाओं का बहुराष्ट्रीय हवाई युद्ध अभ्यास 'डेजर्ट फ्लैग'

भारतीय वायु सेना मिग–29 और जगुआर विमानों के साथ हिस्सा लेगी

नई दिल्ली, (एजेंसी): संयुक्त अरब अमीरात के अल धफरा एयर बेस पर सोमवार से एक दर्जन देशों की वायु सेनाओं के बीच बहुराष्ट्रीय हवाई युद्ध अभ्यास 'डेजर्ट फ्लैग' शुरू होगा। इस हवाई अभ्यास में हिस्सा लेने के लिए भारतीय वायु सेना की टुकड़ी रविवार को यूएई पहुंच गई है। इस अभ्यास में भारतीय वायु सेना मिग-29 और जगुआर विमानों के साथ हिस्सा ले रही है।

वायु सेना के मुताबिक एक्सरसाइज डेजर्ट फ्लैग यूएई वायुसेना की ओर से आयोजित बहुराष्ट्रीय अभ्यास है, जिसमें भारतीय वायुसेना के अलावा ऑस्ट्रेलिया, बहरीन, फ्रांस, जर्मनी, कतर सऊदी अरब, कोरिया गणराज्य, तुर्की, यूएई, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका की वायु सेनाओं की टुकड़ियां भाग लेंगी। यह अभ्यास 21 अप्रैल से 08 मई के बीच होगा।

इस अभ्यास का उद्देश्य दुनिया की कुछ सबसे सक्षम वायु सेनाओं के साथ परिचालन ज्ञान और सर्वोत्तम प्रथाओं के आदान-प्रदान के साथ जटिल और विविध लड़ाकू अभियानों को अंजाम देना है। इस तरह के अभ्यासों में भाग लेने से आपसी समझ और अंतर-संचालन क्षमता बढ़ती है और भाग लेने वाले देशों के बीच सैन्य सहयोग मजबूत होता है। भारतीय वायुसेना की भागीदारी इस अभ्यास में मित्र देशों के साथ रक्षा संबंधों और अंतर-संचालन क्षमता को मजबूत करने की भारत की प्रतिबद्धता दशार्ती है।

जयराम रमेश का भाजपा पर हमला, न्यायपालिका पर भाजपा सांसदों की टिप्पणियों की आलोचना की

नई दिल्ली, (एजेंसी): कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने भारत के मुख्य न्यायाधीश पर भाजपा के दो सांसदों की गई आपत्तिजनक टिप्पणियों को लेकर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की है। उन्होंने भाजपा अध्यक्ष ने इन टिप्पणियों से दूरी बनाने को डैमेज कंट्रोल करार दिया और कहा कि इससे कोई मूर्ख नहीं बनेगा।

रमेश ने रविवार को अपने एक ट्वीट में लिखा, भारत के मुख्य न्यायाधीश पर भाजपा के दो सांसदों की आपत्तिजनक टिप्पणियों से भाजपा के निवर्तमान अध्यक्ष की दूरी बनाए जाने का कोई विशेष अर्थ नहीं है। ये सांसद घृणा फैलाने वाले बयानों को बार-बार दोहराते रहने के लिए कुख्यात हैं। उन्होंने आगे कहा, भाजपा अध्यक्ष का स्पष्टीकरण डैमेज कंट्रोल के अलावा कुछ नहीं है। जयराम रमेश ने भाजपा अध्यक्ष की चुप्पी पर सवाल उठाते हुए कहा कि क्या उनके पास न्यायपालिका पर की जा रही अस्वीकार्य टिप्पणियों पर कोई मत नहीं है।

रमेश ने यह भी पूछा, अगर संविधान पर इस तरह के निरंतर हमलों को प्रधानमंत्री मोदी की मौन स्वीकृति नहीं है, तो इन सांसदों के खिलाफ कड़े कदम क्यों नहीं उठाए जा रहे हैं? क्या नड्डा ने इन्हें कारण बताओ नोटिस दिया

मणिपुर का पीएलए उग्रवादी गुवाहाटी में गिरफ्तार

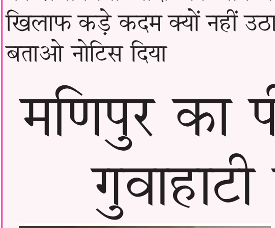

गुवाहाटी, (एजेंसी):गुवाहाटी पुलिस ने एक संयुक्त अभियान के तहत मणिपुर की प्रतिबंधित उग्रवादी संगठन पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के एक सक्रिय सदस्य को गिरफ्तार किया। उस पर मणिपुर में कई उग्रवादी कार्रवाइयों में शामिल होने का संदेह है।

गिरफ्तार किए गए उग्रवादी की पहचान मणिपुर के काकचिंग जिले निवासी 31 वर्षीय मयंगलंबम बॉबी सिंह के रूप में हुई है। वह गुवाहाटी के पलटन बाजार स्थित एक होटल में छिपा हुआ था। सूत्रों के अनुसार, वह इससे पहले बेहारबाड़ी के एक अन्य होटल में रुका हुआ था। इस कार्रवाई को बशिष्ठ पुलिस थाने द्वारा गजराज इंटेलिजेंस की सहायता से अंजाम दी गई।

गुवाहाटी पुलिस के डीसीपी (ईस्ट) मृणाल डेका ने रविवार को बताया कि सिंह मणिपुर में हथियारबंद गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल था। फिलहाल वह पुलिस हिरासत में है और उससे पूछताछ जारी है। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि आरोपित के अन्य उग्रवादियों से संबंधों की भी जांच की जा रही है। जांच के दौरान और भी गिरफ्तारियां हो सकती हैं।

वक्फ बोर्ड के कथित ट्रस्टियों पर 20 साल से किराया जमा नहीं कराने पर मुकदमा, 5 आरोपित गिरफ्तार

करीब 100 करोड़ रुपये की सम्पत्ति के निजी उपयोग का आरोप

अहमदाबाद, (एजेंसी): अहमदाबाद के जमालपुर क्षेत्र के कांच की मस्जिद और शाह बडा कासम ट्रस्ट में कथित ट्रस्टियों ने अवैध निर्माण कर करीब 20 साल तक किराया वसूली की। यह राशि वक्फ बोर्ड में जमा नहीं कराने के आरोप में पुलिस ने सलीम खान समेत 5 आरोपितों को गिरफ्तार किया है। आरोपितों ने वक्फ बोर्ड और अहमदाबाद म्यूनिसिपल कॉरपोरेशन (एएमसी) की ओर से दी गई जमीन पर अवैध दुकान और मकान बनाकर लाखों रुपये किराए के तौर पर वसूले। प्राथमिकी के अनुसार पांचों आरोपित वक्फ बोर्ड के ट्रस्टी नहीं होने के बावजूद लोगों से किराया वसूला करते थे।जानकारी के अनुसार जमालपुर कांच की मस्जिद के पास रहने वाला मोहम्मद रफीक अंसारी ने गायकवाड हवेली स्थित पुलिस थाने में इस संबंध में प्राथमिकी दर्ज कराई है। प्राथमिकी के अनुसार शिकायतकर्ता मोहम्मद रफीक अंसारी ने बताया कि वह वर्षों से कांच की मस्जिद ट्रस्ट की सम्पत्ति में रहता है। ट्रस्ट के सभी पुराने ट्रस्टियों की मौत हो चुकी है। मस्जिद ट्रस्ट में मस्जिद से सटी जमीन का प्लॉट है। वर्षों पहले इस जमीन को ट्रस्टियों ने एएमसी को सौंपी थी। एएमसी को इस जमीन पर स्कूल बनाना था। वर्ष 2001 में भूकंप के समय स्कूल का भवन जर्जर हो गया था। इसका गलत लाभ लेते हुए वर्ष 2009 में कथित ट्रस्टियों ने स्कूल का भवन तोड़कर वहां दूसरा उर्दू स्कूल नहीं बनाया। इस जगह पर 10 दुकानें बना दी गई। सलीम खान ने सौदागर कंस्ट्रक्शन नाम से ऑफिस खोला और अन्य 9 दुकानों को किराये पर दे दिया। दुकानों से किराए के रूप में जो आवक हुई उसे ना तो ट्रस्ट के अकाउंट में जमा कराया गया और न ही इसे एएमसी के पास जमा कराया गया। सलीम खान ने एएमसी और वक्फ बोर्ड के साथ धोखाधड़ी की।अहमदाबाद जोन 3 के प्रभारी डीसीपी भरत राठौड़ ने बताया कि आरोपितों ने कुल 100 करोड़ रुपये की सम्पत्ति पर लोगों से किराया वसूला है। किराए पर दिए गए मकानों से प्रति मकान 5 से 7 हजार रुपये और 10 दुकानों से प्रति दुकान 10 हजार किराया वसूला जाता था। आरोपितों ने वर्ष 2005 से ट्रस्ट का किराया वसूलते हुए अपने निजी कार्य में उपयोग किया। मामले में 5 आरोपितों को गिरफ्तार किया गया है। वक्फ बोर्ड में सलीम खान, महबूब खान समेत अन्य लोग ट्रस्टी नहीं थे, इसके बावजूद वे ट्रस्ट की सम्पत्ति से अवैध रूप से किराया वसूला करते थे। इन कथित ट्रस्टियों ने वर्ष 2005 से ट्रस्ट की सम्पत्ति के 25 से 30 दुकान, 200 मकान और दो अवैध 6 मंजिला अपार्टमेंट भी बनाए थे। इन सभी का वे खुद के लिए उपयोग करते थे।

आरोप के अनुसार शाह बडा कासिम ट्रस्ट की एक दानपेटी भी है, इसमें हर महीने 50 हजार रुपये आवक होती है। यह आवक भी कथित ट्रस्टी ले लेते थे। जानकारी के अनुसार मुख्य आरोपित सलीम खान के विरुद्ध पहले से हत्या समेत अन्य आपराधिक मामले दर्ज हैं। आरोपित ने 23 जुलाई, 2024 को गलत शपथपत्र से ट्रस्टी होने की जानकारी बोर्ड में पेश की थी। सलीम के अलावा मोहम्मद यासर शेख, मेहमूद खान पठाण, फैज मोहम्मद जोबदार, शाहीद अहेमद शेख के नाम भी आरोपितों में शामिल हैं।

ट्रैफिक कंजेशन के चलते दिल्ली की फ्लाइट जयपुर डायवर्ट, मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने जताई नाराजगी

जयपुर, (एजेंसी): दिल्ली एयरपोर्ट पर शनिवार रात हवाई यातायात अधिक होने के कारण इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट को जयपुर के लिए डायवर्ट किया गया। जयपुर में यह फ्लाइट देर रात 12:20 बजे लैंड हुई। इस विमान में जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और उपराज्यपाल मनोज सिन्हा अपने परिवार के साथ सवार थे। जयपुर पहुंचने के बाद सभी यात्री लगभग ढाई घंटे तक दोबारा उड़ान भरने का इंतजार करते रहे।

दिल्ली एयरपोर्ट से जयपुरके लिए डायवर्ट की गई इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट (6ए-5054) को एयर ट्रैफिक कंट्रोल यूनिट ने जयपुर एयरपोर्ट पर रात 12:20 बजे लैंड कराया गया। यहां भी यात्रियों को लगभग ढाई घंटे तक रोका रखा गया। इस घटनाक्रम से नाराज जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर लिखा, दिल्ली एयरपोर्ट बकवास है (मेरी फ्रेंच भाषा के लिए क्षमा करें, लेकिन मैं विनम्र होने के मूड में नहीं हूं)। जम्मू से हवा में तीन घंटे बिताने के बाद, हमें जयपुर डायवर्ट कर दिया गया। मैं यहां रात 1 बजे विमान की सीढ़ियों पर ताजी हवा ले रहा हूं। मुझे नहीं पता कि हम यहां से किस समय निकलेंगे। बाद में उन्होंने एक और पोस्ट में जानकारी दी कि वे सुबह 3 बजे के बाद दिल्ली पहुंचे।

उल्लेखनीय है कि श्रीनगर से उड़ान भरने वाली यह फ्लाइट शाम 9:25 बजे दिल्ली के लिए रवाना हुई थी। निर्धारित समय के अनुसार इसे रात 10:30 बजे दिल्ली पहुंचना था, लेकिन व्यस्त एयर ट्रैफिक के चलते विमान को लगभग दो घंटे तक हवा में चक्कर काटने पड़े। रात 12:20 बजे फ्लाइट को जयपुर में उतारा गया। लगभग दो घंटे बाद यानी रात 2:15 बजे फ्लाइट दोबारा दिल्ली के लिए रवाना हुई और यात्री अंततः सुबह 3 बजे के बाद दिल्ली पहुंचे।

शिमला में बारिश और ओलावृष्टि से लौटी ठंड, 22 से खुलेगा मौसम

शिमला, (एजेंसी): हिमाचल प्रदेश में रविवार को मौसम के कड़े तेवर देखने को मिले। गर्मी के बीच शिमला समेत राज्य के कई हिस्सों में तेज बारिश और ओलावृष्टि हुई, जिससे तापमान में गिरावट दर्ज की गई और ठंड का असर एक बार फिर लौट आया। शिमला शहर में सुबह से ही आसमान में बादल छाए रहे और दोपहर को तेज हवाओं के साथ बारिश शुरू हो गई। इस दौरान कई इलाकों में बड़े आकार के ओले भी गिरे।

मौसम के इस अचानक बदले मिजाज से स्थानीय लोग ठिठुरने लगे, जबकि गर्मी से राहत की उम्मीद लेकर आए पर्यटक भी ठंड से परेशान दिखे। राजधानी शिमला का अधिकतम तापमान रविवार को सामान्य से काफी नीचे चला गया है। बारिश के चलते शहर की सड़कों पर फिसलन हो गई और बाजारों में गर्म कपड़ों की मांग एक बार फिर बढ़ गई। सैलानी दुकानों में स्वेटर और जैकेट खरीदते नजर आए। पहाड़ों की रानी शिमला में ओलावृष्टि के साथ तेज हवाएं भी चलीं, जिससे जनजीवन प्रभावित हुआ।

राज्य के ऊपरी इलाकों में बर्फबारी का सिलसिला भी जारी रहा। लाहौल-स्पीति और किन्नौर की ऊंची चोटियों पर ताजा हिमपात हुआ है। लाहौल-स्पीति के हंसा क्षेत्र में रविवार को 5 सेंटीमीटर तक बर्फबारी दर्ज की गई। वहीं किन्नौर और कुल्लू के ऊपरी भागों में भी बर्फ की सफेद चादर बिछ गई है। मौसम विभाग के मुताबिक किन्नौर के ताबो में 50 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तूफानी हवाएं चलीं, जबकि शिमला के कुफरी में यह रफ्तार 42 किलोमीटर प्रति घंटा रही।इसके अलावा कुल्लू के कोठी में 30, केलंग में 10, पूह में 9, कुकुमसेरी में 8, मनाली में 6, सांगला में 4, कांगड़ा, धर्मशाला व भरमौर में 3-3 मिलीमीटर वर्षा रिकॉर्ड की गई है।

बेमौसमी बारिश और ओलावृष्टि से किसानों और बागवानों को भारी नुकसान होने की आशंका है। राज्य के मैदानी जिलों में पकी हुई गेहूं की फसल बारिश की वजह से बर्बाद हो सकती है। गेहूं की कटाई का कार्य भी बाधित हो रहा है जिससे किसानों की चिंता बढ़ गई है। कई खेतों में कटाई के लिए तैयार फसल जमीन पर बिछ गई है। पर्वतीय जिलों में सेब की फ्लॉवरिंग पर इस मौसम ने बुरा असर डाला है।

ब्राह्मण रक्षा मंच ने फिल्म 'फुले' का किया विरोध, नफरती दृश्य हटाने की मांग

नई दिल्ली, (एजेंसी):ब्राह्मण रक्षा मंच ने हाल ही में रिलीज हुई फिल्म 'फुले' में ब्राह्मण विरोधी नफरत फैलाने वाले दृश्यों को तुरंत हटाने की मांग की है। रविवार को मंच के प्रमुख सदस्यों ने एकत्र होकर इस फिल्म का पुरजोर विरोध किया और कहा कि जब तक ये दृश्य हटाए नहीं जाते या फिल्म का प्रसारण रोका नहीं जाता, तब तक ब्राह्मण समाज चैन से नहीं बैठेगा। दिल्ली के प्रेस क्लब में आयोजित पत्रकार वार्ता में मंच के महन्त सतीश दास जी महाराज, महन्त भोला गिरि जी महाराज, और अन्य सदस्यों ने फिल्म पर आपत्ति जताते हुए बताया कि इस फिल्म को ज्योतिबा फुले के नाम पर ब्राह्मण समाज के गौरवशाली इतिहास को धूमिल करने की साजिश के रूप में देखा जा रहा है। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को ज्ञापन देकर फिल्म के प्रसारण पर रोक लगाने की मांग की है। वक्ताओं ने कहा कि ब्राह्मण समाज ने हमेशा समाज के सभी वर्गों को एक साथ लाने का कार्य किया है और यह अपमान केवल ब्राह्मण समुदाय ही नहीं, बल्कि संपूर्ण सनातन संस्कृति के लिए स्वीकार्य नहीं है। उनका कहना था कि फिल्म में ब्राह्मणों को गलत तरीके से प्रस्तुत करके दशार्या गया है कि वे महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखने का प्रयास कर रहे हैं, जो पूरी तरह से गलत है। वक्ताओं ने कहा, ब्राह्मणों ने ज्योतिबा फुले को 20 स्कूल खोलने में मदद की थी और वे खुश थे। जब फुले ने सत्य शोधक समाज खोला तो ब्राह्मण वर्ग ही इसके स्तंभ थे।

ब्राह्मण रक्षा मंच ने स्पष्ट किया कि सामाजिक सद्भाव को बिगाड़ने वाली फिल्मों पर रोक लगनी चाहिए। उन्होंने जोर देकर कहा कि इस फिल्म के माध्यम से नफरत और सामाजिक कुप्रथाओं को बढ़ावा देने का प्रयास किया गया है, जो समाज के लिए हानिकारक है। मंच ने फिल्म के खिलाफ अपने आंदोलन को जारी रखने का संकल्प लिया है।

केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान का ब्राजील यात्रा में कृषि सहयोग को नई दिशा देने पर जोर

नई दिल्ली, (एजेंसी): केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान 21 अप्रैल को अपनी ब्राजील यात्रा से लौटेंगे। इस यात्रा के दौरान उन्होंने ब्रिक्स देशों के कृषि मंत्रियों की 15वीं बैठक में भाग लिया और भारत-ब्राजील के बीच कृषि व्यापार, तकनीक और नवाचार को मजबूत करने पर जोर दिया। चौहान ने भारत में सोया उत्पादन और निर्यात को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, ₹उनका लक्ष्य भारतीय किसानों को वैश्विक स्तर की तकनीक का लाभ दिलाना है। छोटे किसानों को सशक्त किए बिना वैश्विक खाद्य सुरक्षा का लक्ष्य अधूरा रहेगा।₹

बैठक में बायोफ्यूल, बायोएनर्जी, और कृषि मशीनरी के क्षेत्र में सहयोग पर चर्चा हुई, जिससे भारतीय किसानों को आधुनिक तकनीक मिल सकेगी। चौहान ने ब्राजील के कृषि मॉडल, मैकेनाइजेशन, सिंचाई और रिसर्च से सीखने की इच्छा जताई और दोनों देशों के बीच जलवायु अनुकूल सोयाबीन किस्मों पर ज्ञान साझा करने की बात कही। उन्होंने ब्रासीलिया में भारतीय दूतावास में 'एक पेड़ मां के नाम' पहल के तहत पौधरोपण अभियान में भी भाग लिया।

चौहान ने ब्राजील के कृषि एवं पशुधन मंत्री कार्लोस हेनरिक बैकेटा फेवरो और कृषि विकास मंत्री लुईज पाउलो टेक्सेरा के साथ द्विपक्षीय बैठकें की, जहां कृषि तकनीक, ग्रामीण विकास और खाद्य सुरक्षा के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर चर्चा हुई। चौहान ने कहा, ₹ब्राजील प्रवास के दौरान कई अनुभवों और तकनीकों से समृद्ध होने का अवसर मिला है, जिससे हम भारतीय कृषि में सुधार कर सकेंगे।₹ उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि भारत में सोया तेल का आयात होने के बावजूद, अब दोनों देश मिलकर सोयाबीन उत्पादन और प्रोसेसिंग में सहयोग करने की संभावनाएं तलाश रहे हैं।

कृषि मंत्रालय के अनुसार इस यात्रा से न केवल भारत-ब्राजील कृषि सहयोग को नई दिशा मिली है, बल्कि वैश्विक खाद्य सुरक्षा में भी योगदान करने की संभावना बढ़ी है। चौहान का यह प्रयास छोटे किसानों के सशक्तिकरण, कृषि नवाचार, और टिकाऊ विकास को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

प्रसिद्ध गायक अरिजीत सिंह ने किए भगवान महाकाल के दर्शन, सपत्नीक भस्म आरती में हुए शामिल

उज्जैन, (एजेंसी):बॉलीवुड इंडस्ट्री के प्रसिद्ध गायक अरिजीत सिंह रविवार सुबह उज्जैन पहुंचे। उन्होंने यहां महाकालेश्वर मंदिर पहुंचकर भगवान महाकाल के दर्शन कर पूजन अर्चन किया। अरिजीत सिंह सपत्नीक भगवान महाकाल की भस्म आरती में भी शामिल हुए। पूजन आकाश पुजारी ने सम्पन्न करवाया।

दरअसल, अरिजीत सिंह का शनिवार की रात इंदौर में लाइव कॉन्सर्ट हुआ। वे इंदौर में रात्रि विश्राम के बाद रविवार सुबह करीब चार बजे महाकालेश्वर मंदिर पहुंचे। वे यहां भस्म आरती में शामिल हुए। इसके बाद उन्होंने भगवान महाकाल की पूजा-अर्चना की। अरिजीत सिंह और उनकी पत्नी ने मंदिर की देहरी से दर्शन किए। आकाश पुजारी द्वारा पूजन-पाठ कर जल अर्पित किया गया। महाकाल मंदिर समिति की ओर से अरिजीत को दुपट्टा ओढ़ाकर सम्मानित किया गया।

अरिजीत सिंह लगभग दो घंटे तक नंदी हॉल में बैठकर भगवान महाकाल का जाप करते नजर आए। वे पूरे समय महाकाल की भक्ति में लीन रहे। इस दौरान उनकी पत्नी कोयल रॉय भी उनके साथ रहीं। अरिजीत मंदिर में बेहद साधारण वेशभूषा में नजर आए। उन्होंने भगवान महाकाल के नाम वाला कुर्ता पहन रखा था और मस्तक पर चंदन का तिलक लगाया हुआ था।

भांग, चन्दन और त्रिपुण्ड अर्पित कर बाबा महाकाल का हुआ विशेष श्रृंगार-

विश्व प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग भगवान महाकालेश्वर मंदिर में रविवार तड़के भस्म आरती के दौरान चार बजे मंदिर के पट खुलते ही पण्डे-पुजारी ने गर्भगृह में स्थापित सभी भगवान की प्रतिमाओं का पूजन कर भगवान महाकाल का जलाभिषेक और दूध,दही, घी, शक्कर फलों के रस से बने पंचामृत से पूजन किया। इसके बाद प्रथम घंटाल बजाकर हरि ओम का जल अर्पित किया गया। कपूर आरती के बाद भगवान के मस्तक पर भांग, चन्दन और त्रिपुण्ड अर्पित कर विशेष श्रृंगार किया गया।

श्रृंगार पूरा होने के बाद ज्योतिर्लिंग को कपड़े से ढंककर भस्म रमाई गई। भगवान महाकाल का भांग, ड्रायफ्रूट, चन्दन, आभूषण और फूलों से राजा स्वरूप में श्रृंगार किया गया। त्रिनेत्र धारी भगवान महाकाल को भस्म अर्पित करने के पश्चात शेषनाग का रजत मुकुट, रजत की मुण्डमाल और रुद्राक्ष की माला के साथ-साथ सुगन्धित पुष्प से बनी फूलों की माला अर्पित की। मोगरे और गुलाब के सुगंधित पुष्प भगवान महाकाल ने धारण किये। फल और मिष्ठान का भोग लगाया गया। भस्म आरती में बड़ी संख्या में पहुंचे श्रद्धालुओं ने बाबा महाकाल का आशीर्वाद लिया। महा निवार्णी अखाड़े की ओर से भगवान महाकाल को भस्म अर्पित की गई।

महाकालेश्वर मंदिर में रविवार को दो भक्तों ने विशेष भेंट चढ़ाई। दिल्ली से आए भक्त चंदन चावला ने मंदिर के पुजारी अर्पित शर्मा की प्रेरणा से भगवान महाकाल को 3064 ग्राम वजन का चांदी का मुकुट और दो नाग कुंडल अर्पित किए। वहीं, मुंबई से आईं नीलम नीतेश सिंह ने भगवान महाकाल को रजत अभिषेक पात्र दिया।

संक्षिप्त खबरें

शिवपुर गांव में बिजली बहाल ग्रामीणों ने जिला परिषद का जताया आभार

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

बलियापुर : घड़बड़ पंचायत के शिवपुर गांव में विद्युत ट्रांसफॉर्मर के खराब होने से ग्रामीणों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। हाल ही में क्षेत्र में हुई आंधी बारिश के दौरान ट्रांसफॉर्मर खराब हो गया था, जिससे गांव में बिजली की आपूर्ति ठप हो गई है और अंधेरा छाया हुआ है।गांव के वार्ड सदस्य कृष्णा बाउरी ने जिला परिषद सदस्य उषा महतो को इसकी सूचना दी है, जिससे जल्द से जल्द समस्या का समाधान हो सके। ग्रामीणों को बिजली नहीं होने से कई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, और वे जल्द से जल्द बिजली की आपूर्ति बहाल होने की उम्मीद कर रहे हैं। जिला परिषद सदस्य उषा महतो ने बिजली विभाग के वरिष्ठ पदाधिकारी से शिकायत की, जिसके बाद कार्रवाई करते हुए खराब विद्युत ट्रांसफॉर्मर को बदलकर नया ट्रांसफॉर्मर लगाया गया। इससे गांव में बिजली की आपूर्ति बहाल हो गई और ग्रामीणों ने राहत की सांस ली। ग्रामीणों में इस समस्या के समाधान से हर्ष है और वे जिला परिषद सदस्य के प्रयासों की सराहना कर रहे हैं।

वनबंधु परिषद ने वनयात्रा कार्यक्रम आयोजित किया

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

बलियापुर : वन बंधु परिषद के एकल अभियान के तहत ग्रामीण शिक्षा संस्कृति और संगठनात्मक एकता को बढ़ावा देने के लिए रविवार को बलियापुर के खरिकाबाद गांव में वनयात्रा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान क्षेत्र एकल विद्यालय के बच्चों ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। बच्चों से संवाद एवं प्रेरक बातचीत हुई। इस दौरान शिक्षा की गुणवत्ता को लेकर प्रेरणादाई विचारों को साझा किया गया। कार्यक्रम में मौजूद लोगों ने मौके पर आयोजित सामूहिक वन भोज में शरीक हुए। लोगों ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम से आपसी संबंधों में आत्मीयता और संगठन की भावना को मजबूत बनाने में बल मिलता है। इस अवसर पर मुख्य रूप से उपस्थित अजय अग्रवाल, चंचल गोयल, नीरज अग्रवाल, नितिन हरोदिया आदि ने कार्यक्रम की काफी प्रशंसा किया।

जोड़ापोखर बस्ती में भोक्ता पूजा का आयोजन किया गया

200 वर्ष प्राचीन शिव मंदिर में धार्मिक आयोजन

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

जोड़ापोखर : जोड़ापोखर बस्ती स्थित 200 वर्ष प्राचीन शिव मंदिर प्रांगण में शुक्रवार से तीन दिवसीय भोक्ता पूजा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर भक्तों ने अपनी श्रद्धा और भक्ति का प्रदर्शन किया। भोक्ता खुटा से 225 भक्त ब्रत धारियों ने अपने शरीर पर कील के सहारे रस्सी बांधकर खूंटा पर परिक्रमा की। सबसे अधिक उम्र वाले 62 वर्षीय जगमा महतो और सबसे कम उम्र के 18 वर्षीय भक्तु महतो ने भी परिक्रमा में भाग लिया। भोक्ता पूजा के अवसर पर एक भव्य मेले का आयोजन किया गया, जिसमें श्रद्धालुओं ने भाग लिया और अपनी भक्ति का प्रदर्शन किया। यह आयोजन स्थानीय लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण धार्मिक और सांस्कृतिक अवसर है। क्षेत्र के विभिन्न गांवों के भक्तों ने भोक्ता पूजा में अपना करिश्मा दिखाया। इन गांवों में डिगवाडीह घटवार बस्ती, डुमरिया टाँड़, भौरा जहाज टाँड़, गौर खुटी, नुनुडीह और जीतपुर शामिल हैं। पुजारी की भूमिका में भूदेव पांडेय ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। सनातन बनर्जी और सुकुमार चक्रवर्ती ने भी पुजारी की भूमिका निभाई और पूजा को सफल बनाने में मदद की। भक्ता पुजा कमिटि में कमिटि अध्यक्ष संतोष महतो,मधुसूदन महतो,अशोक सिंह, अभिमन्यु महतो,बलराम महतो,रामप्रसाद सिंह, मंटु महतो,किशोर कुमार महतो,अनिल महतो,कालीचरण महतो,दीपक महतो,सुखदेव महतो, रामपदो महतो आदि थे।

भाकपा माले के राज्य सम्मेलन में धनबाद से शामिल होंगे 60 प्रतिनिधि

धनबाद : भाकपा माले का सातवां राज्य सम्मेलन बोकारो में 22, 23 व 24 अप्रैल को होना है. इसमें धनबाद से 60 प्रतिनिधि शामिल होंगे. इसके लिए टेंपल रोड पुराना बाजार स्थित मुख्य कार्यालय में राज्य से नियुक्त पर्यवेक्षक संदीप जायसवाल के देख-रेख में प्रतिनिधियों का चुनाव हुआ. जिला सह सचिव कार्तिक प्रसाद से प्राप्त जानकारी के अनुसार जिला में सदस्यों की संख्या 3047 है. इस आधार पर 61 प्रतिनिधि चुना जाना था. नामांकन के समयावधि में 60 उम्मीदवारों ने नामांकन कराया. किसीका नामांकन न रद्द हुआ और ना ही किसी ने नाम वापस लिया. मौके पर जिला सचिव बिंदा पासवान, जिला सहसचिव कार्तिक प्रसाद, सुभाष चटर्जी, नकुलदेव सिंह, विश्वजीत राय समेत चुने गए प्रतिनिधिगण उपस्थित थे। गोपाल प्रसाद महतो, सखी दास, मुकेश कुमार, अब्दुल रहीम अंसारी, सुरेश प्रसाद साहू, भैरव चंद्र महतो, मुकुंद महतो, रामेश्वर साव, गोपाल महतो, राजेश कुमार महतो, विजय पासवान, जयदीप बनर्जी, मोनाज अख्तर, मो. अख्तर हुसैन, किशोर लाला, गणेश चंद्र महतो, संतोष रवानी, देवरंजन दास, काशीनाथ मंडल, विमल महतो, मंगल महतो, श्यामपद महतो (बबलू), ध्रुवराज कुमार दास, मेनका मंडल, बादल चंद्र बाउरी, शिवानी दास, मुकेश बाउरी, मनोरंजन मल्लिक, रामजी यादव, अंजु चटर्जी, रोशन मिश्रा, सुरेश दास, गोपाल दास, नयन सूत्रधर, स्वपन कुमार गोराई, षष्ठीपद सिंह, नूर मोहम्मद अंसारी, मनोज महतो, नमिता महतो, गणेश बाउरी, विधान मंडल, पूर्णिमा कुमारी सोरेन, सागर मंडल, सहदेव सिंह, आगम राम, टूटून मुखर्जी, हरेंद्र सिंह, ईश्वर सोरेन, दीपक सिंह, सोहन किस्कू, मुमताज अंसारी, मागन बाउरी, काबिल शेख, हाफिजुर रहमान, लक्ष्मण प्रसाद, मो. जियाउद्दीन, वरुण गोस्वामी, कौशिक अश, दीपक चटर्जी, राजेंद्र पासवान चुने गये. इसके अलावा जिला से केंद्रीय व राज्य कमेटी के सदस्य पदेन में 27 प्रतिनिधि होंगे।

झारखंड हाईकोर्ट के जज ने बीसीसीएल अधिकारियों के साथ किया लोदना क्षेत्र का दौरा

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

झरिया : झारखंड हाईकोर्ट के जज संजय कुमार,बीसीसीएल डीपी मुरली कृष्णन रमैया, लिगल एडवाइजर डॉ शरद कुमार सिन्हा,झरिया सीओ मनोज कुमार,लोदना जीएम निखिल बी त्रिवेदी ने बीसीसीएल के अधिकारियों के साथ लोदना क्षेत्र का दौरा किया। इस दौरान उन्होंने कुजामा कोलियरी के देव प्रभा आउटसोर्सिंग परियोजना का अवलोकन किया। टीम ने सबसे पहले एन एस लोदना मंदिर में मां रक्षा काली की पूजा अर्चना की और कोयलांचल वासियों के लिए सुख, शांति और समृद्धि की कामना की। इसके बाद टीम देव प्रभा आउटसोर्सिंग परियोजना के व्यू प्वाइंट पहुंचकर माइंस का अवलोकन किया। जज संजय कुमार ने लोदना क्षेत्र के कुजामा परियोजना के माइंस में आग देखकर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि 50 वर्ष बाद इस क्षेत्र में आए हैं, लेकिन यहां कोई खास बदलाव नहीं दिख रहा है। उन्होंने सड़क, माइंस और स्थानीय लोगों की स्थिति में सुधार नहीं होने पर अफसोस जताया। माइंस में आग देखकर जज ने चिंता जताई। उन्होंने कहा कि 50 साल बाद भी क्षेत्र में कोई खास बदलाव नहीं हुआ है। जज ने कहा कि लोगों की आर्थिक और भौतिक स्थिति में सुधार नहीं हुआ है। जज ने कहा कि क्षेत्र में बदलाव और सुधार की जिम्मेदारी सरकार और बीसीसीएल की है।उन्होंने कहा कि क्षेत्र को साफ-सुथरा बनाने और लोगों के जीवन में सुधार लाने की आवश्यकता है। लोदना क्षेत्र में नागरिक एकता मंच के नेताओं और रैयत ग्रामीणों ने जज के दौरे की सूचना पर लोदना हाइ स्कूल प्रांगण में घंटों इंतजार किया, लेकिन टीम नहीं पहुंची। इससे लोगों में बीसीसीएल प्रबंधन के प्रति आक्रोश देखा गया। जज के दौरे की सूचना पर लोग लोदना हाइ स्कूल प्रांगण में पहुंचे थे। लेकिन टीम नहीं पहुंची, जिससे लोगों में आक्रोश फैल गया। नेता बिहारी लाल चौहान ने आरोप लगाया कि प्रबंधन ने साजिश के तहत इस क्षेत्र का दौरा नहीं कराया। उन्होंने कहा कि लोगों की मांगों को पूरा करने के लिए पुनर्वास किया जाना चाहिए। लोगों ने सरकार से अपनी मांगें पूरी करने की अपील की है। लोगों में बीसीसीएल प्रबंधन के प्रति आक्रोश देखा गया।

धनबाद-चंद्रपुरा-फुसरो रेलखंड में चला टिकट चेकिंग अभियान, 225 यात्री पकड़े गए, रेलवे ने वसूला 1.37 लाख जुर्माना

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

धनबाद : रेलवे द्वारा बिना टिकट यात्रा पर रोक लगाने के उद्देश्य से धनबाद मंडल में व्यापक टिकट चेकिंग अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में शनिवार को धनबाद की आईसीपी टिकट चेकिंग दस्ता-2 द्वारा धनबाद-चंद्रपुरा-फुसरो रेलखंड में विशेष रूप से सुनियोजित टिकट जांच अभियान संचालित किया गया।

अभियान के दौरान मेल/एक्सप्रेस ट्रेनों एवं स्टेशनों पर सक्रियता से चेकिंग की गई। जांच के दौरान कुल 225 यात्रियों को बिना टिकट अथवा अनुचित टिकट के साथ यात्रा करते हुए पकड़ा गया। इन यात्रियों से कुल 1,37,785 रुपये की राजस्व वसूली की गई। पकड़े गए यात्रियों को आगे से उचित टिकट लेकर ही यात्रा करने की सख्त हिदायत दी गई।

रेल प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि इस प्रकार के चेकिंग अभियानों का मुख्य उद्देश्य बिना टिकट या गलत टिकट के साथ यात्रा करने वालों पर प्रभावी अंकुश लगाना है, ताकि नियमित और ईमानदार यात्रियों को

किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े।

धनबाद मंडल द्वारा भविष्य में भी ऐसे अभियान नियमित रूप से जारी रहेंगे, जिससे रेलवे की राजस्व हानि को रोका जा सके और यात्रा प्रणाली को अधिक पारदर्शी एवं सुव्यवस्थित बनाया जा सके

अदानी सीमेंट सिंदरी में अग्निशमन सेवा सप्ताह का भव्य समापन हुआ

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

सिंदरी : अदानी सीमेंट सिंदरी में राष्ट्रीय अग्निशमन सेवा सप्ताह का समापन समारोह रविवार को एसीसी क्लब परिसर में आयोजित किया गया। इस अवसर पर संयंत्र के अधिकारियों, कर्मचारियों और उनके परिवारों के सदस्यों ने भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य शहीद अग्निशमन कर्मियों को श्रद्धांजलि देना और समाज में अग्नि सुरक्षा के प्रति जागरूकता फैलाना था। पूरे सप्ताह विभिन्न प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनमें उत्कमित उच्च विद्यालय और अदानी स्किल डेवलपमेंट सेंटर के छात्रों ने भाग लिया। समापन समारोह में फायर टीम ने उपस्थित जनसमूह को अग्नि से बचाव

और आपदा से निपटने की तैयारियों के बारे में जानकारी दी।संयंत्र प्रबंधक और सुरक्षा प्रमुख ने सभी को अग्नि सुरक्षा के प्रति सचेत रहने और आपात स्थिति में फायर सर्विस को तत्काल सूचना देने की अपील की।अदानी सीमेंट, सिंदरी में राष्ट्रीय अग्निशमन सेवा सप्ताह का समापन समारोह सफलतापूर्वक आयोजित किया गया, जिसमें अग्नि सुरक्षा और आपदा प्रबंधन के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार न्यायिक सुरक्षा परिषद ने की बैठक, पत्रकार पर हमले की कड़ी निंदा

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

जोड़ापोखर : अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार न्यायिक सुरक्षा परिषद की बैठक रविवार को फुशबंग्ला में आयोजित की गई। इस बैठक में अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार के पदाधिकारियों ने अपने संस्था के उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी।

महिला उत्पीड़न के मामलों में न्याय दिलाना।बाल उत्पीड़न के मामलों में न्याय दिलाना। समाज के दबे-कुचले वर्गों को न्याय दिलाना।समाज में छुपे भ्रष्ट लोगों को उजागर करना और सरकारी तंत्र में भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ आवाज उठाना। अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार न्यायिक सुरक्षा परिषद ने पत्रकार पर हमले की कड़ी निंदा की और उचित जांच की मांग की। परिषद ने कहा कि पत्रकारों पर हमले को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा और दोषियों को सजा दिलाने के लिए जांच की जाएगी।

बैठक में लिए गए निर्णयों से स्पष्ट होता है कि अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार न्यायिक सुरक्षा परिषद मानवाधिकारों की रक्षा और उनके हनन के खिलाफ लड़ने के लिए प्रतिबद्ध है। बैठक कि अध्यक्षता प्रदेश महासचिव शमीम शाह व संचालन वरिष्ठ जिला अध्यक्ष प्रवीण सिंह ने किया। मौके पर संजीत सिंह, अल्पसंख्यक मोर्चा के सचिव मोहम्मद शाहिद ,मोहम्मद शहाबुद्दीन इदरीसी, अल्पसंख्यक जिला सचिव मोहम्मद कलाम, महिला प्रकोष्ठ जिला उपाध्यक्ष अनीता सिंह, भिखारी रामधारी ,शहजादी खातून, रेखा कुमारी, गिरिजा देवी थे ।

सीआईएसएफ व अलकडीहा पुलिस ने सयुक्त छपामारी कर 25 टन अवैध कोयला किया जब्त, तस्कर फरार

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

झरिया : अलकडीहा ओपी क्षेत्र में कोयला चोरी की घटनाएं लगातार सामने आ रही हैं। रविवार को एंटीएसटी जीनगोरा प्रबंधन, सीआईएसएफ और अलकडीहा पुलिस की संयुक्त टीम ने पारबाद मैदान के पास छापेमारी की, जहां झाड़ियों में छिपाकर रखे गए 25 टन अवैध कोयले को जब्त किया गया। जप्त कोयले को 9 नंबर साइडिंग में गिरा दिया गया, जबकि कोयला तस्कर मौके से फरार हो गए। क्षेत्र में कोयला चोरी की घटनाएं बढ़ रही हैं, और पुलिस तथा सीआईएसएफ की भूमिका पर सवाल उठ रहे हैं। दिन के समय स्कूटर और मोटरसाइकिल से कोयला ढोया जाता है, जबकि रात में ट्रैक्टरों का उपयोग किया जाता है। हैरानी की बात है कि इन गतिविधियों को रोकने वाला कोई नहीं है। स्कूटर और मोटरसाइकिल से कोयला ढोया जाता है। लगभग आधा दर्जन ट्रैक्टर अवैध कोयला ढुलाई में सक्रिय हो जाते हैं। सीआईएसएफ और स्थानीय पुलिस दिखावे के लिए छापामारी करती

है, लेकिन तस्करों को पहले ही भनक लग जाती है। छापामारी के दौरान न तो कोयला चोर पकड़े जाते हैं और न ही कोयला तस्कर।

सीआईएसएफ की पेट्रोलिंग के लिए गाड़ियों की संख्या बढ़ाई

प्रबंधन ने कोयला चोरी पर अंकुश लगाने के लिए कई कदम उठाए हैं। उनका कहना है कि जहां भी सूचना मिलती है, छापामारी कराई जाती है और किसी भी हाल में कोयला चोरी नहीं होने दी जाएगी। इसके लिए सीआईएसएफ की पेट्रोलिंग बढ़ाई गई है और क्षेत्र में हाई रिजॉल्यूशन सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं। इसके अलावा, समय-समय पर ड्रोन से भी निगरानी की जाती है ताकि कोयला चोरी पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगाया जा सके। प्रबंधन का कहना है कि इन उपायों से कोयला चोरी पर प्रभावी ढंग से अंकुश लगाया जा सकेगा और क्षेत्र में सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकेगी।

आउटसोर्सिंग कंपनी का काम 6 दिनों से ठप, भारी नुकसान

कंपनी ने गेट पर चिपकाया नो वर्क नो पे का नोटिस

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

भौरा : पूर्वी क्षेत्र में एटी देवप्रभा आउटसोर्सिंग कंपनी का काम जहाजटाँड़ के ग्रामीणों द्वारा पिछले 6 दिनों से ठप करने से कंपनी और सरकार को भारी नुकसान हुआ है। कंपनी को लगभग 9 करोड़ रुपये और झारखंड सरकार को 3 करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है, जबकि आउटसोर्सिंग कंपनी को लगभग डेढ़ करोड़ रुपये का नुकसान उठाना पड़ा है। काम बंद होने के कारण कंपनी ने नो वर्क नो पे का नोटिस चिपका दिया है। आउटसोर्सिंग कंपनी में काम करने वाले मजदूरों ने रविवार से हंगामा शुरू कर दिया। कंपनी के निर्देशक कुंभनाथ सिंह, बीसीसीएल के प्रबंधक अजीत कुमार यादव और पूर्व पार्षद शिवकुमार यादव आउटसोर्सिंग कंपनी पहुंचे और मजदूरों को शांत करने का प्रयास किया। आउटसोर्सिंग कंपनी ने काम बंद होने के कारण नो वर्क नो पे का नोटिस चिपका दिया है। मजदूरों का कहना है कि जिस रास्ते को लेकर कंपनी का काम बंद कराया गया है, उसी रास्ते से प्रतिदिन सैकड़ों वाहन आते-जाते हैं। उनका सवाल है कि अगर रास्ता इतना खराब है, तो लोग कैसे आना-जाना कर रहे हैं। मजदूरों का आरोप है कि कुछ लोग अपनी नेतागीरी चमकाने के लिए काम बंद करा रहे हैं। उनका कहना है कि मामला सड़क का नहीं, बल्कि जमीन का है, लेकिन सड़क के नाम पर नेतागीरी की जा रही है। कंपनी के निदेशक कुंभनाथ सिंह ने कहा कि रास्ता खराब होने के कारण जो समस्याएं आई हैं, उन्हें सुलझाने के लिए कंपनी तैयार है। उन्होंने कहा कि सीमेंटेड रास्ता बनाने और लाइट की व्यवस्था करने के लिए भी कंपनी तैयार है। हालांकि, उन्होंने कहा कि दो दिन की बारिश के कारण सड़क पर दरारें आई थीं, लेकिन इससे कोई खतरा नहीं है।पार्षद शिवकुमार यादव ने आउटसोर्सिंग कंपनी के कर्मियों से शांति बनाए रखने की अपील की है। उन्होंने कहा कि किसी भी तरह का हंगामा करके कानून को अपने हाथ में नहीं लेना चाहिए। जिला प्रशासन जल्द ही इसका निष्कर्ष निकालेगी। मैनेजर अजीत कुमार यादव ने कहा कि घटना के दिन ही कंपनी सड़क को ठीक करने के लिए तैयार थी, लेकिन कुछ ग्रामीणों ने काम नहीं करने दिया।

सिंदरी विधायक चन्द्रदेव महतो ने खिलाड़ियों को किया पुरस्कृत

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

बलियापुर : उजाला स्पॉटिंग क्लब कुलुडीह बलियापुर द्वारा आयोजित तीन दिवसीय दिवा रात्रि क्रिकेट प्रतियोगिता के फाइनल मैच में रविवार को मंतोष क्लब पहाड़पुर ने बच्चा क्लब बंदरचुआ को 6 विकेट से पराजित कर ट्रॉफी पर कब्जा जमा लिया। बच्चा क्लब ने पहली पाली खेलते हुए 8 विकेट पर 75 रन बनाया जबकि जवाबी पारी में मंतोष क्लब ने 6 विकेट से मैच जीत लिया। मुख्य अतिथि सिंदरी के विधायक चंद्रदेव महतो ने विजेता एवं उपविजेता टीम को ट्रॉफी प्रदान किया। खिलाड़ियों को संबोधित करते हुए विधायक श्री महतो ने खेल के महत्व पर प्रकाश डाला। कहा कि खेल मनुष्य के शारीरिक एवं मानसिक विकास के लिए जरूरी है। मौके पर राजू महतो, सुनील कुमार महतो, दीपक महतो, क्रिकेट प्रतियोगिता को संपन्न कराने में आयोजन समिति उजाला क्लब के गंगाराम, दिनेश, विकास, प्रकाश, राजेश, अनीश, संदीप, गौतम, परेश, दीपक आदि उपस्थित थे।

Page 12_Page 3.qxd 4/20/2025 10:17 PM Page 1

संक्षिप्त खबर

लिंडसे क्लब एंड लाइब्रेरी ने शुरू की बांगला सिखाने की मुहिम

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

धनबाद : धनबाद लिंडसे क्लब एवं पुस्तकालय ने एक अनोखा प्रयास और प्रयोग रविवार को अपने पुस्तकालय के प्रांगण में शुभारंभ किया. जिसका शीर्षक है आवोल तावोल बांग्ला पढ़ो, बांग्ला लेखो. चुकि झारखंड के स्कूलों में बंगला सिखाने का चलन बिल्कुल समाप्त हो चुका है,जिसके कारण बंगला साहित्य के अपार संभावनाओं से आज के युवा समुदाय वंचित रह गये. धनबाद में एक बहुसंख्यक बंगाली समुदाय रहते है उसी बंगाली समुदाय के छोटे छोटे बच्चो को बंगला सिखाने के एक मुहिम चलाया जा रहा हे. इसके इलावा बहुत सारे हिन्दी भाषी बच्चो ने भी बंगला सिखने का आग्रह जताया है.कार्यक्रम सम्पूर्ण रुप से निःशुल्क किया गया. बंगाली समुदाय के ऐसे जानेमाने शिक्षक एवं शिक्षिका पढ़ा रहे है जो कि धनबाद के विभिन्न स्कूल एवं कॉलेज में कार्यरत रह चुके है.साथ ही स्कूल ऑफ आर्ट का उपयोगी आयोजन भी किया जा रहे है. जिसके तहत बहुत ही न्यूनतम शुल्क में हर बच्चो एवं युवाओं को अंकन सिखाने का आयोजन प्रत्येक रविवार सुबह 9 बजे से लिंडसे क्लब पुस्तकालय के प्रांगण में आयोजित किया जाएगा.

कतरास मारवाड़ी महिला समिति ने किया योग गुरु को सम्मानित

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

कतरास : कतरास मारवाड़ी महिला समिति द्वारा संचालित स्थायी योग केंद्र का एक साल पूरा होने पर रविवार को कतरास सत्संग भवन में एक सादे समारोह में पतंजलि योगपीठ हरिद्वार के मुख्य योग शिक्षक श्रीमति चंद्रावती दीदी एवं संतोष जी को दुप्पटा देकर सम्मानित किया.इस दौरान योग प्रायाणाम का अभ्यास किया गया. समारोह में चना ,मूंग गुड ,खीरा खिलाया गया. मौके पर समिति की अध्यक्ष रीतू अग्रवाल पूर्व अध्यक्ष प्रियंका चौधरी, राखी रजनी, सीता खंडेलवाल, कंचन, पूनम, सुधा, मंजू, नूतन, मंजू रीना जी सुधा साव आदि दर्जनों लोग उपस्थित थे.

धनबाद टाउन हॉल में वन नेशन वन इलेक्शन विषय पर संगोष्ठी आयोजित

सांसद ढुल्लू महतो ने कहा, देश के 140 करोड़ की जनता की मांग है कि एक देश एक चुनाव हो

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

धनबादः वन नेशन वन इलेक्शन विषय पर धनबाद के न्यू टाउन हॉल में फेडरेशन ऑफ धनबाद जिला चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज द्वारा आयोजित संगोष्ठी कार्यक्रम में सांसद ढूलू महतो ने कहा कि वन नेशन वन इलेक्शन की मांग देश के 140 करोड़ जनता की मांग है. इस मामले को वे संसद में भी उठाएंगे. इस मांग के पूरा होने से देश आर्थिक तौर से मजबूत होगा और समय की बचत होगी.देश विकास के पथ पर आगे बढ़ेगा.वन नेशन वन इलेक्शन के मुद्दे पर विपक्ष के विरोध के सवाल पर सांसद ने कहा कि विपक्ष के पास आज कोई मुद्दा नहीं है कोई वीजन नहीं है कोई लक्ष्य नहीं है. प्रधानमंत्री के द्वारा उठाये गए हरेक अच्छे कामों का विरोध करना ही विपक्ष का काम रह गया है.विधायक राज सिन्हा ने कहा कि वन नेशन वन इलेक्शन विषय पर आयोजित यह संगोष्ठी कार्यक्रम काफी सफल रहा.सभी ने इस महत्वपूर्ण विषय पर अपनी राय दी और बिल्कुल ही देश में यह लागू भी होना चाहिए.इस संगोष्ठी में चिकित्सक,व्यापारी, अधिवक्ता, शिक्षाविद,कई एनजीओ के प्रतिनिधि कई सामाजिक राजनीतिक संगठनों के लोगों ने हिस्सा लिया.सभी ने एक देश एक चुनाव को देश में लागू कराने पर जोर दिया.जिला चेम्बर के महासचिव ने बताया कि यह संगोष्ठी पूरी तरफ सफल रहा और अब लोग पोस्टकार्ड के जरिये भी अपनी बात को राष्ट्रपति तक पहुंचाएंगे.कार्यक्रम में मुख्य रूप से झरिया विधायक रागिनी सिंह, जिप अध्यक्ष शारदा सिंह, आईआईटी आईएसएम के डिप्टी डायरेक्टर प्रो. धीरज कुमार उपस्थित हुए.

मुरलीडीह 20/21 पिट्स कोलियरी की सुरक्षा की मांग को लेकर सोमवार को धरना

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

महुदा : मुरलीडीह 20/21 पिट्स कोलियरी सहित अन्य कोलियरियों की सुरक्षा हेतु सीआईएसएफ की मांग को लेकर 21 अप्रैल सोमवार को संयुक्त मोर्चा पश्चिमी झरिया क्षेत्र के क्षेत्रीय कार्यालय मुनीडीह के मुख्य द्वार पर एक दिवसीय धरना देगी.संयुक्त मोर्चा के प्रतिनिधियों ने प्रबंधन को इससे संबंधित पत्र देकर कहा है कि मुरलीडीह 20/21 पिट्स कोलियरी एवं आसपास के क्षेत्रों में लगातार चोरी की घटना हो रही है, जिससे कंपनी को लाखों का नुकसान हो रहा है. लगातार दो-दो बार ट्रांस्फॉर्मर की चोरी के प्रयास में ट्रांस्फॉर्मरों को क्षतिग्रस्त किया गया. 23 मार्च की रात को मुरलीडीह 20/21 पिट्स के ट्रांसफार्मर को अपराधियों के द्वारा क्षतिग्रस्त किये जाने के बाद से अब तक पूरा क्षेत्र अंधेरे में डूबा हुआ है. इससे पूर्व रात 9 बजे से सुबह 5 बजे तक सीआईएसएफ की नियुक्ति रहती थी. तब तक चोरी की घटना भी नहीं होती थी. पत्र में संयुक्त मोर्चा के पदाधिकारियों में जमसं के जीपी सिंह, विद्या प्रकाश पांडेय, बदरूद्दीन अंसारी, पीएन तिवारी, मोइनुद्दीन अंसारी, देबेन ग्याली का हस्ताक्षर शामिल है.

सिनिडीह ब्राह्मणडीहा जंगल में अवैध कोयला खनन पर बीसीसीएल व पुलिस की संयुक्त छापेमारी, 2 टन कोयला जब्त

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

धनबादः मधुबन थाना क्षेत्र के खरखरी कोलियरी अंतर्गत सिनिडीह स्थित ब्राह्मणडीहा जंगल में शनिवार को अवैध कोयला खनन के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की गई। बीसीसीएल प्रबंधन को मिली गुप्त सूचना के आधार पर मधुबन पुलिस, सीआईएसएफ और बीसीसीएल अधिकारियों की संयुक्त टीम ने छापेमारी कर अवैध रूप से संचालित कोयले के मुहाने को बंद करवा दिया। अधिकारियों के अनुसार, जंगल में अवैध रूप से मुहाना बनाकर कोयले का खनन किया जा रहा था। सूचना मिलते ही बीसीसीएल ने अपने अधिकारियों के साथ सीआईएसएफ की एक विशेष टीम को मौके पर भेजा। टीम ने स्थानीय पुलिस के सहयोग से मौके पर पहुंचकर कार्रवाई की और खनन कार्य को तुरंत रुकवाया।

कार्रवाई के दौरान सीआईएसएफ को लगभग 2 टन कोयला बरामद हुआ, जिसे जब्त कर एक हाइवा में लादकर सुरक्षित स्थान पर ले जाया गया। इस पूरी कार्रवाई में सीआईएसएफ इंस्पेक्टर रविकांत राय, खरखरी कोलियरी के प्रबंधक नीलम राजू एक्का, अभियंता योगेश सिंह तथा मधुबन थाना के एसआई शिबू सोरेन समेत दर्जनों जवान शामिल थे। प्रशासन की इस सख्त कार्रवाई से अवैध खनन करने वालों में हड़कंप मच गया है। बीसीसीएल प्रबंधन ने स्पष्ट किया है कि भविष्य में भी इस तरह की अवैध गतिविधियों पर कड़ी नजर रखी जाएगी और दोषियों के खिलाफ सख्त कदम उठाए जाएंगे।

इनर व्हील क्लब ऑफ धनबाद माइलस्टोन की सदस्याओं ने की वृद्धजनों की सेवा

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

धनबाद : इनर व्हील क्लब धनबाद, माइलस्टोन के बैनर तले क्लब के सदस्यों के द्वारा रविवार को संबलपुर के सहयोगी नगर स्थित वृद्धजनों के आश्रयस्थल ओल्ड एज होम का दौरा किया गया।संस्था ने सभी वृद्धजनों के लिए कपड़े, राशन, फल, सब्जी आदि भेंट किए गए. यह कार्यक्रम क्लब की सदस्य कविता गुप्ता, सरिता गुप्ता एवं ममता गुप्ता के सौजन्य से किया गया. इस अवसर पर वृद्ध जनो के लिऐ नाश्ते की भी व्यवस्था की गई. मौके पर इनर व्हील क्लब की अध्यक्ष रश्मि सहाय, सचिव ऋतु श्रीवास्तव एवं कोषाध्यक्ष रेणु कौशल मौजूद रहीं.

बांग्ला नव वर्ष पर स्पंदन के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का किया आयोजन

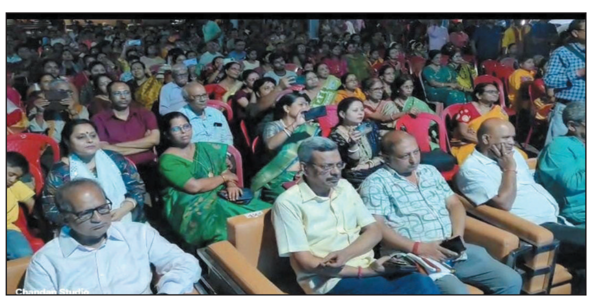

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

धनबाद : 1432 बांग्ला नव वर्ष के आगमन पर सांस्कृतिक संस्था स्पंदन के द्वारा हीरापुर हरि मंदिर में सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया.जिसमें गीत, संगीत और नित्य का संगम था। यह कार्यक्रम उपस्थित दर्शकों का मन मोह लिया.

कार्यक्रम में सैकत मल्लिक का टीम,चयनिका की टीम, श्याम बनर्जी के टीम,रेशमी की टीम, रिंकी की टीम, संचिता की टीम, ज्योति पॉल की टीम,दिया बनर्जी की टीम, साथी गुप्ता की टीम, ब्रोटिन की भाग लिया. जबकि कार्यक्रम के सफल बनाने में संस्था अध्यक्ष मनोज मजूमदार, सचिव बरनाली सेनगुप्त, मीडिया प्रभारी नीलकमल खवास एवं अरविंदो बनर्जी के अलावे संस्था की कार्यकर्ता, राहुल, पिंटू, देवदास, रिकू, शुभाशीष, बबलू दा, प्रणब दा, मीता पाल, मीता सरकार, चन्दना अरुणा, दीपा, ईशानी, कुषाण, ऋषिता, रिशान ,इंद्रानी, इप्शा, सुरजीत, साम्पा, सुपर्णा, काकोली, माला, मेघा, प्रणव, मंच संचालन बरनाली गुप्ता ने किया. इस कार्यक्रम का मुख्य अतिथि निरसा विधायक अरुप चटर्जी विधायक थे.

जिला विधिक सेवा प्राधिकार ने धनबाद कारागृह में लगाया जेल अदालत व विधिक जागरूकता शिविर

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

धनबाद : धनबाद मंडल कारा में रविवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकार (डालसा) के बैनर तले जेल अदालत एवं विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया. यह कार्यक्रम प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश वीरेंद्र कुमार तिवारी के नेतृत्व में संपन्न हुआ.प्रभारी सचिव सह अवर न्यायाधीश राजीव कुमार सिंह ने जानकारी दी कि जेल अदालत में दो मामलों को विचारार्थ चिन्हित किया गया था. यद्यपि आवश्यक कानूनी शर्तें पूरी न होने के कारण इन पर तुरंत निर्णय नहीं हो सका, परंतु विधिक प्रक्रिया का पालन करते हुए सुनवाई की गई.

शिविर के दौरान न्यायिक अधिकारियों एवं लीगल एड डिफेंस काउंसिल (एलएडीसीएस) की टीम द्वारा जेल में बंद बंदियों को उनके विधिक अधिकारों एवं विभिन्न कानूनों की विस्तृत जानकारी दी गई. इस जागरूकता अभियान का उद्देश्य बंदियों को कानून की जानकारी देकर उन्हें न्याय प्राप्ति की दिशा में सक्षम बनाना था. कार्यक्रम के दौरान चिकित्सकों की एक टीम ने बंदियों का स्वास्थ्य परीक्षण भी किया गया. ताकि उनकी सेहत संबंधी समस्याओं की जांच की जा सके.इस मौके पर न्यायिक पदाधिकारी राजीव कुमार सिंह, एलएडीसीएस के चीफ कुमार बिमलेन्दु, डिप्टी चीफ अजय कुमार भट्ट, सहायक एलएडीसीएस नीरज गोयल, शैलेन्द्र झा, सुमन पाठक, कारा अधीक्षक, जेलर, डालसा सहायक अरुण कुमार, सहायक अजय कुमार, नवीन कुमार तथा कारा विधि स्वयंसेवक विशाल कुमार सिंह उपस्थित थे.

आर्य व्यायाम शाला में आर्य प्रतिनिधि सभा की बैठक संपन्न

व्यायाम शाला के संस्थापक ने मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि को अंग वस्त्र देकर किया सम्मानित

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

कतरास : आर्य व्यायामशाला एवं योग मंदिर परिसर में रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा झारखंड धनबाद के निर्देश पर एक बैठक का आयोजन किया गया. बैठक की अध्यक्षता व्यायामशाला के संस्थापक सह महासचिव गुरुजी दुर्गा राम एवं संचालन व्यायाम शाला के संगठन सचिव दीपक कुमार गुप्ता ने किया. मुख्य अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा झारखंड के प्रधान आर्य भारत भूषण त्रिपाठी व विशिष्ट अतिथि के रूप में मंत्री आर्य समाज धनबाद के अजय कुमार सिंह शामिल थे. मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि को गुरुजी दुर्गा राम ने अंग वस्त्र व बुके देकर स्वागत किया. बैठक में व्यायाम शाला विस्तार को लेकर कई चर्चा हुई.बैठक को संबोधित करते हुए आर्य भारत भूषण त्रिपाठी ने कहा कि आर्य समाज की शिरोमणि संस्था सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा महर्षि दयानंद सरस्वती के 200 जयंती एवं आर्य समाज के स्थापना के 150 वीं वर्षगांठ कार्यक्रम के समापन समारोह को लेकर आगामी 9, 10,11,12 अक्टूबर 2025 को दिल्ली में एक सम्मेलन होने जा रहा है, जिसमें विश्व के 38 देश के राष्ट्रीय अध्यक्ष के अलावा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं सभी राज्यों के मुख्यमंत्री व राज्यपाल शिरकत करेंगे. आप सभी को निमंत्रण दे रहा हूं उक्त कार्यक्रम में शामिल होकर गौरवशाली पल का साक्षी बने.मौके पर आर्य दिलीप विश्वकर्मा, आर्य धर्मराज यादव, व्यायाम शाला के सचिव रणधीर बर्मन, कोषाध्यक्ष अभय बर्मन, आयुष गुप्ता, मो शकरुद्दीन, संदीप भगत राहुल कुमार साव, मो कौसर खान, अंकुश कुमार, गणेश रजवार, सिकंदर कुमार, आयुष कुमार आदि उपस्थित थे.

सरायढेला मारवाड़ी युवा मंच शाखा का शपथ ग्रहण समारोह संपन्न

2025- 26 सत्र के लिए अभिषेक अग्रवाल बने अध्यक्ष

नई पत्र वार्ता प्रतिनिधि

धनबादः रविवार को धनबाद क्लब में मारवाड़ी युवा मंच, सरायढेला शाखा का शपथ ग्रहण समारोह धनबाद क्लब में अत्यंत गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ. समारोह में नव-निर्वाचित कार्यकारिणी ने समाज सेवा की शपथ ली.मुख्य अतिथि सनत अनवर (डीडीसी, धनबाद) ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई और मंच की सामाजिक सेवाओं की सराहना करते हुए उन्हें हरसंभव सहयोग का आश्वासन दिया.

सामारोह में विशिष्ट अतिथिगण ललित अग्रवाल अध्यक्ष, धनबाद केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट एसोसिएशन, आदित्य अग्रवाल प्रांतीय उपाध्यक्ष, झारखंड, मारवाड़ी युवा मंच, विवेक लिल्हा एवं बजरंग अग्रवाल, पूर्व प्रांतीय उपाध्यक्ष, प्रवीण काजरियाल,पूर्व अध्यक्ष प्रियंका चौधरी, निर्वाचन पदाधिकारी, नीरज अग्रवाल, प्रांतीय कार्यकारिणी सदस्य उपस्थित थे. सत्र 2025 -26 के लिए नव-निर्वाचित पदाधिकारीगण में अध्यक्ष अभिषेक अग्रवाला, सचिव विकास अग्रवाल, कोषाध्यक्ष शंभु अग्रवाल, उपाध्यक्ष विशाल सावरिया, कार्यकारिणी सदस्य, डॉ. उर्मी, खुशबू भाभी, नेहा अग्रवाला, सुमन अग्रवाला, नेहा केजरीवाल, प्रियंका चौधरी, निशा अग्रवाल, नीलिमा अग्रवाला, पायल, मोनिका, रिशु, शिल्पा, आयुषी, एकता, नेहा, गुंजन, प्रिया, स्वाति, मेघा गोयल, पूजा सिंघल बने।सामाजिक सेवाएं और आगामी योजनाएं के लिए मारवाड़ी युवा मंच ने समाज के उत्थान हेतु कई प्रमुख कार्यक्रमों की घोषणा की, जो डी सी डी ए के सहयोग से पूरे वर्ष संचालित किए जाएंगे.महिलाओं के लिए गर्भाशय ग्रीवा वैक्सीन, एकल डोज स्वास्थ्य शिविर जिसमें दंत चिकित्सा, नेत्र जांच और सामान्य जांच शामिल हैं.

गरीब विद्यार्थियों हेतु छात्रवृत्ति योजना जिसमें किताबें, यूनिफॉर्म एवं फीस शामिल, अमृत धारा, रक्तदान शिविर, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं सेवा क्षेत्र में निरंतर सक्रिय भागीदारी, समारोह का समापन मंच के सदस्यों द्वारा एकजुटता, समर्पण और समाज सेवा की शपथ के साथ हुआ.

एसएनएमएमसीएच के पीजी ब्लॉक बिल्डिंग में मरीजों के लिए लगेगी दो लिफ्ट

नई पत्रवार्ता प्रतिनिधि

धनबाद : शहीद निर्मल महतो मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल (एसएनएमएमसीएच) के समीप बने पीजी ब्लॉक स्थित बिल्डिंग में गायनी, इएनटी समेत विभिन्न विभागों को शिफ्ट करने की योजना पर काम चल रहा है.

पीजी ब्लॉक स्थित बिल्डिंग में इन विभागों की ओपीडी के साथ इंडोर सेवा के संचालन की तैयारी है. इससे पूर्व अस्पताल प्रबंधन पीजी ब्लॉक स्थित बिल्डिंग में कमियों को दूर करने की दिशा में कार्य शुरू किया है. वर्तमान में पीजी ब्लॉक स्थित बिल्डिंग में मरीजों को ऊपर लेकर जाने के लिए लिफ्ट नहीं है. ऐसे में अस्पताल प्रबंधन ने बिल्डिंग में दो नया लिफ्ट लगाने का निर्णय लिया है. इस संबंध में भवन प्रमंडल के अधिकारी शनिवार को स्पॉट विजिट के लिए एसएनएमएमसीएच पहुंचे थे. टीम में शामिल अधिकारियों ने पीजी ब्लॉक स्थित बिल्डिंग में लिफ्ट लगाने के लिए स्थान का चयन कर लिया है. लिफ्ट के लिए प्राक्कलन तैयार करने की जिम्मेवारी भवन प्रमंडल के अधिकारियों को सौंपी गयी है। डीएमएफटी की राशि से पीजी ब्लॉक स्थित बिल्डिंग में नया लिफ्ट लगाने व रैंप बनाने की योजना है. इसे लेकर उपायुक्त माधवी मिश्रा ने पहले ही स्वीकृति दे दी है. उनके निर्देश पर ही लिफ्ट व रैंप बनाने की कवायद शुरू हुई है.

आने वाले कुछ माह में लिफ्ट लगाने की प्रक्रिया पूरी कर मरीजों का इलाज शुरू करने का निर्देश उपायुक्त ने दिया है। बता दें कि वर्तमान में एसएनएमएमसीएच की पुरानी बिल्डिंग में सभी विभागों की इंडोर सेवा चल रही है. जगह कम और उसके हिसाब से मरीजों की संख्या अधिक होने के कारण इंडोर के साथ ओपीडी के मरीजों को परेशानी होती है. इस समस्या को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग के अपर मुख्य सचिव अजय कुमार सिंह ने पुरानी बिल्डिंग में संचालित कुछ विभागों को नयी बिल्डिंग में शिफ्ट करने का निर्देश दिया है. गायनी, इएनटी समेत अन्य विभागों को पीजी ब्लॉक के बिल्डिंग में शिफ्ट करने से पुराने अस्पताल के भवन में मरीजों की भीड़ को नियंत्रित किया जा सकेगा।

नई पत्र वार्ता पब्लिकेशन प्रा. लि. के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक *राज किशोर सिन्हा के द्वारा डी.बी. कॉर्प लिमिटेड, भास्कर प्रिंटिंग प्रेस गोविंदपुर मेन रोड, अशोकनगर के जी आश्रम, धनबाद से मुद्रित एवं छठ तालाब विकास नगर कतरास रोड,धनबाद से प्रकाशित। फोन न.7004113115, 9334368784, 7004500339, 7004893985. प्रधान संपादक : अनुज कुमार सिन्हा। *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। निदेशक अनस रहनुमा। ई-मेल - naipatrawartajharkhand@gmail.com.आर.एन.आई नं.JHAHIN/2015/63780.